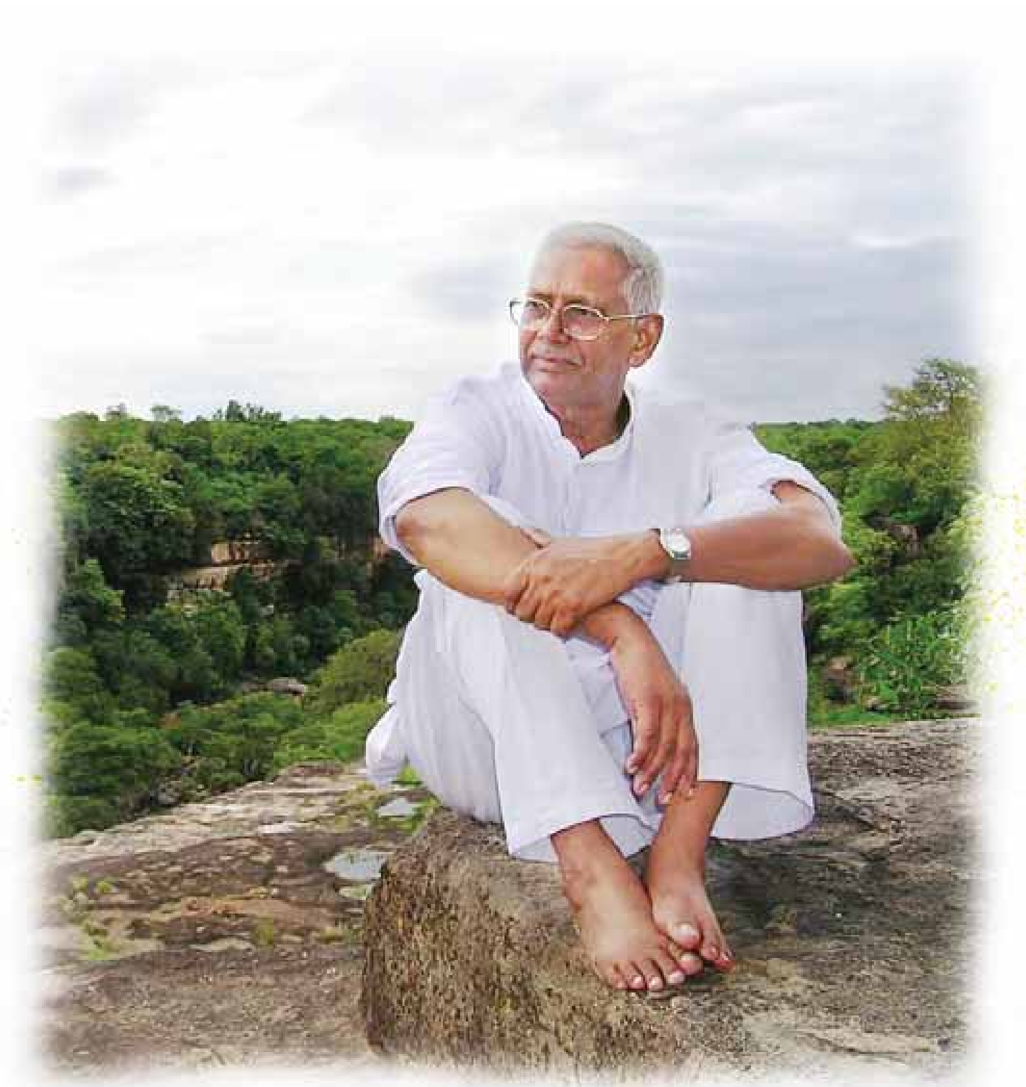

# वनवासियों के
# गोपाल भाई

# वनवासियों के
# गोपाल भाई

संपादक

अर्चन

●

सहयोग

जनदीप, कुमार अरबिन्द

●

छायांकन

डेलफिन ऑक्लेयर

राजदीप फर्टिलिटी रिसर्च सेण्टर
कोटा, राजस्थान

**प्रकाशक**

**राजदीप फर्टिलिटी रिसर्च सेण्टर**
12/13 आदित्य आवास, बजरंग नगर
कोटा, राजस्थान

- प्रथम संस्करण : 2022
- प्रतियाँ : 1000
- © डॉ0 राजश्री दीपक गोहदकर
- आवरण : अर्चन
- मुद्रक : जे एण्ड जे प्रिंटर्स
  नैनी, प्रयागराज

---

VANVASIYOUN KE GOPAL BHAI- Edited by Archan

बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध जनप्रिय समाजसेवी श्री गोपाल भाई
पर एकाग्र यह भाव-वैभव अखिल भारतीय समाज सेवा
संस्थान, चित्रकूट के निदेशक रहे **कीर्तिशेष**
**भागवत प्रसाद** जी की यशस्वी समाज
सेवा के शिखर पर रखते हुए समस्त
उन
**समाज हितैषियों** के सुपात्र
हाथों को सादर समर्पित
है, जिनके पाँव समाज
के पुनर्सृजन के लिए
देर-देर तक
दूर-दूर तक
चलते नहीं
थकते।

सम्पादकीय

# सुखदाई जीवनदाई गोपाल भाई

**अर्चन**
**सामाजिक कार्यकर्ता**

सामाजिक तिरस्कार और रोटी–कपड़ा के संकट में पलकर गुणवंत विद्यार्थी बनना। पहाड़ जैसी आफतों को मुस्करा कर झेलना। औरों के दुखों को दौड़–दौड़कर समेटना। पीड़ितों को ढूँढ़–ढूँढ़कर अपनाना। शोषितों–वंचितों की फौज खड़ी कर जुल्म–सितम ढाने वालों को औकात में लाना। यह सब तो कोई बुंदेलखण्ड के गोपाल भाई से सीखे।

*गोपाल भाई वनवासी बच्चों की पाठशाला हैं/'रचना और संघर्ष' की कार्यशाला हैं/सामाजिक– सांस्कृतिक–सांगीतिक गुणों की खदान हैं/कितने ही ग़रीब–गुर्बों के लिए रोटी–कपड़ा–मकान हैं/हम सबकी वही दौलत हैं/वही सोना हैं/वही चांदी हैं/सामाजिक परिवर्तन की पूरबी बयार हैं/आँधी हैं/सरलता–तरलता में निरा गांधी हैं/शोषकों के खिलाफ उठती उनकी तीक्ष्ण नज़र ही बज्र–प्रहार है/अचूक प्रक्षेपास्त्र है/मंद मुस्कान मीठे बोल ही हमलों को रोकने वाला ब्रम्हास्त्र है। वाकई में/गोपाल भाई सबका मान बढ़ाते हैं/सबका मन रखते हैं/सबको जीते हैं/ग़म खाते हैं गोपाल भाई/गुस्सा पीते हैं।*

*सिर्फ चार–पांच अदद संतानों के पिता ही नहीं/सैकड़ों–हज़ारों के 'पिताजी' कहे जाते हैं/आगे–आगे बढ़कर हर दायित्व निभाते हैं/देकर उजली राह सभी को/खुद पीछे रह जाते हैं/थमीं नहीं है अब तक जन–ज़मीन/जल–जंगल की लड़ाई/लड़ रही है पुरजोर अब तक उनकी बूढ़ी तरुणाई।*

*प्रतिबद्ध ज़िंदगी बैठकर हंसनें नहीं देती/बहुत रोने नहीं देती/घर–बाहर की जिम्मेदारियाँ उन्हें बूढ़ा होनें नहीं देती।*

*अचरज है/शोध का विषय है कि कोई इतने काम रोज़–रोज़ एक साथ कैसे कर सकता है ? गाँवों में जन–चौपालें/संस्थान में प्रशिक्षण/बाल अभ्युदय केंद्रों में शिक्षण/ ढोलक–तबले–हारमोनियम में संगत/और समाज हितैषियों की दूसरे–तीसरे*

*दिन आंगन में पंगत /हर दिन इनसे–उनसे–सबसे जरूरी मुलाकातें/रानीपुर, गिदुरहा से लेकर/ कैलिफोर्नियां, पेरिस तक फोन पर बातें।*

*उमर 83 बरस की/लेकिन/आज की दौड़ दिल्ली/कल की दौड़ लखनऊ/परसों एक पहर मानिकपुर में/दूसरे पहर मऊ।*

*कमाल की ऊर्जा है/बेमिसाल सेवा समर्पण है/बुंदेली 'बँदहे'–'पठहों' के बीच गोपाल भाई बड़े आकर्षण हैं।*

*वाह ! वाह ! श्रद्धेय गोपाल भाई/खूब अलख जगाई. यकीनन....इस 'कोलान' से उस कोलान तक/गुलामी तब टूटी/यहाँ. अंतिम छोर में आज़ादी तब आई/जब मशालें उठाकर/कारवां लेकर चल पड़े गोपाल भाई।*

भले मानुष को लेकर लय पकड़तीं ये पंक्तियां सुनने में जितनी सीधी–सपाट, लगती हैं, उतना सीधा–सपाट नहीं हो पाता किसी का भी जीवन। सामाजिक और भौगोलिक रूप से बांदा का अपना समतल गांव विगहना छोड़कर उन्होंने चित्रकूट के मानिकपुर का ऊबड़–खाबड़ जंगली रास्ता पकड़ा। कठिन राह क्यों पकड़ी ? कैसे पकड़ी ? इन सवालों पर उनकी बड़ी अंतर्कथाएं हैं, जो इस पुस्तक में आपको कतिपय उभरती दिख जाएंगी।

*पाठा में ज़मीनखोर भू–स्वामी थे/दादू थे/दबंग थे/रखैल प्रथा थी/ बंधुओं की व्यथा थी/भूख थी/प्यास थी/बहुसंख्य ज़िंदगी बदहाल थी/उदास थी।*

क्षेत्र के राजपुरुष, दादू–दबंग भू–स्वामी, ठेकेदार न सिर्फ मज़दूरों को बंधक बनाकर श्रमदोहन कर रहे थे बल्कि ग़रीब कोल परिवारों की सुंदर बेटियां/महिलाएं तथा ज़मीनें सबकुछ हड़प रखी थीं।

संगठित ताक़त के बिना ऐसे जुल्म से पार पाना कठिन था। गोपाल भाई ने अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की स्थापना कर आरंभिक दिनों में प्राथमिकता के पांच काम तय किए, पहल देह मुक्ति, दूसरा भय मुक्ति, तीसरा भूमि मुक्ति, चौथा भूख–प्यास मुक्ति, पांचवा अज्ञानता मुक्ति का।

गोपाल भाई जी ने पाठा में शोषण–उत्पीड़न के उपचार के लिए एक्सरे, सिटीस्कैन रिपोर्ट तैयार कर सख्त हस्तक्षेप किया। भूस्वामियों के यहां प्रायः कर्ज़/ब्याज के बतौर पीढ़ियों से बीबी–बेटी–बच्चों सहित बंधक बनाए गए मजदूरों का मुद्दा जब उठाया तो प्रदेश–देश की सरकारों में हड़कंप मच गया। अफसरों ने चुप रहने के लिए दबाव बनाया, सरकारों ने नकारा। देह और श्रम मुक्ति के लिए महाभारत हुई अंततः चट्टान की तरह अड़े–खड़े गोपाल भाई के सामने सरकारें झुकीं, शोषक भू–स्वामी दादू परास्त हुए और अंततः सौंपी गई सूची के अनुसार 5000 बंधुवा मजदूर/परिवार मुक्त हुए, फिर उनके पुनर्वास के काम हुए।

देह–मुक्ति अभियान में सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण था, जबरन रखैल बनायी गईं कोल आदिवासी युवतियों/महिलाओं को मुक्त कराना।

मुद्दा बनने पर दबंगों के बड़े षड्यंत्रों की पूरी आशंका थी, और समर्थवानों के गुनाहों पर पर्दा डालने के आदी अफसरों द्वारा संस्थान की समाज सेवा को 'संगीन' करार दिए जाने का जोख़िम था। लेकिन गोपाल भाई नहीं झिझके, नहीं ठिठके। 'दादूलैण्ड' पाठा में दुखियों की फौज लेकर अपने समय के, अपने तईं बक्सर, पानीपत युद्ध को छेंड़ दिया।

ठहरकर सोचिए, कल्पना कीजिए कितनी सूक्ष्म, सतर्क, ठोस और स्वयं लिए 'बलिदानी' रणनीति बनी होगी। वर्ग–संघर्ष, हिंसा न हो इसके लिए कैसे–कैसे गोपनीय जतन किए गए

होंगे। गोपाल भाई ने चिन्हित 32 रखैल कोल बालाओं/महिलाओं को मुक्त कराने के लिए पीड़ितों की वेदनाओं, साक्ष्यों का ऐसा अस्त्र चलाया कि हत्या पर उतारू ज़ालिम ताक़तें शोषित महिलाओं के पैर पकड़ कर पनाह मांगने लगीं। गोपाल भाई ने पाठा से कोल बालाओं को जबरन रखैल बनाए जाने की प्रथा को उखाड़ फेंका।

भगवान श्रीराम के प्रियजन, गिरिजन कोलों पर यहां की अभिजात्य सामंतशाही का एक बड़ा अत्याचार उनकी ज़मीनों को हड़पने का था। गोपाल भाई ने जनपद के 233 कोल गांवों में ज़मीनों की गहरी पड़ताल कराई। भूमि हड़पे जाने के 23 प्रकार के तरीके उजागर हुए। दिन–रात अध्ययन, सत्यापन, दस्तावेजीकरण का कार्य हुआ, तहसील से लेकर राजधानियों तक गोपाल भाई कोलों की हड़पी गई भूमि का प्रकरण लेकर दौड़े–हाँफे। कह सकते हैं कि उनके जीवन की जवानी ग़रीब कोल आदिवासियों की भूमि को मुक्त कराने जैसे पुण्य कार्य में लगी। शरीर और दिमाग का समूचा श्रम झोंकना पड़ा। गोपाल भाई के खिलाफ दादू दबंग, भ्रष्ट कर्मचारी, अफसर लामबंद हुए। सबकी भृकुटी तनी। उनकी हत्या के तीन बार प्रयास हुए। बाहरी अपराधियों को हत्या की सुपारी दीं गईं, डकैतों को उकसाया गया। षड्यंत्र कर महिला अपहरण का मामला दर्ज़ कराया गया। जानलेवा हमले हुए। सहयोगियों को गांवों से उठाकर बंधक बनाया गया। बंदूकें तानी गयी।

लेकिन गोपाल भाई की जन–जन में व्याप्ति, प्रियता और सेवा कार्यों ने आतताइयों के सारे षड्यंत्रों, प्राणघातक प्रयासों को धूल चटा दिया,

*–धन बल से पुलिस बल को खरीद कर लोहा सिंह जैसे नसेड़ी दारोगा से अपमानित कराने का षड़यंत्र औंधे मुंह गिरा।*

*–दादुओं की एकजुट पंचायत में कुछ लाख का इकट्ठा हुआ चंदा भी हत्या के लिए काम नहीं आया।*

*–चूल्ही गांव में डकैतों ने घेरा लेकिन गांव वालों का समर्थन देखकर भाग खड़े हुए।*

*– बांदा से किराए पर आए गुण्डों ने आक्रमण किया, लेकिन उनमें से एक गोपाल भाई के विद्यार्थी जीवन का संपर्की निकल आया, अंततः सारी बातों का खुलासा कर चले गये।*

बहुत कुछ हुआ। क्या–क्या न झेला गया !!! 40 वर्षीय अथक जनसेवा के संघर्षों को देखने पर चुप रहा भी नहीं जाता, कुछ कहा भी नहीं जाता। अंगारों पर चलने वाले पैरों की जलन के जिक्र से कहीं प्रणम्य–पौरुष की तौहीन न हो जाए।

उल्लेखनीय यह है कि गोपाल भाई जी की जीवटता ने 12000 एकड़ भूमि दबंगों के कब्जे से मुक्त कराकर लगभग 5000 कोल परिवारों को वापस दिलाई। याद आते हैं सर्वोदयी विनोबा भाई, जिन्होंने हज़ारो एकड़ भूमि दान में लेकर भूमिहीनों का उद्धार किया था। इधर पाठा के अन्त्योदयी गोपाल भाई ने ग़रीबों की छीनी गई ज़मीनों को भू–माफियाओं से छीनकर उन्हीं ग़रीब परिवारों अथवा उनकी अगली पीढ़ियों को दिलाकर बड़ा उपकार कर डाला है। गोपाल भाई जी के शब्दों में कहूं तो यह उपकार उन्होंने स्वयं अपने ऊपर किया है।

तीन दशकों के दौरान 33 जनान्दोलनों को लेकर गोपाल भाई कई बार राष्ट्रीय सुर्खियों में आये। वनवासियों की भूमि नाप, फर्जी मुठभेड़, फर्जी ऋण, फर्जी वरासत के विरुद्ध, बंधुआ मुक्ति, वनवासियों को वनोपज अधिकार, वनवासी गांवों को आबादी घोषित किये जाने, रखैल प्रथा की समाप्ति, कोलों को जनजाति का दर्जा, समान मजदूरी आदि समेत मानिकपुर को तहसील बनाने तथा चित्रकूट को जिला बनाने को लेकर उनके द्वारा किये गये दीर्घकालिक अहिंसक जनान्दोलन काफी हद तक फलीभूत हुए हैं।

मजदूरों, बेबश कोल बालाओं की देह और भूमि–मुक्ति की सफलता के बाद 'अज्ञानता', 'भय' और 'भूख–प्यास' से मुक्ति के लिए क़दम उठे, पाठा में पेयजल, सिंचाई जल प्रबंध के जो भी काम हुए, मॉडल बन गए। साढ़े बारह हज़ार हेक्टेयर में जलागम कार्यक्रम संचालित कर खेतों की प्यास बुझाई गयी। पांच हज़ार हेक्टेयर में जलसंरक्षण के कार्य कर प्राकृतिक जलस्रोतों को जीवित किया गया है। कोल आदिवासी गांवों में 100 से अधिक कूप, 30 तालाब, 40 चेकडैम ईमानदारी से किए गए टिकाऊ कामों के प्रतीक बन चुके हैं। टिकरिया–जमुनिहाई, मनगवां, इंटवा डुड़ैला, पाटिन जैसे जलागम कामों को बड़ी पहचान मिली। प्रतिष्ठित फिक्की अवार्ड मिला। जलागम कार्य क्षेत्र में उनके द्वारा भूमि सुधार के विधिवत काम कराए गए। इन दिनों किसानों के बीच उनके गो–वंश आधारित विषमुक्त प्राकृतिक खेती के प्रयोग चल रहे हैं। किसानों की आय बढ़ाने के लिए बहुस्तरीय कृषि कार्य दर्जनभर गावों में दिखायी पड़ रहा है।

प्रकृति और लोक–संस्कृति के अगाध प्रेमी हैं गोपाल भाई। प्राकृतिक स्थलों की खोज़ कर उन्हें विकसित कराने में उनका श्लाघनीय योगदान जुड़ा है। बुंदेलखण्ड की लुप्तप्राय लोक विधाओं का अस्तित्व लौटाने के लिए उन्होंने 'लोक–लय' जैसे वृहद आयोजन की परंपरा डाल दी है।

वनवासी बच्चों को शिक्षा से जोड़ना गोपाल भाई के जीवन का मूल मक़सद रहा है। वे स्वयं शिक्षक रहे। पाठा में आते ही उन्होंने कुछेक शिक्षा केन्द्रों के साथ वनवासी बस्तियों में प्रवेश किया था। इधर काफी विस्तार हो गया है। उनकी मानवीय चेतनायुक्त शिक्षा की गूंज बढ़ती जा रही है। पाठा में जितने भी शिक्षित कोल युवक–युवती मिलते हैं, एक बात जरूर सुनने को मिलती है कि, *'गोपाल भाई के शिक्षा–संस्कार केन्द्र से 'ककहरा' की शुरुआत हुई थी।'* हफ्ते भर वनवासी बच्चों से न बतियाएं तो बेहाल हो जाते हैं, गुणीजनों को पाकर` निहाल हो जाते हैं। उन्होंने गुणवानों की बड़ी संख्या में धरपकड़ कर रखी है। सबसे अटूट आत्मीय जकड़ कर रखी है।

*'हर आदमी में होते हैं दस–बीस आदमी, जिसको भी देखना हो कई बार देखना'* इसके बतर्ज़ उन्हें खूब देखा, जब भी दिखे पितृ काया में माँ सा ममत्व ही दिखा। सबके प्रति गझिन अपनत्व ही दिखा। नज़रे गड़ायीं लेकिन इधर 15 बरस के निरंतर जुड़ाव में किसी बात पर उन्हें कभी भी खिन्न, कुपित, विचलित होते नहीं देखा। हाँ, इधर जबसे **भागवत प्रसाद जी** जुदा हुए हैं, उनकी हँसी में फीकापन आ गया है। किसी चर्चा में भागवत जी का नाम आते ही उनकी आँखें शून्य में ठहर जाती हैं। आँखों की कोर में भाव तिर आते हैं। टूटन कई रूपों में झलक जाती है।

ए0 नागराज जी का **'मध्यस्थ दर्शन'** गोपाल भाई जी के जीवन–दर्शन की व्याख्या है? या गोपाल भाई 'मध्यस्थ दर्शन' के व्यावहारिक भाष्य हैं? नहीं जानता, इतना जरूर है कि उन्हें मैंने समाधानित जीवन जीते हुए ही देखा है। हरदम स्वीकृति के भाव से परिपूर्ण रहे हैं वे। न्यायपूर्ण व्यवस्था ही सौंपी है। सबको निरंतर सुख ही सौंपा है।

83 बरस के हो गए **'पिताजी'**, उनका सान्निध्य न मिलता, तो शायद मैं भी पितृत्व से अंजान ही रह जाता। जैसे बादल जल से रिक्त होकर सुख पाते हैं, वृक्ष फलों से रिक्त होकर सुख पाते हैं। हम भलीभांति जानते हैं 'पिताजी' ऐसे ही हैं।

उनकी जीवन–यात्रा सुख–दुख, रचना और संघर्ष से भरपूर है, लेकिन अतीत की पोटली खोलने की फुर्सत न उन्हें मिली और न ही हम जैसों को कभी मिल पायी।

देश की सुप्रसिद्ध चिकित्सक एवं गोपाल भाई जी की बड़ी बहू डॉ0 राजश्री दीपक गोहदकर जी की प्रेरणा का परिणाम है कि हम इतना कर पाये। उनकी निरंतर जिद और तत्परता से ही सहृदयों के भावों का यह वैभव प्रकाशित हो पा रहा है। संस्थान परिवार को गर्व है कि आप श्रद्धेय गोपाल भाई की बहू ही नहीं संस्थान की, हम सबकी संरक्षिका हैं। उन माता–पिता पर भी गर्व है जिनकी आप करुणामयी सुयोग्य सुपुत्री हैं।

- *पाठा के वनवासी जिन्होंने, गोपाल भाई समेत सबको जीवन के उत्सव, कर्मठता, जीवटता, श्रम की महत्ता, विश्वास, निच्छलता, सांस्कृतिक विरासत प्रदान की उनके प्रति बारम्बार कृतज्ञता ज्ञापित है।*
- *वारंट सरीखी एक संक्षिप्त सूचना पर ही अपने भाव–विचार सिर्फ दो दिन में ही पुस्तक के लिए प्रदान करने वाले सभी समाज चिंतकों, लेखकों, विचारकों, पत्रकारों, संगीतज्ञों, साहित्यकारों, कवियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं अन्य आत्मीय महानुभावों को पुस्तक में पाकर धन्यता का अनुभव हो रहा है। आदर के साथ धन्यवाद।*
- *यदि अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के सुहृद निदेशक राष्ट्रदीप जी का योगदान न मिला होता तो कम समय में यह पुस्तक आकार न ले पाती। उनके प्रति आत्मीय आभार।*
- *सामग्री संयोजन और पुस्तक के सम्पादन में भरपूर उत्साह के साथ अपना अमूल्य समय प्रदान करने के लिए अनुज जनदीप को बहुत–बहुत साधुवाद।*
- *पुस्तक के टंकण एवं साज–सज्जा के लिए प्रिय कुमार अरबिन्द को भी हृदय से धन्यवाद।।*
- *छायांकन के लिए प्रवासी डेलफिन ऑक्लेयर को भुलाया नहीं जा सकता। विनम्र आभार।*

और यह निवेदन भी है कि, पुस्तक में जो कुछ भी अच्छा बन पड़ा है, वह सब आप सुधीजनों का है। जो कुछ भी ठीक होने से रह गया, उसका हक़दार सिर्फ मैं हूँ।

सादर / सप्रेम

दिनाँक : 23 मार्च, 2022

# अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| सम्पादकीय : सुखदाई, जीवनदाई गोपाल भाई | अर्चन | 4–8 |
| पिता हमारे गर्व है, सबके जीवन के पर्व हैं | डॉ0 राजश्री दीपक गोहदकर | 11–12 |
| प्रार्थना करता हूँ | मदन गोपाल दास | 13 |
| आदिवासियों के तारणहार | कुमार राजेश | 14–17 |
| गोपाल भाई जी ने कठिनाइयों के बीच आदर्श...... | भारत डोगरा | 18–19 |
| वह छविमान व्यक्तित्व | जवाहर 'जलज' | 20 |
| वनवासियों के संबल | अभय महाजन | 21–22 |
| श्रद्धा बढ़ती गई | संजय सिह | 22 |
| अथक योद्धा की अथक कहानी | रामकिशोर | 23–29 |
| सामाजिक, सांस्कृतिक क्रान्ति के जननायक.......... | चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' | 30–33 |
| 'पिताजी' कड़ी धूम में छाँव लगते हैं | प्रणीता–आशीष श्रीवास्तव | 33 |
| हमार गोपाल भाई | राजाभइया सिंह | 34–35 |
| स्वैच्छिक जगत के प्रेरणास्रोत गोपाल भाई | अशोक भाई | 36–37 |
| माँ जैसी ममता है उनमें | अंशिता | 37 |
| साधक समाज के | रीना सिंह | 38 |
| थकान नहीं दिखाई देती उनके चेहरे पर | नंदिता पाठक | 39–40 |
| हर विपदा सही 'पिताजी' के हर संघर्षों में........ | सरस्वती सोनी | 40 |
| जो भी मिला उन्हीं का हो गया | नन्दलाल कोल | 41–43 |
| जाने कितनों का मायका है गोपाल भाई का 'घर' | संजय देव | 44–45 |
| गोपाल भाई संग रचना और संघर्ष............. | राजाबुआ उपाध्याय | 46–48 |
| शुभकामनाएं | रंगनाथ शुक्ल | 48 |
| तुम मम सखा भरत सम भ्राता | लल्लूराम शुक्ल | 49–51 |
| ...हम धन्य हैं | सोम त्यागी | 52 |
| आपके अपने वे सपने | आशा देवी मौर्य | 53 |
| सेवाओं को समर्पित जीवन | डॉ0 प्रभाकर लक्ष्मण गोहदकर | 54 |
| सबकुछ प्रेरणादायी लगता है | सुवर्णा | 55–56 |
| अभिशप्त पाठा के भागीरथ | आलोक द्विवेदी | 57–59 |
| गोविन्द बोलो हरे गोपाल बोलो | डॉ0 स्मिता सहस्त्रबुद्धे | 59 |
| भाई जी के प्रयास से अब तक 35 हजार........ | विद्यासागर बाजपेयी | 60–63 |
| साथ पढ़े हम, साथ बढ़े हम | छोटेलाल त्रिपाठी | 64–65 |
| जिनके सुझावों का लोहा मानती रहीं........ | डॉ0 विनोद शंकर सिंह | 66–68 |
| उनका वात्सल्य, उनकी प्रेरणा | दद्दू प्रसाद | 69–70 |
| खूब किया गोपाल भाई ने | सन्तोष बंसल | 70 |
| गोपाल जी का संगीत प्रेम | पं0 अवधेश द्विवेदी | 71–72 |
| जीवेत शरदः शतम् | मंजू मिश्रा | 73 |
| परहित बस जिनके मनमाही | विमला श्रीवास्तव | 74 |

| | | |
|---|---|---|
| जिनके सदृश दूसरा कोई सहयोगी न मिला | जगन्नाथ सिंह | 75–76 |
| समाजसेवी गोपाल भाई से बातचीत | अर्चन | 77–81 |
| 12 हज़ार एकड़ ज़मीन भू–स्वामियों से..... | गजेन्द्र | 82–86 |
| जीवन की तान और मुस्कान हमारे नाना जी | मीताक्षरा | 87–88 |
| मेरा चित्रकूट और चित्रकूट के गोपाल भाई | टिल्लन रिछारिया | 89–94 |
| सद्‌गुणों के कारण हुए समाज के मुकुटमणि | गुलाबचन्द्र व्यास | 95–96 |
| जिनके पदचिन्हों पर चलना जरूरी लगता है | डॉ0 अर्चना भारती | 97 |
| हम कोल आदिवासियों के मसीहा.............. | श्यामा | 98–99 |
| विरल समाज शिल्पी | शंकरलाल गुप्ता | 100 |
| मेरे शिक्षक, मेरे संरक्षक | काशी प्रसाद | 101–102 |
| पिता सरीखी छाँव मिली | सत्यनारायण मिश्र | 102–104 |
| पिताजी के साथ का अमूल्य समय | सरिता सोम | 105–106 |
| प्रकृति पुत्र, चितंक–चितेरे गोपाल भाई | प्रमोद दीक्षित 'मलय' | 106–110 |
| हमारी संगत | रामजस द्विवेदी (नन्ना) | 110 |
| चिर युवा गोपाल भाई | राजेश कुमार सिन्हा | 111–112 |
| दुखियों के प्राण बापू जी | भारती | 113 |
| पाठा के गांधी गोपाल भाई | संदीप रिछारिया | 114–115 |
| उन्ही से आत्मबल मिला, उन्होंने ही......... | केशर | 116–117 |
| बखत लिखै सम्मान | डॉ0 प्रणय | 118–119 |
| तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो | बूटी कोल | 120–121 |
| बहुतों का जीवन बदला है गोपाल भाई ने | प्रतीक | 122 |
| मानवता की प्रतिमूर्ति गोपाल जी | बलबीर सिंह | 123 |
| असीम सहनशीलता, गहरी संवेदना | माया साकेत | 124 |
| जल प्रबन्धन के कीर्तिमान | विमल कान्त | 125 |
| जीवन मूल्यों को बचाने की जिद है जिनमें | दिनेश पाल सिंह | 126 |
| गाँव विगहना, गुट्टी दाई और गोपाल भाई | आलोक यादव | 127–128 |
| वनवासी हितों की संघर्ष–गाथा का यह ...... | वासुदेव | 129–131 |
| शुभकामनायें | जयश्री जोग | 131 |
| बहुत प्यार किया, परोपकार किया | रामबहोरी विद्यार्थी | 132–133 |
| सामन्तों को काबू करना तो कोई............ | दिनेश द्विवेदी | 134 |
| यह उन दिनों की बात है | राजाभइया यादव | 135–136 |

# पिताजी हमारे गर्व हैं, सबके जीवन के पर्व हैं

● डॉ. राजश्री दीपक गोहदकर
सुप्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ
राजदीप फर्टिलिटी एण्ड रिसर्च सेण्टर
कोटा, राजस्थान

पूज्य पिता जी का 81वां जन्मदिवस चित्रकूट की पावन स्थली पर मनाने का विचार तो दो साल पहले ही आया था। परन्तु कोविड के चलते वर्ष 2020 और 2021 मानो सभी के जीवन से हटा दिये गये हों और फिर 2022 में 1 अप्रैल को हम सभी परिवार जन इस सुवअसर पर मिलकर उनका जन्म दिवस उत्सव के रुप में मना रहे हैं। पिता जी को मैंने हमेशा पूरे परिवार को लेकर साथ में जीते हुए देखा। घर में सबसे बड़े होने के नाते अपने छोटे भाइयों और उनके बच्चों की जिम्मेदारी हमेशा पिताजी और अम्मा जी ने निभाई है। कर्मठ व्यक्तित्व जिन्हें सम्पूर्ण क्षेत्र

**'पिताजी'** कहकर पुकारता है ऐसी महान हस्ती के इस उत्सव में उनके सभी करीबी, मित्रगण भी शामिल हों ये हम सबकी इच्छा थी। तदनुसार सभी ने इस निर्णय को सहर्ष स्वीकार किया।

मैं अपनी ह्रदय की गहराइयों से ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि पिताजी आजीवन स्वस्थ रहें एवं दीर्घायु हों। उनकी छत्रछाया में पूरे निजी एवं सामाजिक परिवार पर पिताजी और अम्मा जी का आशीर्वाद बना रहे।

पिताजी के जीवन के 83 बसंत बीत गए। समय नहीं रुकता। पिताजी की जीवन यात्रा यश–कीर्ति से भरी रही है। बहुत कम लोग होते हैं, जो दूसरों का दुख अपनाते हैं। दुखियों का दुख दूर कर ही सुख का अनुभव करते हैं। हमारा सौभाग्य है कि ऐसी विभूति पिताजी के रूप में हमारे साथ हैं। संताने तो माता–पिता के पुण्य का प्रतिफल होते हैं, हम जो कुछ भी हैं माताजी और पिताजी के संचित पुण्य की बदौलत हैं। हमारे पिताजी जैसा इंसान दूसरा मिलना मुश्किल है। बहुत कम शब्दों में बहुत गहरी और बड़ी बात कह जाते हैं। उनकी सौम्यता, उनकी सरलता की कोई मिसाल नहीं। उनकी वाणी में तो सरस्वती विराजमान है। जो भी सुनता है, उनका हो जाता है। सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए भी जिस प्रकार पिताजी समूचे घर–परिवार का ख्याल रखते हैं, वह अनुकरणीय है। उनका जीवन बहुत संतुलित है। नियम पूर्वक जीवन जीना उनका संकल्प रहा है। वे खानपान के प्रति बहुत सजग रहते हैं। पिताजी उत्सवधर्मी हैं। प्रायः विभिन्न प्रकार के उत्सव समारोहों के आयोजन कर समाज को कला–संस्कृति की ओर उन्मुख करते ही रहते हैं। **'लोक–लय'** जैसे बड़े आयोजन इस बात का प्रमाण हैं कि उनकी चिंता में अपनी लोकसंस्कृति और लोकविधाएं हैं। बुंदेखण्ड की 65 लोक विधाओं को 400 कलाकारों द्वारा मंच में प्रदर्शित किया जाना महत्वपूर्ण बात है। हमारे पिताजी जिस तरह से विलुप्त होती लोकविधाओ को बचाने के लिए आयोजन रचते हैं। देखकर गर्व होता है।

ईश्वर ने पिताजी को अनमोल गुण प्रदान किए हैं, वे गायक, वादक, समाज सुधारक, मुखर वक्ता, साहित्यकार, सामाजिक चिंतक तो हैं ही, कुशल संगठक, सामाजिक प्रेरक भी हैं। जिनकी प्रेरणा पाकर बुंदेलखण्ड के युवक/युवतियां अपनी प्रतिभा को निखार रहे हैं। पिताजी के प्रयासों से चित्रकूट जनपद के ग़रीब कोल आदिवासी बस्तियों के बहुत सारे कलाकार अपनी कलाओं का दूर–दूर तक प्रदर्शन करते हैं। सम्मान पाते हैं।

सच में पिताजी हमारे लिए गर्व हैं, सबके जीवन के पर्व हैं।

एक बार पुनः पिताजी को नमन करते हुए उनके दीर्घायु, स्वस्थ और समृद्ध जीवन की प्रार्थना करती हूँ।

*उत्सव हमारी जीवंतता के परिचायक हैं, उत्सव पूर्वक जीना ही जीवन है। जीवन में उत्सव न हो तो जीवन नीरस हो जाता है। भागमभाग और अति व्यस्तता ने मानव के जीवन से उत्सव छीन लिया है। उत्सव के बगैर मनुष्य चिड़चिड़ा या निराश हो जाता है। पर्व–त्योहार इसीलिए निर्धारित किए गए हैं कि मनुष्य को उत्सव मनाने का अवसर मिल जाएं।*

# प्रार्थना करता हूँ...

● मदन गोपाल दास

*(श्री कामतानाथ भगवान प्रथम मुखारबिन्द के अधिकारी एवं चित्रकूट क्षेत्र के अप्रतिम प्रज्ञा के धनी, युवा संतों के आदर्श, पर्यावरण हेतु प्रेरक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। –सं.)*

स्वकीव सत्कर्मों से अपार गौरव को अर्जित करने वाले श्री गया प्रसाद गोपाल भाई निश्चित रूप से परमार्थ के पर्याय है। अपनी जीवन के 83 बसंन्त पूर्ण करने के उपरान्त भी उनके जीवन में वार्धक्य की शिथिलता का रंच मात्र भी आभास नहीं होता है। अदम्य साहस, अनन्त ऊर्जा, अनवरत गतिशीलता एवं अकिंचनों के प्रति सहज स्नेह उन्हें जन सामान्य से अलग एक अलौकिक आभा प्रदान करता है। मानो मानवता की वे साक्षात प्रतिमूर्ति हैं।

समाज सेवा, पर्यावरण संरक्षण एवं जन प्रेरणा के अनेक आयोजनो में हम लोग एक साथ रहे। वहाँ पर उनकी सरलता, सज्जनता, आत्मीयता, सदाशयता एवं कर्मठता का निकट से अवलोकन करने सुअवसर प्राप्त हुआ। निराशापूर्ण अंतःकरणों में आशा के दीप प्रज्जवलित करना जैसे उनका एकमात्र ध्येय है। ''प्रतिफलताएं जीवन–सरिता के प्रवाह में अवरोध नहीं बल्कि प्रचण्ड वेग प्रदान करने वाली होती है'' यही प्रेरणा देते रहे हैं वे अनेक दशकों से।

मैं उनके स्वस्थ, सुदीर्घ एवं सतत् उद्योगी जीवन के लिए भगवान श्री कामदनाथ जी के चरण कमलों में प्रणिपात पूर्वक प्रार्थना करता हूँ।

# आदिवासियों के तारणहार

● कुमार राजेश
सुपरिचित पत्रकार
ए.बी.पी. गंगा न्यूज
नई दिल्ली

कुछ साथियों की मदद से अतर्रा में एक स्कूल खोला 'आदर्श बाल निकेतन' और अगले 10 सालों तक वे उसके प्रधानाध्यापक भी रहे। विद्यालय की स्थापना को गोपाल भाई ने एक मकान लेकर रात भर पोताई की, दीवाल पर आदर्श बाल निकेतन नाम लिखकर अपने एक साथी को प्रधानाचार्य के रुप में बैठाया। एक कुर्सी और एक मेज का इंतजाम भी किया।

गोपाल भाई को बचपन से ही अन्याय और अत्याचार बर्दाश्त नहीं था। इसलिए जब इलाके के सबसे तातकवर दबंग द्वारा एक छात्र के असहनीय पीड़ा दी गई तो उन्होंने इसके खिलाफ सैकड़ों छात्रों के साथ मोर्चा खोल उसे भागने पर मज़बूर कर दिया।

*वह दबंग उ0प्र0 का क्लास वन गुण्डा था और उस समय चुनाव के दिनों में दबंग के यहाँ आकर के लोग बोलते थे, टोपी रखते कि भइया हमने टिकट पा लिया है अब चुनाव आपके हाथ में है यह अटैची आपके पास है उस*

*समय अटैची नहीं होती थी झोले में पैसे रख आते थे और चुनाव जितवा दिया करता था।*

संघर्षो के दौरान ही शिक्षा की तरह गोपाल भाई ने पत्रकारिता के महत्व को समझा लिहाजा उन्होंने सन् 1960 के दशक में ''अजेय दुर्ग'' नाम से न केवल एक साप्ताहिक पत्र निकाला बल्कि उसे लम्बे समय तक सफलतापूर्वक चलाया भी। तमाम साथियों से 10–10 रुपये लेना हर अंक के लिए लगभग 200 रुपये में 500 प्रतियां 4 पेज की छप जाती थी और उनको स्वयं जाकर के उसे घर–घर बाँटने का भी कार्य किया।

गोपाल भाई के व्यक्तित्व के निर्माण में एक बड़ी भूमिका आर0एस0एस0 यानी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से उनके जुड़ाव की थी। किशोर अवस्था में आर0एस0एस0 की शाखाओं में उत्साह पूर्वक शामिल होने से लेकर 1973 तक उन्होने आर0एस0ए0 में विस्तार और प्रचारक जैसी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई। शारीरिक कहें, भौतिक कहें जो दो दक्षता है, जो जानकारी है, अच्छे लोगों की संगत है, अशोक जी सिंघल के साथ 9 वर्षों तक विभिन्न शिविरों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस बीच सन् 1975 में चित्रकूट में मफतलाल ग्रुप द्वारा संचालित सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट के संचालन के कई वर्षो तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के दौरान ही उन्होंने कोल आदिवासियों के शोषण को समीप से देखा जिससे उनके भावी जीवन को एक सार्थक दिशा मिली। कितना दर्दनाक अनुभव रहा होगा उस बाप का कि महज 20 रुपये का कर्ज़ समय पर न चुका सकने के एवज में जिसकी दूल्हन बनी बेटी को गांव का दबंग महाजन उठा कर ले जाये। सोचिए त्रासदी उस ग़रीब की मात्र 10 रुपये का कर्ज़ न चुका सकने पर जिसे आजीवन बंधुआ मजदूर रहना पड़े।

करीब 40 साल पहले ऐसे ही दीनहीन हजारों कोल आदिवासियों के लिए तारणहार बनकर आये थे गोपाल भाई अपने अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के जरिये।

*पाठा की तुम सुनो कहानी,*
*हम कोलों की बानी में,*
*सदियों से हम ठगे जा रहे,*
*शबरी राम कहानी में।*

करीब पचासी साल की महिला तिरसिया का 'तिरसिया' नाम इसलिए पड़ा क्योंकि जब वह नवयुवती थी तब उसके परिवार पर 83 रुपये का कर्ज़ न चुका सकने का आरोप लगाकर एक दबंग उसके ससुराल से उसे उठाकर ले गया था। आज तिरसिया की 5 संतानों में से 3 को पता नहीं उनका पिता कौन है। वह दादुओं के घरों में काम करने गई और उसी बखरी की ही रह गई और वहीं बच्चे भी पैदा हुए। चमक–धमक समाप्त होने के बाद लात मारकर उसको निकाल दिया गया उसके बच्चे भी बेचारे हो गये। पाठा इलाके में कोल आदिवासियों की ऐसी ही गहन पीड़ा और शोषण ने गोपाल भाई को इतना विचलित किया कि उनके विरुद्ध आजीवन संघर्ष हेतु उन्होंने 23 मार्च 1978 को अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का गठन किया और इसकी शुरुआती कर्मभूमि बनी मानिकपुर तहसील जहाँ कोल आदिवासियों की आबादी और उनका शोषण दोनों काफी अधिक थे। गोपाल भाई बताते हैं कि जिन लोगों ने ग़रीबों की ज़मीनों पर कब्जा कर रखा था, उनकी बहन–बेटियों पर कब्जा कर रखा था, उन लोगों के स्वार्थ टकराये इसलिए वहाँ पर रहना हम लोगों के लिए

काफी खतरनाक था, दिन में भी बाहर घूमना और रात्रि में भी शान्ति से न सोना कब कौन कहाँ आ जाये कैसे मारकर चला जाये इसलिए मानिकपुर के साथ–साथ हम लोगों ने चित्रकूट में भी ज़मीन लेकर और अपना मुख्यालय यहाँ बनाया। समग्र रुप से संस्थान का काम तीन भागों में बँटा है। पहला बंधुआ मुक्ति यानी व्यक्ति की मुक्ति, दूसरा संसाधनों की मुक्ति यानी संसाधनों को सजाने का काम जैसे जल प्रबन्धन, भूमि प्रबन्धन और तीसरा भविष्य के शोषण से मुक्ति यानि शिक्षा, महिला विकास, और व्यक्तित्व निर्माण जैसे प्रयासों से सुखमय भविष्य प्रबन्धन की।

संस्थान ने आदिवासियों की सैकड़ो एकड़ भूमि न केवल दबंगों के कब्जे से मुक्ति कराई बल्कि उनके आसपास जलाशय और बांध बनाकर उन्हें खेती लायक बनाने के साथ–साथ बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण का कार्य भी किया। भविष्य में शोषण से मुक्ति के लिए शिक्षा को एक सशक्त माध्यम मानकर संस्थान ने पिछड़े कोल आदिवासियों के इलाकों में शिक्षा संस्कार केन्द्र के नाम से 17 स्कूलों की स्थापना की। उनकी संख्या अब 100 तक जा पहुंची है। वहीं बीते चार दशकों में अब तक करीब 30 हज़ार बच्चे इन शिक्षा संस्कार केन्द्रों में पढ़–लिखकर काम धन्धों में लग चुके हैं।

संस्थान द्वारा महिला सशक्तीकरण और व्यक्तित्व निर्माण के प्रयासों की एक मिशाल है बूटीबाई। मूलतः कोल आदिवासी परिवार की एक बंधुआ मजदूर और निरक्षर महिला बूटी आज न सिर्फ पाठा इलाके में एक जानी–मानी लोक गायिका है बल्कि संस्थान द्वारा चलाये जा रहे शिक्षा संस्कार केन्द्र में शिक्षिका भी है। बूटी पार्षद का चुनाव भी जीत चुकी है और उसी सिलसिले में ददुआ जैसे खूंखार और एक दबंग राजनेता द्वारा अपनी अपरहण की कोशिश को नाकाम कर चुकी है। भला हो गोपाल भाई और उनकी संस्थान का जो बूटी का बाल भी बांका न होने दिया। इसी प्रकार बीते 30–40 सालों में गोपाल भाई के संस्थान के जरिये करीब 20 हज़ार बंधुआ मजदूरों और महिलाओं को बंधुवागीरी से मुक्त कराया जा चुका है और पाठा के हज़ारों ग़रीब आदिवासी परिवार आज अपने सुखमय भविष्य की ओर अग्रसर हैं।

पुलिस प्रशासन, जनप्रतिनिधि, सरकार यहाँ तक कि डकैत भी अगर किसी एक व्यक्ति के पीछे हाथ धोकर पड़ जायें और फिर भी वह व्यक्ति सकुशल, ग़रीबों, कोल आदिवासियों के साथ डटकर खड़ा रहे तो अवश्य उसका नाम होगा गोपाल भाई। चित्रकूट समेत पूरे पाठा इलाके में लम्बे समय से स्थापित स्थानीय दबंग, दादुओ, जमींदारों और उनके साथ सांठ–गांठ करने वाले जनप्रतिनिधियों व पुलिस प्रशासन को गोपाल भाई और उनके संस्थान के क्रियाकलाप फूटी आँख नहीं सुहाए।

इसी के चलते तीन–तीन जानलेवा हमले भी गोपाल भाई पर हुए। पर ईश्वर की कृपा से वो किसी तरह बच गये। इलाके के ददुआ व ठोकिया जैसे कुख्यात डकैत और इन दोनों के गुरु माने जाने वाले गया बाबा जैसे लोग भी गोपाल भाई का बाल भी बांका नहीं कर पाये। कोई न कोई उन मारने आने वालों में से गोपाल भाई का छात्र निकल आता था और कोई परिचय वाला निकल आता था जो आगे आकर खड़े हो जाते थे। यह अपार जनसमर्थन और सकारात्मक उर्जा का ही परिणाम था कि हज़ारों झूठे मुक़दमें और सैकड़ों जाँचों का सामना करते हुए भी गोपाल भाई बेदाग निकल आये। यहाँ तक कि एक लड़की

के अपहरण का मुक़दमा उन पर लगा पर अन्त में पुलिस अफसरों ने ही माफी मांगी। इस प्रकार कई जानलेवा हमलों और अनगिनत झूठे आरोपों के बावजूद गोपाल भाई अपने कर्तव्य पथ पर एक योगी की भांति बिना विचलित हुए आज भी उन्हीं ग़रीबों, कोल आदिवासियों की भलाई में जुटे हैं।

बीते 50–60 सालों से अगर किसी इन्सान को लगातार अपार जनसमर्थन मिल रहा हो तो आम सोच तो यही कहती है कि वह इन्सान लगातार एम0एल0ए0, एम0पी0 या मंत्री बन रहा होगा पर गोपाल भाई उस सोच के अपवाद है। करीब 80 से ज्यादा बसंत देखने के बाद आज भी वो समाज में दूरगामी सकारात्मक परिवर्तन लाने के सपने अवश्य बुन रहे हैं। बीते 30–40 सालों से अपने निःस्वार्थ सेवा वाले कामों के चलते हर राजनीतिक पार्टियों, जनप्रतिनिधियों के आँखों की किरकिरी बन रहे हैं गोपाल भाई। अपार जन समर्थन के बावजूद खुद वे हमेशा राजनीति से दूर रहे और उनके इस फैसले के पीछे ठोस कारण भी है। स्वयं राजनीति के दलदल में वे भले न घुसे पर अपनी समाज सेवा यात्रा में गोपाल भाई राजनीतिज्ञो के सहयोग को इन्कार भी नही करते इसलिए समय–समय पर उन्होंने संस्थान से जुड़े कार्यकर्ताओं को चुनावों में आर्शीवाद भी दिया है। गोपाल भाई ने दो विधायक भी बनाये और दोनों मंत्री भी बने। एक जनसंघ का और एक अपनी संस्थान में काम करने वाला कार्यकर्ता बी0एस0पी0 का।

गोपाल भाई शिक्षा को केवल सांसारिक सफलता के माध्यम तक ही सीमित नहीं रखना चाहते भविष्य में वे शिक्षा को नैतिक मूल्यों सहित व्यक्ति के आंतरिक और आध्यात्मिक विकास से ही जोड़ना चाहते हैं इसके लिए उनके पास ठोस योजना भी है। बालक का बालक के साथ या मानव का मानव के साथ में कैसा रिश्ता होना चाहिए, कैसा ताल–मेल होना चाहिए, कैसी परस्पर पूरकता होनी चाहिए। साथ में प्रकृति के साथ में, अन्य जीव–जन्तुओं के साथ में उसका कैसा तालमेल होना चाहिए इस प्रकार के भाव विचार भरने का भाव अंतिम सांस तक है। करीब 80 साल की अवस्था में भी बिना रुके, बिना थके गोपाल भाई की सेवा की मुहिम बदस्तूर जारी है। शायद इसलिए कि जिसने नर सेवा को ही नारायण सेवा मान लिया हो उसे न रुकना मंजूर न थकना। तमाम जानलेवा चुनौतियों के बावजूद आजीवन अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कोल आदिवासियों के लिए मसीहा गोपाल भाई की अद्भुत दास्तान को जानकर कोई भी यह कहने से नहीं रोक पायेगा वाह क्या बात है।

---

## शुभकामनाएं

बुन्देलखण्ड के कोल वनवासी क्षेत्र में शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास हुआ है। गोपाल भाई जी का परिश्रम स्तुत्य है। शिक्षा, लोक संस्कृति एवं प्राकृतिक खेती के लिए उनके द्वारा किये जा रहे प्रयोग दर्शनीय हैं, अनुकरणीय हैं। गोपाल भाई मेरे शैक्षिक जीवन के संरक्षक रहे हैं। यह मेरा सौभाग्य था। उनकी 83वीं वर्षगांठ पर मैं उनके स्वस्थ्य और दीर्घायु जीवन की हार्दिक कामना करता हूँ

**वीरेन्द्र सिंह**
**अधिवक्ता**
**मा. उच्च न्यायालय, प्रयागराज**

# गोपाल जी ने कठिनाइयों के बीच आदर्श की तलाश की

**भारत डोगरा**
**ख्यातिलब्ध पत्रकार,**
**सामाजिक कार्यकर्ता**
**नई दिल्ली**

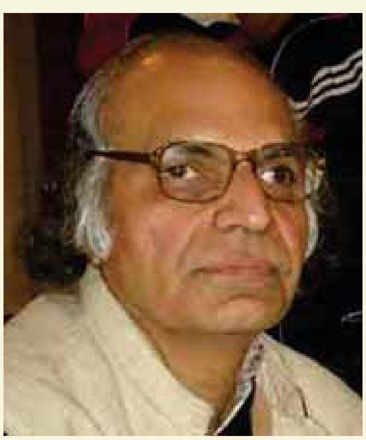

गोपाल जी का जीवन अनेक संघर्षों से भरा रहा, जिनमें एक बड़ी बात यह रही कि उन्होंने न्याय–पक्ष का साथ दिया। उनके संघर्ष बहुत कम आयु में ही आरंभ हो गए थे। जब इन्हें व्यापक स्तर पर ले जाने का अवसर उन्हें मिला तो स्वभाव अनुसार उन्होंने समाज के सबसे उपेक्षित–शोषित तबकों से ही अपने को जोड़ना चाहा। इसके साथ ही कोल–मवैया आदिवासियों तथा दलित भूमिहीन परिवारों के साथ उनकी यात्रा आरंभ हुई जो आज भी जारी है। अपनी सीमाओं के बीच जितना संभव था उन्होंने अपने क्षेत्र के इन परिवारों के लिए किया व उनसे भरपूर प्रेम और सम्मान भी प्राप्त किया।

जिस समय देश के एक बड़े भाग में भूमि–सुधारों से मुँह मोड़ा जा रहा था, उस समय गोपाल जी के नेत्तृत्व में बड़ी संख्या में चित्रकूट के जिले के भूमि से वंचित परिवारों को भूमि के पट्टे दिलवाने का कार्य एक बड़ी उपलब्धि था। जब लोग बंधुआ मजदूरी की बात भूलने लगे थे उस समय उन्होंने बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास को आगे बढ़ाया। जिस पाठा क्षेत्र की अधिक चर्चा जल–संकट के संदर्भ में ही होती थी, वहाँ कम खर्च में उत्तम जल संरक्षण के अनेकोनेक उदाहरण गोपाल जी व उनके साथियों ने प्रस्तुत किए। पर संभवतः गोपाल जी का सबसे अधिक शिक्षा व विशेषकर जीवन–मूल्य आधारित शिक्षा पर रहा। लोक कलाओं के संरक्षण के क्षेत्र में उन्होंने अपने प्यारे बुंदेलखंड क्षेत्र को बहुत उल्लेखनीय योगदान दिया।

गोपाल जी ने भरपूर प्रयास किया है कि अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के साथ बुंदेलखंड की अनेक अन्य संस्थाएं भी मिलकर एक साथ आगे बढ़ें। इस प्रयास के बीच में कुछ व्यवधान आया था, पर अब इसे नए सिरे से आगे बढ़ाना चाहिए। राज्य व राष्ट्र

के स्तर पर गोपाल जी की ग्रामीण विकास की समझ की बहुत मान्यता है। अनेक सार्थक प्रयासों व महत्त्वपूर्ण पहल में उनका परामर्श प्राप्त कर लोग लाभान्वित होते रहे हैं।

उनकी सोच लोगों को, ग्रामीण समुदायों को, दिलों को जोड़ने की रही है। अन्याय के विरुद्ध संघर्ष होते हैं तो कुछ व्यक्तियों के विरुद्ध आवाज उठानी ही पड़ती है। पर वे अन्याय की राह छोड़ दें तो गोपाल जी भी सुलह–समझौते के लिए तैयार रहते हैं।

हाल के समय में प्राकृतिक खेती व पर्यावरण रक्षा की खेती की ओर गोपाल जी का ध्यान अधिक आकर्षित हो रहा है व हमें लगता है कि इसके कुछ बहुत सार्थक परिणाम शीघ्र ही सामने आएंगे। गोपाल जी विभिन्न प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करते रहे हैं व इसके अनेक परिणाम भी सामने हैं। गीत–संगीत से उनका विशेष लगाव रहा है। लेखन, साहित्य, पत्रकारिता का उपयोग समाज के हित में हो, न्याय की आवाज़ उठाने के लिए हो, इसके लिए वे प्रयासरत रहे हैं।

स्वास्थ्य के विषय में उनकी व्यापक समग्र सोच है जिसमें शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य का मिलन होता है। इस तरह के प्रयासों, कार्यशालाओं के आयोजनो से भी वे जुड़े रहे।

भागवत जी के अकस्मात निधन से गोपालजी को बहुत आघात पहुंचा व इससे वे अभी तक पूरी तरह उभर नहीं पाए हैं। इस स्थिति में उनके साथियों व मित्रों को उनसे भरपूर सहयोग करना चाहिए।

## शुभकामनाएं

सहभागी शिक्षण ट्रस्ट जो कि सीतापुर रोड लखनऊ पर स्थित सहभागी प्रशिक्षण परिसर का संचालन करता हैं। इसके प्रबंधन एवं रखरखाव में गोपालभाई हमेशा गहन रुचि रखते हैं। उनके सुझाव हमेशा अनुकरणीय होते हैं। एक बार उन्होंने मुझे विस्तार से बताया कि सहभागी का परिसर ग्रीन कैम्पस के रूप में विकसित होना चाहिए। स्वैच्छिक संगठनों का परिसर पेड़ पौधों से परिपूर्ण, प्लास्टिक मुक्त, योजनाबद्ध कचरा प्रबंधन के साथ इको फ्रेन्डली होना चाहिए और इन सब बातों को उन्होंने बड़े विस्तार से समझाया। उनके इस इको फ्रेन्डली परिसर की अवधारणा से मैं आज भी प्रेरित हूँ एवं उसी के अनुरूप व्यवस्थाओं का निर्माण कर रहा हूँ। कचरा प्रबंधन, पेड़ पौधों का रोपण एवं जतन, प्लास्टिक का कम से कम उपयोग एवं पौष्टिक भोजन की व्यवस्था आज इस परिसर की पहचान बन चुकी है।

आपके इस सुझाव को हम लोग हमेशा याद रखेंगे। गोपाल भाई आप दीर्घायु हों एवं हम जैंसे नौजवानों को प्रेरणा देते रहें ।

**अमित कुमार सिंह**
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
सहभागी शिक्षण केन्द्र
लखनऊ

# वह छविमान व्यक्तित्व

•

**जवाहर जलज**
**लोकप्रिय कवि**
**बांदा**

यह भी जानिये
कि कौन है भला?
वह छविमान व्यक्तित्व
जो
सामाजिक
संचेतना की
शक्ति उजागर कर
सेवा भाव का
महानाद उमड़ाकर
अखिल भारतीय
समाज सेवा संस्थान
का वृन्दावन विकसाकर
बुलाता है सबदिन।
प्रसन्नता की बहार
बहाता है अविरल
कर्मशीलता की धार
हरता है पाठा की
धरती की प्यास।
कराता है राहत का
अहसास।
सूखने नहीं देता
संवेदना का सरोवर।
झुलसने नहीं देता
मनुष्यता का तरुवर।
अलापता है
सत्य का ही राग
बुझाता है
घोर अनर्थ की आग।
फहराता है
संघर्षशीलता का ध्वज।
खिलाता है
पाषाणी उर में भी
रसवन्ता का जलज
और
रखता है जो
जंगली जन–जीवन के भी
सुमंगल का ख्याल।
वह कोई दूसरा
नहीं है
अपितु बुन्देलखण्ड की
माटी का है
अतिशय प्यारा–न्यारा
लाल
भाई गोपाल।

# वनवासियों के संबल

**अभय महाजन**
**समाजसेवी, संगठन सचिव-दीनदयाल शोध संस्थान**
**चित्रकूट**

*(भारत रत्न नानाजी देशमुख के सेवा कार्यों के समर्थ संवाहक, त्याग, समर्पण के लिए सर्वत्र, सर्वदा चर्चित, सम्मानित। –सं.)*

विशाल व्यक्तित्व के धनी श्रद्धेय गोपाल भाई जी कभी भी कहीं भी मिलें वे सदा खुश दिखें जबकि कई विपरीत परिस्थितियों मे मिलना हुआा वे केवल खुश ही नहीं रहते, दूसरो को थोड़ा भी मुरझाये अवस्था मे देख भाँप जाते हैं, उनका जीवन दूसरों को अपना बनाने तथा उन्हें खुशहाली की अवस्था मे देखना है। उन्होंने, वनवासी जो पीड़ित एवं उपेक्षित हैं, उन्हें अपने पैरों पर खड़ा कर स्वाभिमान के साथ समाज मे जीवन जीने की कला सिखायी है। यही सच्चे स्वयंसेवक की पहचान है। ग्राम विकास पर कार्यरत छोटे–बड़े कार्यकर्ताओं को आपने साथ जोड़कर उनका मार्गदर्शन किया।

आपका जब ग्रामों में प्रवास होता था, मुझे याद है तब आप श्री जगन्नाथ सिंह, तत्कालीन जिलाधिकारी के साथ स्वावलंबन केन्द्रों पर जाकर समाज शिल्पी दम्पत्तियों से मिलकर प्रोत्साहित करते थे। उनकी गतिविधियों को बारीकी से देखते समझते थे, तथा उस कार्य की सराहना भी करते थे। देवलहा, पटनाकला में वनवासियों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाना या अर्जुनपुर, बछरन, चनहट जैसे गाँवो मे बाल शिविर एवं साक्षरता कार्यक्रम को देख संतुष्ट होते थे। कुछ दिन पहले आपके कमर में दर्द हुआ, आपने प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग से अपने आपको ठीक किया इस उम्र में भी आप योग गुरुओं को भी योग सिखाते हैं। आहार–विहार एवं दैनिक दिनचर्या के पक्के, यही

तो शतायु होने का राज है। वन औषधियों का भी आपके पास अपार ज्ञान एवं संग्रह है। आपका जीवन कठिन परिस्थितियों एवं कठोर जीवन से तपकर निकला है, आपके पास जब भी गया पेड़ो के नीचे या बरामदे में खुले मे बैठे मिले, ठंडी–गर्मी चाहे वर्षाकाल हो, आप खुले में बैठकर खुले हृदय से चर्चा करते है। भारतरत्न श्रद्धेय नानाजी से आपका आत्मीय संबंध था। ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद क्षेत्रीय कवि सम्मेलन, ग्रामोदय मेला का आयोजन हो या कोई कार्यक्रम नानाजी के जाने के बाद भी आपने दीनदयाल शोध संस्थान को परिवार माना। आपने कई अवसरों पर सदैव उत्साहवर्धन किया है। आपने असंख्य दीप जलाये हैं, ये दीप भारत जननी परिसर तक ही नही अपितु देश के विभिन्न स्थानों पर प्रकाशित कर अनुष्ठान को ध्येय निष्ठा से भारत माता की जय की ओर ले जा रहे है।

# श्रृद्धा बढ़ती गई...


**संजय सिंह**
**यशस्वी सामाजिक कार्यकर्ता**
**परमार्थ समाज सेवी संस्था, जालौन**


*(जल पुरुष के रूप में ख्याति बढ़ रही, जल प्रबन्धन के कार्य राष्ट्रीय उदाहरण बन रहे हैं। समाज कार्य भिन्न राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से विभूषित हो रहे हैं। –सं.)*

वर्ष 1997 में मैंने अपने कार्यों के सन्दर्भ में एक पत्र गोपाल भाई को जल संरक्षण (वाटर शेड) के बारे में लिखा। उनके द्वारा उस पत्र का बहुत ही सकारात्मक प्रेरणाप्रद तरीके से उत्तर दिया गया। जिसके कारण मेरे मन में उनके एवं उनके कामों के प्रति श्रद्धा जागृत हुई। इसके बाद उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ मिलने के बाद से श्रद्धा लगातार बढ़ती गयी उनके द्वारा मेरे जैसे कार्यकर्ताओं के निर्माण में समय–समय में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। एक बार उनके साथ मुझे मसूरी में सिद्ध संस्था में शिक्षा के विकृत रूपों के जानने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान मुझे उनके साथ रहने का भी अवसर प्राप्त हुआ उनकी सहजता, सरलता और व्यक्ति एवं कार्यकर्ता निर्माण की क्षमताओं को देखकर गहरी आस्था हुई। **परमार्थ संस्था** को पिता जी सानिध्य अनवरत रूप से हमेशा प्राप्त होता रहा।

यह जानकर अपार प्रसन्नता हुई कि पिताजी (गोपाल भाई) जिन्होंने अपने जीवन काल के 83 बसंत पूर्ण किये। जिसमे 5 दशक से अधिक का समय समाज के निर्धनतम, कमजोर, अभाव ग्रस्त वंचित लोगों के उत्थान में लगाया। आज भी उनका उत्साह देखकर हम सब अपने को ऊर्जावान पाते हैं। उनका सदैव हमारे जैसे सैंकड़ों सामाजिक कार्यकर्ताओं को गढ़ने और निर्माण करने में योगदान रहा। वह हमेशा हमारे लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका में हैं। समय–समय पर उन्होंने मेरे विपरीत तैयार किये जा रहे नकारात्मक वातावरण को सकारात्मकता में बदलने का प्रयास किया। पिता जी (गोपाल भाई) की दीर्घ आयु एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

# अथक योद्धा की अकथ कहानी

● रामकिशोर
**सामाजिक कार्यकर्ता**
**ग्राम-विगहना, बांदा**

*(गोपाल भाई के गाँव विगहना के निवासी हैं, बचपन से साथ मिला। संस्थान के प्रत्येक जन आन्दोलन, पैरवी कार्यक्रमों में अहम भूमिका रहती आयी है। –सं.)*

मैं विगहना का निवासी हूँ। गोपाल जी का जन्म स्थान भी विगहना है। विगहना बाँदा जनपद का गाँव है। मैं अपने परिवार की तीसरी पीढ़ी हूँ, जिसका आत्मिक सम्पर्क, सम्बन्ध गोपाल जी के परिवार से रहा। मेरे चाचा तथा मेरे एक बड़े भाई भी गोपाल जी के साथ अतर्रा में रहे। दुर्भाग्य से मेरा भाई बीमारी का शिकार हुआ और वह नहीं रहा। कालान्तर में 1965 से गोपाल जी आदर्श बाल निकेतन के प्रधानाचार्य बने तथा मैं उन्हीं दिनों बाल्यावस्था छोड़कर किशोर बन रहा था। मुझे भी आदर्श बाल निकेतन में कार्यालय सहायक के रुप में कार्य का अवसर मिला। वहाँ से ही गोपाल जी के साथ मेरी सघन यात्रा का शुभारम्भ होता है। आदर्श बाल निकेतन छोड़कर गोपाल जी जब सद्‌गुरु सेवा संघ ट्रस्ट में गये। उनके साथ वहाँ वहाँ भी काम करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। उसी काल में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की स्थापना हुई तथा मैं उसका एक अंग बना। समाज सेवा संस्थान की अधिकांश गतिविधियों का साक्षी बना। उनके सान्निध्य में रहकर संगठनात्मक गुण सीखे, कठिन परिस्थितियों में जीना सीखा। कुछ प्रमुख घटनाएं इस प्रकार हैं –

**सुखरामपुर घटना** : अपने मन मुताबित काम की स्वतन्त्रता से वंचित सुखरामपुर गाँव के सभी कोल परिवार दो जून की रोटियों के लिए ठेकेदार के अधीन थे। गुलामी की मानसिकता में जकड़े इन परिवारों के स्वाभिमान को जगाने उन्हें अपने जीवन संघर्षों की लड़ाई के लिए तैयार करने का प्रयास गोपाल भाई कर रहे थे। बात सन् 1980 की है तेन्दू पत्ती की तुड़ाई एवं ढुलाई का सीजन चल रहा था। मानिकपुर क्षेत्र का एक दबंग दादू के पास ठेका होता था। सुखरामपुर में दबंग दादू का काम चल रहा था। दबंग के कारिंदे एक दिन शाम को सुखरामपुर पहुँचे। गाँववालों को बुलाकर बोरियों में तेन्दू पत्ते भरने का हुक्म दिया। सुखरामपुर, हरिजनपुर गाँव के लोगो ने ठेकेदार के कारिन्दों से कहा कि साहब अभी–अभी पत्ती तोड़कर आये हैं। बाल बच्चों को खाना खिला दें, इसके बाद चलते हैं। इस पूरे वातावरण में कहीं चावल पक रहा था तो कहीं सब्जी कट रही थी। कुछ युवा मजदूर ठेकेदारों से अपनी मजदूरी की बात भी करने लगे। मजदूरों को अपने श्रम के मूल्य की माँग ठेकेदारों को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने गाली–गलौज कर महिला–पुरुषों को घसीट–घसीट कर बन्दूक की नोकों एवं लात घूसों से मारा–पीटा। तमाम बड़े–बड़े अपराधों के बाद भी पुलिस की हिम्मत दादुओं के खिलाफ रिपोर्ट लिखने की नहीं होती थी। दरोगा ने रिपोर्ट लिखने से साफ इनकार कर दिया। प्रशासन तटस्थ था, गाँव में दशहत छा गयी थी। लोगों की कोई आर्तवाणी सुनने को तैयार नहीं था। क्षेत्र में दहशत छाया था। गाँव के लोग अपनी हताशा को लेकर गोपाल जी के पास पहुँचे। गोपाल जी ने इस घटना की शिकायत डी0एम0, एस0पी0 से की वहाँ से थाने में दबाव पड़ा। डी0एम0 स्वयं घटना स्थल पर पहुँचे। पहली बार पाठा के सामन्तों के खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज़ की गई।

'मेरे खिलाफ आवाज़ उठाने की हिम्मत कैसे?' प्रतिरोधवश दबंग दादू संस्थान के वरिष्ठ कार्यकर्ता विद्यासागर बाजपेयी (जो आज भी संस्थान में तैनात हैं) को पकड़कर ले गये। बन्धक बना लिया और उधर गोपाल जी को चुनौती दी कि इन्हें छुड़ा ले जायें, गोपाल भाई का भी सन्देश पहुँचा कि मैं छुड़ाने नहीं आऊँगा। मेरे मित्र को छोड़ दिया जाये। माहौल इस तरह का बन गया था कि सेनायें अस्त्र–शस्त्र से लैस अपनी–अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहीं थीं। अन्त में दबंग दादू द्वारा बाजपेई जी को लेकर संस्थान आना पड़ा। वहाँ गोपाल भाई का दबंग दादू से वाक् युद्ध प्रारम्भ हुआ और यह वाकयुद्ध अन्तिम सीमा तक पहुँचा। अन्त में दबंग ने अपनी गलती स्वीकार कर उन्हीं कोल परिवारों से क्षमा माँगी, तब प्रसंग समाप्त हुआ। इस घटना के बाद उस दबंग परिवार से गोपाल भाई के बहुत अच्छे संबंध बन गये।

जैसे खेतों और बागों में पड़ी सड़ रही लकड़ी भी संस्कारित हाँथों में पड़कर अमूल्य बन जाती है वैसे ही सुसंस्कारों वाले व्यक्ति का निर्माण अच्छे संस्कार देकर करना, उन्हें सही मार्ग पर लगाना तमाम प्रसंग भी गोपाल जी के साथ जुड़े कार्यकर्ताओं से सुने जा सकते हैं।

गोपाल भाई का सम्पूर्ण जीवन एक किताब है, जिसका हर पृष्ठ संघर्ष से परिपूर्ण है। गोपाल भाई ने जीवन के प्रत्येक कार्य को चुनौती के रुप में स्वीकार किया है।

सन् 1972 में गोपाल भाई अतर्रा शहर में शिक्षक के पद पर कार्यरत थे तभी सभी शिक्षकों सहित वन–विहार के लिए मानिकपुर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। घनघोर जंगल से

घिरे मानिकपुर में पूरी तरह जंगल राज कायम था। हज़ारों की संख्या में कोल काम करने की मशीन मात्र थे। दादुओं के यहाँ 10 से 25 की संख्या में 5 पाव अनाज की मजदूरी पर कोल कार्य करते थे। 12 से 14 घण्टे लगातार काम करना, उत्पीड़न होने के बाद भी जुबान नहीं खोलना, हर जुल्म को सहकर, पथराई आँखों से टुकुर–टुकुर देखते रहना, उनकी नियति थी, उनकी जीवन कहानी थी।

'बाँसाचुवा' मानिकपुर का घनघोर जंगल है जहाँ दिनभर रहकर वन–विहार किया गया। जंगल में जानवर चरा रहे एक कोल चरवाहे से गोपाल भाई ने बातचीत की। कोलों की दुखभरी कहानी सुनकर द्रवित हुए। मन में विचार आया कि दुःख को मैं कैसे दूर कर सकता हूँ। मन में बात लगातार गूँजती रही। मानिकपुर में एक सेठ के यहाँ ठहरे हुए थे। श्री रामलाल गुप्ता के साथ कोलों की समस्याओं पर वार्ता हुई परन्तु श्री गुप्ता ने और दर्द भरी बातें बताई। महिलाओं को गिरवी रखना, सुन्दर बहन–बेटियों को हवश का शिकार बनाना, पुरुषों को जानवरों की भांति कोल्हू में जोतना, बंधुवा रखना आदि प्रमुख समस्याएँ सामने आयी। परन्तु गुप्ता जी द्वारा यह वाक्य *"यह समूह तो मरे के समान है, इसमें जान ही नहीं है"* साहित्यकारों ने भी इसे *'डेड कम्युनिटी'* कहकर सम्बोधित किया है।

*'गोपाल भाई इनके साथ इनके लिए कुछ करना अपना समय खराब करना है। मुर्दों के विषय में सोचने से कोई फायदा नहीं होने वाला।'* गुप्ता जी द्वारा कहे वाक्यों को गोपाल भाई ने चुनौती के रुप में स्वीकार किया और अपनी जवानी के सुनहरे दिनों को संघर्ष के अखाड़े में उतार दिया। पहले तो आदिवासी दूर से इन्हें देखकर जंगल भाग जाते थे। परन्तु बच्चों के माध्यम से इन्होंने परिवारों में पैठ बनाया और धीरे–धीरे उस मृत समूहों को यहाँ तक

ले आये। अब वही मृतप्राय समूह अपना रास्ता स्वयं बनाने में सक्षम हो गया है। अपने जीवन की लड़ाई स्वयं लड़ने लगा है। इस बदलाव के दौर में तमाम सामन्त गोपाल भाई की जान के दुश्मन बन बैठे थे। हर क्षण प्रत्येक गतिविधियों में नज़र रखी जाती रही कि कब मौका मिले और वो जड़ को काट फेंके। क्योंकि ग़रीबों की 15 हजार एकड़ भूमि सामन्तों के चंगुल से छुड़ाया, महिलाओं को गिरवी रखे जाने की प्रथा को समाप्त करवाने में सफल हुए, बंधुवा जीवन से मुक्ति दिलायी। कोल आदिवासी बिना खाये, पिये काम करने वाले बेजुबान गुलाम थे, वैसे ही गुलाम बनाकर सामन्त उन्हें रखना चाहते थे, परन्तु गोपाल भाई ने कभी हार नहीं मानी, सिर पर कफन बाँधकर लगातार चलते रहे, 40 वर्षों का लम्बा अन्तराल, संघर्ष पूर्ण जीवन, चुनौती को साकार कर दिखाने जैसा अदम्य साहस सबको प्रेरणा प्रदान करता है। व्यक्तिगत, परिवार एवं गाँव से ऊपर उठकर ग्रामीणजनों के विकास के लिए गाँव–गाँव में विकास साधन पहुँचाकर, आपने जो नई ज्योति फैलाई है वह अपने प्रकाश से युग–युग से फैले अंधकार को दूर कर रही है। दरिद्रनारायण की अंर्तवाणी सुनकर आपने जो उनके लिए काम किया है वह इस युग के सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए आदर्श है। सच्चे पुरुषार्थ प्रदान करते हैं। वे व्यक्तिगत परिवार गाँव से ऊपर उठकर पूरे समाज के लिए अदम्य साहस के परिचायक हैं। वे ऐसे खेवनहार हैं जो दो किनारों पर चलते हुए भी दोनों में सामंजस्य बनाने में सफल हुए हैं।

पाठा क्षेत्र में काम करने में कठिनाई शुरुआत में बहुत थी लेकिन अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान को स्थापित करने के पहले गोपाल भाई के नेतृत्व में सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का कार्यकाल आगे काम करने में ज्यादा सहयोगी रहा क्योंकि सद्गुरु ट्रस्ट में पर्याप्त संसाधन थे उस समय मानिकपुर क्षेत्र में जो काम किये सन् 1979–80 में सूखा पड़ने के बावजूद सद्गुरू सेवा संघ ट्रस्ट एवं गोपाल भाई का शासन–प्रशासन के साथ मेल–मिलाप होने के चलते सरकार द्वारा चलाये जा रहे काम के बदले अनाज योजना में सही क्रियान्वयन कार्यकर्ताओं को प्रेरित कर समाज का कोई भी व्यक्ति भूखा न पड़े ऐसी ज़मीनी प्रयासों से जबरदस्त पहचान गोपाल भाई एवं उनके कार्यकर्ताओं की पूरे क्षेत्र में स्थापित हुई । बीच–बीच में तमाम सारे उत्पीड़नात्मक, शोषण, अन्याय के मुद्दों पर प्रमुखता के साथ काम किये गये। सन् 1986–87 में मनभरन पुत्र शिवबालक कोरी की अच्छी भूमि को उसी के मालिकों ने बदले में अनुपजाऊ पथरीली ज़मीन दे दिया था जिसका प्रतिकार मनभरन ने 14 वर्ष पूर्व की उमर में किया संस्थान के सहयोग से बचा। उसे डकैत तक बनाया गया लेकिन आज वह करोड़पति हैं। रीवा के बेला गाँव में आवासित है, कुसमुही गाँव में 13 मवासी में एक भू–स्वामी दादू के यहाँ बंधुवा थे। शासन एवं संस्था के प्रयास से बंधुवा चयनित हुए थे। दबंग शक्तियाँ उनसे अपने प्रभाव से हलफ़नामा द्वारा बंधुवा न होने का शपथ पत्र लेने में लगे थे। उस समय कर्वी जिला नहीं था। तत्कालीन ए0डी0एम0 वर्तमान में मुख्य सचिव उ0प्र0 सरकार दुर्गा शंकर मिश्र से गोपाल भाई के रिश्ते अच्छे थे इस प्रकरण में ए0डी0एम0 काफी सक्रिय थे। कुसमुही गाँव से गंगा मवासी भागकर संस्थान में गोपाल भाई को बताया कि आज रात तक सभी बंधुवा श्रमिकों को दादू के आदमी (गुण्डे) जबरन कचहरी ले जायेंगे, इतनी बात सुनकर गोपाल भाई ने मुझे, राजाबुआ एवं मातादयाल को रात्रि की इटारसी पैसेंजर से जाकर

रातोंरात लाने को कहा। हम लोग गंगा मवासी के साथ टिकरिया स्टेशन रात में 10 बजे उतरे रातोंरात जंगल से कुसुमी गाँव के किनारे पहुंचे, गाँव में आहट लगी कि शोरगुल हो रहा है हम तीनों लोग पहाड़ में रुककर गंगा को भेजे कि जाओ माहौल लो कहीं दादुओं के आदमी आतंक तो नहीं कर रहे। लौटकर जैसी भी हो ख़बर हो देना। पूरी रात गर्मी में हम तीनों लोग पहाड़ में ही रुके रहे न मवासी आया न ही गाँव से कोई ख़बर आई हम लोग सुबह गाँव जाकर बंधुवा मजदूरों को मानिकपुर लेकर आये। एक बार गोपाल भाई, हजारी सिंह पंकज, सत्य नारायण मिश्रा पत्रकार और मैं रात्रि में भयंकर ठण्डक थी रजाई, कम्बल लेकर ट्रेन से रात्रि 10 बजे टिकरिया स्टेशन उतरे और वहीं प्लेट फार्म पर लेट गये। रात्रि में इतनी ठण्डक पड़ी कि सुबह बर्फ की पर्त जमा हो गई। पूरी रात बड़ी मशक्कत से कटी सुबह के अंधेरे में छिवलहा गाँव पहुँचे तब तक मुझे कुछ पता नहीं था कि यहाँ आने का मक़सद क्या है। छिवलहा गाँव जाने पर पता चला कि यहाँ पर एक कोल जिसका नाम कुंवारे था उसकी शादी नहीं हुई थी इलाके के असरदार भूस्वामी दादू (टिकरिया) द्वारा जबरन नसबन्दी करा दिये हैं। गाँव में जाने पर पता चला कि अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए दबंग दादू द्वारा अपने प्रभाव एवं करिंदों के बल पर ट्रक लगाकर गाँव में जो भी कोल महिला–पुरुष मिले जबरन भरवाकर मानिकपुर स्वास्थ्य केन्द्र में नसबन्दी करा रहे हैं। इस प्रकरण को जब गोपाल भाई के नेतृत्व में उछाला गया तो दबंग दादू एवं उस समय के तैनात डाक्टर पाण्डेय ने गोपाल जी के सामने आकर घुटने टेक दिये।

एक बार टिकरिया एवं जमुनिहाई में सस्थान द्वारा वाटरशेड़ कार्यक्रम का प्रोजेक्ट बनाने हेतु एफ्रो टीम के इन्जीनियर टिकरिया से वापस मानिकपुर आ रहे थे। उस दौरान एफ्रो टीम द्वारा सांसद की गाड़ी से ओवरटेक कर आगे निकल जाना बाहुबली सांसद महोदय को नागवार गुजरा उन्होंने हमारे इंजीनियरों को 2–2 थप्पड़ मार दिया यह ख़बर जब गोपाल भाई को लगी तो उन्होंने सक्रिय कमेटी के साथ आपात बैठक बुलाई बैठक में तय हुआ कि बाहुबली सांसद महोदय के घर संदेशा भेजा जाए आपने बाहरी लोगों को अपमानित किया है जो आपके ही गाँव के विकास का नक्शा तैयार करने में लगे हैं, अगर शीघ्र गलती/क्षमा नहीं मानी तो कल अपने ही गाँव में लड़ाई की तैयारी करिए। उसी मीटिंग के बाद टिकरिया, जममुनिहाई गाँव के लोगों के साथ बैठक की गई और सांसद की करतूत बताने पर पूरे गाँव के लोगों ने दबंग सांसद का सामाजिक बहिस्कार किया था। मेरे लिखने का मक़सद यह है कि गोपाल भाई कोई भी क़दम रणनीति के तहत उठाते आये हैं। यही सफलता का कारण बनी है। एफ्रो टीम डरे नहीं उनके साथ मैं और मातादयाल लट्ठा लेकर 10 दिन तक क्षेत्र में रहते रहे हैं ताकि वह भयभीत न रहें निडर होकर अपना काम करें।

एक बार मैं और संस्था की सक्रिय कार्यकर्ता रही श्रीमती विमला जी गाँवों में संगठन की बैठक करने गये थे तीन गाँवों में बैठकें करते काफी रात हो गई थी, संस्थान में गोपाल भाई चिन्ता में लगे थे उस समय मोबाइल का सिस्टम नहीं था तत्काल 2 लोगों को मोटरसाइकिल से भेजकर ख़बर ली इधर हम लोग जब तक वापस नहीं आ गये किसी ने भोजन नहीं किया था। मैं अपनी 40 वर्ष की उम्र में उनके साथ यात्रा में जो कुछ सीखा है उनके अन्दर बड़ी उल्लेखनीय क्षमतायें हैं। गुस्सा कभी उन्होंने दर्शाया नहीं, अपना और सबका गुस्स हरदम

पीकर रह गए। बिना खून बहाये पाठा जैसे दुर्दान्त एरिया में पाठा के पिता के नाम सिद्धि पाना सबके बस का नहीं था। एक तरफ दादू दबंग जिनके पास गुण्डे, लठैतों की टीम, राजनीति के अगुवा, शासन–प्रशासन उन्हीं के इशारे में काम करने वाला और हमारी संस्था के पास सीमित कार्यकर्ता, सीमित संसाधन फिर भी पाठा में उनके नेतृत्व में इतनी बड़ी सफलता मिलना अपने आप में एक बहुत बड़ी मिशाल है।

सन् 1990–91 में अरुण आर्या एस0पी0 चित्रकूट में नये आये थे। गोपाल भाई से मुलाकत हुई पाठा की विसंगतियों पर चर्चा होने पर उन्होंने 'जनसुनवाई' का समय दिया, उधर सारे कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण रानीपुर भट्‌ट में चल रहा था। बैठक हुई जनसुनवाई की सूचना क्षेत्र में देने, मुद्‌दे वार पीड़ितों को बुलाने की जिम्मेदारी मातादयाल और मुझे मिली। हम सूचना देने जैसे ही चूल्ही गाँव में घुसे हम दोनों को राधे डकैत गैंग ने घेर लिया मातादयाल को अलग खड़ा करके मुझे चारो तरफ मेरे बदन में राइफल तानकर गाली–गलौज किया। इसी बीच मेरे बचाव में पूरा गाँव महिला–पुरुष बच्चों सहित टूट पड़े और राधे से मेरे प्राणों की भीख मांगी। राधे ने मुझे इस शर्त पर छोड़ा कि *'जाओ तुम्हें गाँव वालों ने बचा लिया पर आज ही मानिकपुर छोड़कर चले जाना दुबारा मिलोगे तो जान से मार देंगे। आज मेरी जगह ददुवा (भइया) होते तो तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ते चाहे गाँव नहीं पूरा इलाका आ जाता'*। छोड़ने के बाद हमारी मोटरसाइकिल ले ली अपने आदमी को मानिकपुर से सौदा लाने हेतु भेज दिया हमें कहा यहीं रुको हम दोनों धनतल कोल के यहाँ 2 घण्टे तक किस हालात पर काटे यह तो हमारी आत्मा जानती है। चूल्ही गाँव वापस आकर संस्थान कार्यालय मानिकपुर में जाकर दोनों लोग सोच–विचार करते रहे उस दिन सूचना देने नहीं गये। दूसरे दिन सुबह से फिर उसी काम पर लग गये जिसकी हमें गोपाल भाई से जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इस घटना के पीछे रहस्य यह था कि हमारे संगठन 'पाठा कोल अधिकार मंच' के बैनर से जीती हुई जिला पंचायत सदस्य श्रीमती बूटी कोल को दादू, दबंग और ददुआ, प्रशासन अपहरण नहीं कर पाये। अपने मनमाफिक प्रत्यासी को वोट नहीं दिला पाये। जिसका राधे ने मुझे पकड़ते समय उल्लेख किया था कि *'तुम संगठन की दुहाई देते थे, बड़े संगठन वाले बनते थे, आज मैं जंगल में तुम्हे पा गया हूँ कहाँ गया तुम्हारा संगठन एक गोली मारकर खत्म कर दूँगा क्या कर लेगें संगठन वाले'*। जब मुझे छोड़ा तब अहसास किया कि जाओ तुम्हें इन गाँव वालों की बदौलत छोड़ रहा हूँ ग्रामीणों की दबिस पर साबित हुआ कि हमारी जीत संगठन से हुई।

गोपाल भाई के नेतृत्व में काम की शुरुआत ग़रीब की परिभाषा को लेकर हुई, क्योंकि संस्थान में शुरुआती दौर में जो भी कार्यकर्ता चयनित हुए लगभग ग़रीबी की बारीकियों से वाक़िफ़ थे। गोपाल भाई खुद ही बहुत ग़रीब परिवार में जन्म पाकर पल बढ़कर बड़े संघर्षमयी जीवन जीते हुए शिखर पर पहुंचे हैं। मेरे गाँव के होने के नाते मैं तो हर तरह से वाक़िफ़ हूँ। एक जुनून के साथ टीम भावना से काम हुए। रचना और संघर्ष को लेकर तमाम सारे काम हुए जिसका जीता जागता उदाहरण मानिकपुर और मऊ ब्लाक हैं।

मैं कीर्तिशेष भागवत जी की प्रेरणा से अपने संगठन 'जागृति संस्थान' के बैनर से हाईकोर्ट में चित्रकूट, बांदा, इलाहाबाद तीनों जिलों में चल रही खदानों में लीज धारकों के

खिलाफ पर्यावरण एन0ओ0सी0 न रहने के कारण सरकार के खिलाफ़ जनहित याचिका दायर की थी उस समय बी0एस0पी0 सरकार थी। तत्कालीन खनिज मंत्री की हमारे गाँव में रिश्तेदारी है उस नाते गोपाल भाई को मामा कहते हैं सरकार के खिलाफ याचिका में मंत्री जी ने हस्तक्षेप कर गोपाल भाई पर दबाव बनाया जबकि दायर याचिका की जानकारी गोपाल भाई को नहीं थी। अन्त में गोपाल भाई ने मुझे तथा हस्तक्षेप कर रहे मंत्री के मध्यस्थों को रानीपुर भट्ट में बैठाया। मध्यस्थों द्वारा जनहित याचिका वापस हाईकोर्ट से लेने का दवाब बनाया गया तमाम प्रलोभन सरकारी स्तर के दिये गये, धमकी भी दी गई लेकिन याचिका वापस नहीं हुई। ऐसे दुस्साहसी काम करने की प्रेरणा भी हमें गोपाल भाई से प्राप्त हुई। इसमें शंकरगढ़ की 46 गाँवों की नियम विरुद्ध लीज समाप्त कराई गई जबकि 90 वर्ष का उनका बाण्ड था। इलाहाबाद जिले के शंकरगढ़ में 100 वाशिंग प्लांट बिना एन0ओ0सी0 (ग्राउण्ट वाटर) के सिल्का सैण्ड धुलाई के चल रहे थे, भूगर्भ जल का दोहन हो रहा था इसको लेकर भी जागृति संस्थान के बैनर तले एन0जी0टी0 दिल्ली में जनहित याचिका दायर की गई थी जिसमें 77 अवैध वाशिंग प्लान्ट धारकों के ऊपर 2019 में 7.50 लाख रुपये का जुर्माना हुआ था।

एक बार संस्थान कार्यकर्ता राजकुमार और मैं दोनों एक बहुत ही संवेदनशील मामले के सम्बन्ध में जमुनिहाई गाँव में मेहमान यादव के घर गये थे, हमारे घर में पहुंचते ही हमें डकैतों ने पकड़ लिया और दोनों को जमुनिहाई गाँव से 1 किमी0 दूर जंगल में ले गये पैसा, घड़ी आदि छीन लिया यह घटना 1998–99 की है। सबकुछ छीनने के बाद वापस गाँव में छोड़ गये और हिदायत दिया कि किसी को नहीं बताना हम दोनों जमुनिहाई से रात्रि में ही वापस मानिकपुर संस्थान में आये और घटना की जानकारी गोपाल भाई को दी उनके द्वारा दिये गये हिम्मत एवं साहस से हम रुके नहीं आगे बढ़ते गये। एक बार संस्थान में यह हुआ कि टीम बनाकर क्षेत्रशः पदयात्रा करनी है लोगों को उनकी हक़दारी हेतु जागरूक करना है साहस और हिम्मत बंधाना है, संगठन क्या है इसकी ताक़त क्या है लोगों को बताना है। एक क्षेत्र का नेतृत्व मैं कर रहा था। आठ की संख्या में टीम थी उस समय क्षेत्र में डकैतों की संख्या भी बहुत थी। ददुआ गैंग, राधे गैंग, सूरजभान गैंग, गंगा कोल गैंग, मोस्तरी यादव गैंग प्रमुख थे। उस समय संस्थान का काम ग़रीबों की सहायता करना था और ददुआ गैंग भी ग़रीबों के मसीहा के रुप में उभरा था उस समय ददुआ एवं डकैत कोई भी राजनीतिक स्तर पर दखलंदाजी नहीं करते थे इसलिए संस्थान को उसी डकैत क्षेत्र में काम करने में दिक्कत नहीं होती थी। इसमें मैं बताना चाहता हूँ कि हम सन् 1989–90 में सुबह से रात्रि 10 बजे तक गाँव में जाते थे गाँव में घुसते ही नारे लगाते थे *'संगठन में शक्ति है, सारी दुनिया झुकती है,' 'कमाने वाला खायेगा, लूटने वाला जायेगा,' नया जमाना आयेगा, खूब सहा है, अब न सहेंगे, अपना हक हम ले के रहेंगे* कहते हुए सकरौंहा गाँव में घुसे उस गाँव में पहले से ही ददुआ गैंग की पंचायत प्राथमिक विद्यालय के बगल से पीपल के पेड़ के नीचे लगी थी तमाम सारी हस्तियाँ वहाँ मौजूद थी, हमारी आवाज उनके कान तक पहुंची तो गैंग के कुछ लोग हमारे सामने आये बन्दूके तानी लेकिन गाँव वालों को हमारे पक्ष में खड़ा देखकर भाग खड़े हुए। यह सब गोपाल भाई की जनसेवा की अनकही उपलब्धियाँ हैं।

# सामाजिक, सांस्कृतिक क्रान्ति के जननायक गोपाल भाई

● चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'
**से.नि. प्राध्यापक, समाज चिंतक,**
**सुप्रसिद्ध साहित्यकार**
**बांदा उ.प्र.**

*(साहित्य में बुन्देलखण्ड की संवेदनशील, प्रमाणिक आवाज़। जिनसे देश के तमाम सिरजनहार अनुप्राणित होते हैं। वाणी से कविताएं तो झरने के मानिंद झरती हैं। –सं.)*

*सौ सौ बार नमन करते हैं*
*उस पाठा के गांधी को।*

तुलसी और रहीम की धरती चित्रकूट में कबीरी राग जगाने वाले, पाठा की धरती की प्यास बुझाने वाले, आदिवासियों की अस्मिता को अभय प्रदान करने वाले, 'लोकलय' के माध्यम से लोक विधाओं को संरक्षण देने वाले 'गोपाल भाई' पाठा के गांधी के नाम से जन–जन में चर्चित, लोकमानस 'पिताजी' के संबोधन से अभिनंदित हैं।

चार दशकों से अधिक समय से अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के संस्थापक गोपाल जी समग्र सामाजिक क्रान्ति के जननायक है। संस्कार–गीतों से जन–संस्कृति का निर्माण करते हैं। कविताओं से संवेदनाओं को सरलीकृत करते हैं और रस साधरणीकरण के नये मानकों का निर्माण करते हैं। उनकी कविताओं में जन सामान्य का यथार्थ बिम्बों में उतरकर आचरण की ओर से चलने में सहायक होता है। मुझे याद आती है उस कवि सम्मेलन की जिसमें चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्याय के पूर्व कुलपति, लोकसेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी0के0 पाण्डेय जी विशिष्ट अतिथि के रुप में और मुझे कवि सम्मेलन के अध्यक्ष के रुप में चित्रकूट में बुलाया गया। कवियों के मध्य गोपाल जी से कविता पढ़ने का अनुरोध किया गया। गोपाल जी ने **जाड़े की रात** में ठिठुरते हुए निर्धन मजदूरों के जीवन' का मर्मस्पर्शी यथार्थ चित्रण करके उच्चकोटि की संवेदना को साकार कर दिया। गोपाल भाई की कविता की पंक्तियाँ याद आती हैं जो इस प्रकार हैं –

**''ऐसे कैसे कटिहैं ठिठुरन भरी रातें, सुखिया, सुकुरुवा की सूख रही आतें''** उनकी कविता को सुनकर मैंने जो टिप्पणी की थी

वह इस प्रकार थी – एक ऐसी कविता जिसमें महाकाव्य की शक्ति पैदा हो जाती है, एक ऐसी कविता जिसमें प्रेमचन्द्र का रचना संसार साकार हो उठता है। गोपाल भाई की कविता सुनकर राष्ट्रकवि पं0 सोहनलाल द्विवेदी जी की

*'है अपना हिन्दुस्तान वहाँ वह बसा हमारे गाँवों में,*
*सोने चांदी का नाम न लो फूले कांसे के कड़े छड़े।*
*मिल जाये बहुरानी को तो समझो उनके सौभाग्य बड़े।*

की पंक्तियाँ जाग उठती है। गोपाल भाई की कविताओं में एक महान कवि की संभावनाएं दिखाई पड़ती है। मेरी इस टिप्पणी का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। गोपाल भाई की रचनाशीलता, कर्मशीलता, सामाजिक समरसता, आदिवासियों के प्रति उनकी पीड़ा, पाठा के लिए उनका समर्पण सभी उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के भीतर एकीकृत हो गए हैं।

गोपाल भाई की लोक–कलाओं के प्रति गहरी अभिरुचि, आंचलिक संस्कृति के प्रति उनका गहरा तादात्म्य उनकी उदात्त मनोवृत्ति का परिचायक है। लोकलय समारोह का विशाल जन–मंच भुलाए नहीं भूलता। मंच में पगड़ी बांधे हुए किसान का एक चित्र जो हाथों में हल को पकड़े हुए कृषि संस्कृति को जीवन्त कर रहा है, जिसे देखकर मेरे आशुकवित्व की पंक्तियाँ बरबस फूट पड़ी–

*"सिर पर पगड़ी बांधे, हाथों में हल लिए किसान है*
*ललित लोकलय में डूबा यह अपना हिन्दुस्तान है।"*

कला ही ईश्वर है। कलाओं के आधार पर ही अवतारों का अवतरण होता है। 'लोकलय' के माध्यम से गोपाल–संस्कृति का अवतरण गोपाल भाई के द्वारा चित्रकूट की धरती को धन्य और कृतार्थ करेगा। अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध सामाजिक कार्यकर्ता डॉ0 राजेश टण्डन ने कहा 'गोपाल भाई लोकलय के माध्यम से पर्यावरण में बदलाव के लिए एक नई गाथा रच रहे हैं।' पाठा क्षेत्र की बूटीबाई की मधुर लय–तान, मृदंगाचार्य अवधेश द्विवेदी की शिवतांडव मुद्राएं और ताल संगीताचार्य पं0 लल्लूराम शुक्ल की ईसुरी की फागें सुनकर वनवासियों, आदिवासियों के साथ जिस रस की अनुभूति होती है उसे वाणी से व्यक्त करना कठिन है। लोक विधाओं में लमटेरा, आल्हा, कुम्हरई, अचरी, कोलहाई, फाग, कबीरी, छठी, नौटंकी, तम्बूरा गायन, जवारा नृत्य, सोहर, बधाई, डण्डा पाई सभी कुछ लोककलाओं को जीवंत करते हैं। लोक कलाओं में स्थानीय रंगो और माटी की गंधों की निराली छटा दिखाई पड़ती है –

*'सजना मानो मेरी बात, बेंदी बांदा की लै अइयो'*

सुनकर बांदा की 'बेंदी' अपनी आंचलिक संस्कृति को सौभाग्यवंत कर देती है। गोपाल भाई प्रकृति के माध्यम से मनुष्य को रोगों से छुटकारा दिलाते हैं, अलसी, आंवला से ग्राम्य जीवन में आरोग्य का मंत्र जगाते हैं। पाठा क्षेत्र को दस्यु मुक्त करने में डॉ0 सुब्बाराव के साथ साहस पूर्वक जंगलों में घूमते हैं,

*"मानिकपुर के घने जंगलों की जो आग बुझाता है।*
*वह गोपाल दिगंबर होकर राग कबीरी गाता है।।*

गोपाल भाई मेरी काव्य चेतना के अवचेतन में प्रवेश कर जाते हैं। जब मैं होली गीत लिखता हूँ तो मुझे पाठा की सामाजिक, सांस्कृतिक क्रान्ति के जननायक गोपाल भाई याद आते हैं –

*वनवासियों के गालों में गुलाल मलती*
*कोलुहा के जंगलों में ये चिढार आ गई।*
*ताल–ताल में गोपाल, भौंरा ताल में गोपाल*
*बनमाल में गोपाल की चौपाल आ गई।*
*खेत खलिहान वाली सरकार आ गयी।*
*बरसाने वाली होली लठ्ठमार आ गई।*

मुझे याद आता है एक ऐसा प्रसंग जिसमें गोपाल भाई का पाठा पर केन्द्रित कार्यक्रम का आमंत्रण मिला, मेरे अत्यन्त आत्मीय साहित्यकार, पत्रकार सत्यनारायण मिश्र आए। उन्होंने गोपाल भाई के लिए 'पाठा' पर एक कविता लिखने का आग्रह किया। मैने गोपाल भाई का स्मरण किया, 'पाठा' पर एक कविता लिखी –

*ये पाठा के कोल*
*प्यास भरा इतिहास है इनका भूख भरा भूगोल।*
*खसम मरै गगरी न फूटै, घटै न भौंरा ताल।*
*तैर रहे हैं फटी–फटी आँखों में जले सवाल।*
*बादल बरसै नदी किनारे, तरसै कोल मवइया।*
*बिन पानी सब सून, जवानी हा दइया हा मइया।*
*कीचड़ भरे पथरकुंडा मा, तीरथ सातों सागर।*
*सने पाँव माटी में धंसै कोलनी गागर।*
*सरकारी अनुदान हो गया, गोल ढोल में पोल।*
*ये पाठा के कोल।*
*शीश धरे हैं सेज्ह, धवा, तेन्दू, महुआ के जंगल।*
*उलझे केश फुलेल तेल बिन माटी बन गई संदल।*
*फूले फले अचार विजन बन, तेन्दू और झरबेरिया।*
*टके–टके माँ बिकै बिचारी, बंधुवा की छोकरिया।*
*नंगा नाचै नाच, दनादन मुच्छ दुनाली खोल।*
*ये पाठा के कोल*

कविता भाई सत्यनारायण मिश्र द्वारा गोपाल भाई को मिली। उन्होंने समाज सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तिका में इसे छापा, जहाँ कहीं गए, उसे गाया, दुहराया, आज वह पंक्ति पाठा का जनगीत बन गया है। डॉ0 काशी प्रसाद मिश्र जी ने जल संस्कृति पर पुस्तक लिखी उसमें पाठा के कोल गीत का उद्धरण दिया। जल संस्कृति पर केन्द्रित कई शोध प्रबन्धों में इस गीत की चर्चा हुई। गोपाल भाई का पारखी मन और पारसी व्यक्तित्व ही ऐसा है जो कविता को कालजयी बना देता है। पाठा के पठारी जीवन को जनमुक्ति और स्वाधीनता

दिलाने में बंधुआ मज़दूरों को हिंसा और आतंक से बचाकर बहन–बेटियों और माताओं के जीवन में नए अरुणोदय, सर्वोदय के लिए एक जुझारु व्यक्तित्व एवं जल, जोरू, ज़मीन और जंगल की संरक्षा के लिए पाठा की हर आंधी से टकराने वाले पाठा के गांधी को कोटि–कोटि नमन, वंदन और अभिनन्दन अर्पित करते हुए जिस सुख की अनुभूति हो रही है वह अनिर्वचीय है,

*जिसने रोक दिया पाठा की हर आतंकी आंधी को।*
*सौ सौ बार नमन करते हैं उस पाठा के गांधी को।।*

●●●

## love you Pitajee

How would you call the one who has the unique capacity of always putting you back on the road of your heart ? With consistency, Grace and Love. Would you call him a father ? A teatcher ? A friend? A Guru? A model ? A baba ?"Well, here we name him Pitajee, and he is all of the above mentioned. "My immense gratitude to the Universe to have guide me on my journey to your side." I love you Pitajee.

Delphine Auclair (Meenakshi)
Social Activist
"Paris" - france

# 'पिताजी' कड़ी धूप में छांव लगते हैं

● प्रणीता-आशीष श्रीवास्तव

होशंगाबाद, म.प्र.

आदरणीय पिताजी के बारे में उनके व्यक्तित्व के बारे में कुछ कहूँ, तो समझ नहीं आता कि शुरू कहाँ से करूँ। पिताजी हमारे जीवन में कड़ी धूप के बीच सघन पेड़ की छाँव बनकर आये। मेरी माँ तीन बच्चियों को लेकर जीवन संघर्ष में अकेली थी तब पिताजी के सहयोग ने हमारे जीवन को संवारा। अकेली महिला के लिए समाज में संघर्ष बहुत हैं। इन सब के बीच पिता जी के सहयोग ने हम सब को जीवन के प्रति नयी उम्मीद व नया नज़रिया दिया। उत्साह भरी राह दिखाई। पिताजी के सामाजिक कार्य की भावना से हमें व्यक्तिगत जीवन में भी बहुत प्रेरणा मिली। मन ऐसी दिशा में मुड़ा जहाँ समाज के शोषित व दलित वर्ग के प्रति एक संवेदनशीलता का आभास हुआ। समाज के प्रति ऐसा एक उदार रवैया पिताजी के सम्पर्क में आने से ही विकसित हुआ। मैं अपनी वैयक्तिक सामाजिक विकास के लिए पिता जी को ही स्रोत मानती हूँ। पिताजी सिर्फ मेरे लिए ही नहीं बल्कि कईयों के प्रेरणास्रोत हैं।

# हमार गोपाल भाई

**राजाभइया सिंह**
**समाज चिन्तक, शिक्षाविद्**
**अतर्रा-बांदा**

*(शिक्षा की ज्योति जलाने में गोपाल भाई के आरम्भ से ही सहयोगी रहे। सहोदर जैसा भ्रात प्रेम मिला। कोई भी काम कभी भी एक–दूजे के बिना नहीं होते। रिश्तों की प्रगाढ़ता अतुल्य है। –सं.)*

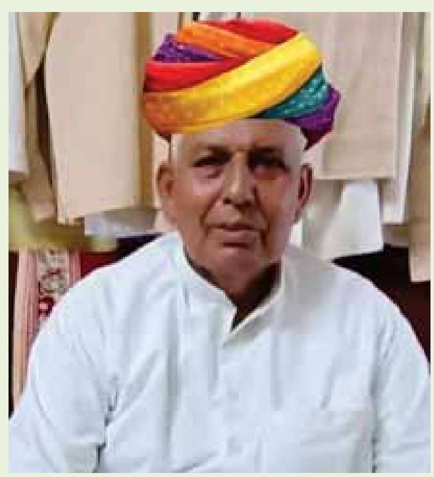

मैं पहली बार गया प्रसाद गोपाल के सम्पर्क में सन् 1966–67 में आया। उस समय मैं राजेन्द्र शिशु मंदिर कर्वी (बांदा) में आचार्य के नाते शिक्षण कार्य कर रहा था। मेरे प्रधानाचार्य श्री गोपी प्रसाद शुक्ल थे। वह अतर्रा में स्व0 जगवीर सिंह, डॉ0 स्व0 कमलाकान्त पाण्डेय तथा रणजीत सिंह से जुड़े हुये थे। कर्वी में गोपी प्रसाद शुक्ल से कुछ लोगों से विवाद हुआ तो चारो महानुभाव शुक्ल जी का विवाद शान्त कराने आये।

जगवीर सिंह ने परिचय सत्र में जाना कि मैं मूलरुप से अतर्रा का स्थायी निवासी हूँ तो उन्होंने कहा जून में अतर्रा आकर मुझसे भेंट करना। उस समय जगवीर सिंह आदर्श बाल निकेतन अतर्रा के प्रबन्धक थे। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने मुझे आचार्य/अध्यापक के रुप में नियुक्ति पत्र दे दिया। श्री गोपाल जी आर्दश बाल निकेतन अतर्रा के प्रधानाचार्य थे। उनके संरक्षण में मैंने 5 वर्ष तक सेवा की इसी बीच मेरा तथा गोपाल जी का चयन बी0एड0 में पं0 जवाहर लाल नेहरु डिग्री कालेज, बांदा में हुआ। हम दोनों ने बांदा से डिग्री ली।

**कार्य के प्रति लगनशीलता :**

प्रारम्भिक दिनों में आदर्श बाल निकेतन अतर्रा गढ़ीगंज में किराये के मकान में संचालित था। अतर्रा नरैनी तहसील के अन्तर्गत आता था। परगना अधिकारी नरैनी मुख्य अतिथि के रुप में आदर्श बाल निकेतन अतर्रा के वार्षिक उत्सव में आने वाले थे। गोपाल जी भवन की सफाई तथा दरबाजों की मरम्मत कार्य को देख रहे थे। दक्षिण दिशा के दरबाजे के बाहर एक बड़ी सी गड़ाही थी जिसमें पानी एकत्र हो जाया करता था। कूड़ा–करकट तलहटी में होने से बदबू भी देने लगता था। गोपाल जी

उस दरबाजे का निरीक्षण कर रहे थे कि इसे बन्द रखा जाये जिससे बदबू अन्दर न आये। गोपाल जी अकेले निरीक्षण कर रहे थे। निरीक्षण के दौरान वहाँ बैठे पनिहा सांप ने श्री गोपाल जी को काट लिया, गोपाल जी ने अपनी जानकारी अनुसार प्राथमिक चिकित्सा कर लिया। कार्यक्रम विधिवत सम्पन्न हो गया तब बताया कि मुझे यहाँ सर्प ने काट लिया था। तत्काल चिकित्सक को दिखाकर उनका इलाज कराया गया।

**आकस्मिक घटना :**

आदर्श बाल निकेतन अतर्रा का भवन निर्माण कार्य चल रहा था, कमरे बनकर तैयार नहीं हो पाये थे इसलिए हम कमरों के बाहर मैदान में तम्बू के नीचे सोया करते थे। जाड़े का मौसम, खुले आसमान के नीचे तम्बू में सोना। तम्बू के अन्दर दो तखत पड़े थे। एक में मैं और एक में गोपाल जी सोया करते थे। ठण्डी से बचने के लिए हम दोनों तखत के नीचे धान की सूखी भूसी डलवा लिया करते थे और उसमें सोने के एक दो घण्टे पूर्व आग लगवा देते थे जिसमें वह भूसी अच्छी तरह जल जाये और टेण्ट का तापमान गरम रहे। इस कार्य को पूरा कर हम दोनों अपने–अपने तखत में सोने लगे, आधी रात को गोपाल जी ने मुझे जगाया कहा कि मेरा तो गद्दा जल गया और मेरी त्वचा भी झुलस गयी है। जांच करने पर पता चला कि लगाई गई भूसी की आग से पहले तखत बाद में गद्दा जला। इस प्रकार ईश्वर की कृपा से एक बड़ी दुर्घटना टल गई।

**काला गाउन पहनाया :**

सन् 1966–67 में प्राथमिक कक्षाओं की पढ़ाई कापी पेन्सिल से नहीं होती थी, उस समय लकड़ी पाटी तथा बोरका के माध्यम से कलम से होती थी। मेरा लेखन गोपाल जी को अच्छा लगा तो उन्होंने मुझे कक्षा प्रथम का कक्षाचार्य बना दिया। कहा कि प्रारम्भिक लिखावट ठीक रहेगी तो छात्र का सुलेख अच्छा रहेगा।

उस समय आचार्यों का वेश सफेद कुर्ता, धोती था। कक्षा प्रथम के छात्र अपनी काली पुती हुई सूखी पाटी को लाकर कभी मेज तो कभी मेरे ऊपर ही रख देते थे इस प्रकार मेरे कुर्ता, धोती प्रतिदिन काले पड़ जाते थे। मुझे प्रतिदिन धोना पड़ता था। इस व्यथा को जब मैने गोपाल जी को बताया तो उन्होने बड़ा सा काला गाउन सिलवा दिया और उसे कक्षा में टंगवा दिया और कहा जब आप इस क्लास में आयें तो इसे पहन लिया करें।

जून 1972 में बी0एड0 की उपाधि मिली। ब्रम्हा विज्ञान इण्टर कालेज अतर्रा में सहायक अध्यापकों की आवश्यकता है का विज्ञापन निकला मैने भाई साहब (गोपाल जी) से इस कालेज में कार्य करने की अनुमति मांगी, उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी और उन्होंने मेरी नियुक्ति तत्कालीन प्रबन्धक श्रीमान स्व0 जगपत सिंह से कहकर करवा दी और मैंने 1972 से लेकर 2009 तक वहाँ सेवाएं दी। सन् 2009 की 30 जून को सेवा निवृत्त हो गया। तब से लेकर अध्यावधि मेरे अग्रज तथा संरक्षकत्व का पूर्ण निर्वहन कर रहे हैं। मेरे संघर्षो का निराकरण हमेशा करते रहते हैं। मैं समाज में जो कुछ भी हूँ गोपाल जी के सहयोग से हूँ। मैं हमेशा उनका ऋणी रहूँगा।

# स्वैच्छिक जगत के प्रेरणास्रोत गोपाल भाई


**अशोक भाई**

**सहभागी शिक्षण केन्द्र, लखनऊ**


*(सुपरचित, सामाजिक प्रेरक, मार्गदर्शक। समाज के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं की नई पीढ़ी को रच–गढ़ रहे हैं। –सं.)*

वर्ष 1989 में जब मैं गुजरात से उत्तर प्रदेश की कुछ संस्थाओं के भ्रमण के लिए आया तो प्रदेश के कई जनपदों के लगभग 17 से अधिक संस्थाओं में गया। इन संगठनों का कार्य देखा, उनसे बातें की तथा उनके कार्य कठिनाइयों को जाना। इस भ्रमण के फलस्वरूप सहभागी शिक्षण केन्द्र की भावी कार्ययोजना, स्वरूप एवं ज़मीनी स्तर पर कार्यरत संस्थाओं को मजबूती के प्रयास जैसे भावी कार्य की रूपरेखा निर्धारित हुई। इसी दौरान पहली बार मानिकपुर में गोपाल भाई से मुलाकात हुई। स्वैच्छिक संगठनों की स्थिति पर उनसे खूब बातें हुई।

ग्राम विकास प्रबंधन की डिग्री के भाव से ओतप्रोत होकर मानिकपुर में जब मैं गोपाल भाई से मिला, उनके अनुभव सुने, उनकी कार्ययोजना को समझा तब लगा कि ग्रामीण प्रबंधन का मेरा ज्ञान अब पूरा हुआ। उनका कार्य के प्रति लगाव, कार्यों में उत्साह एवं नौजवान पीढ़ी को एक सकारात्मक दिशा देने का उनका प्रयास देखकर मुझे अपने कार्य की दिशा मिली। इस मुलाकात के बाद मुझे जब भी मौका मिलता मै चित्रकूट जाता और उनके विचारों एवं ग्रामीण विकास की अवधारणा से अपना ज्ञानार्जन करता रहा। गोपाल जी हमेशा इस बात पर जोर देते

रहे कि सामाजिक कार्यों में आहुति देने वाले युवाओं का कार्यकर्ता के रूप से निर्माण नहीं हो रहा है। वे लगातार इस चिन्तन को सहभागी बोर्ड की बैठकों में भी उठाते रहते एवं इसे करने की प्रेरणा भी देते थे। उन्हीं की प्रेरणा से हम लोगों ने एक तीन महीने के पाठ्यक्रम की शुरुआत की। यह कार्यक्रम ग्रामीण परिवेश से आये युवकों एवं युवतियों के लिये था जो प्रशिक्षण उपरांत ग्राम्य स्तर पर सामुदायिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने में प्रेरित एवं दक्ष होते थे। धीरे–धीरे इस प्रशिक्षण से निकले युवाओं को स्वैच्छिक संगठनों में स्थान मिलने लगा एवं उनकी कार्यकुशलता तथा ग्रामीण विषमताओं की प्रबंधन क्षमता की प्रशंसा होने लगी। आगे चलकर यह कार्यक्रम महिला कार्यकर्ताओं को तैयार करने में भी अत्यंत प्रभावी रहा। इस कार्यक्रम की सोच एवं इसकी अवधारणा में गोपालभाई की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। वे नियमित रूप से इस कार्यक्रम में आकर अपना अति मूल्यवान समय एक संदर्भ व्यक्ति के रूप में देते रहे।

एक और अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान **'उपवन'** के गठन में भी उनका रहा। उन्होंने ही यह महसूस किया कि उत्तर प्रदेश में स्वैच्छिक संस्थायें विखरी हैं एवं एक सामूहिक आवाज़ के अभाव में व्यापक बदलाव में हम असमर्थ दिखते हैं। उन्हीं की प्रेरणा, सहयोग एवं मार्गदर्शन से उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश वॉलेण्टरी एक्शन नेटवर्क ''उपवन'' की स्थापना हुई एवं उनकी अध्यक्षता में उपवन ने उ.प्र. में एक प्रभावशाली नेटवर्क की भूमिका निभाई।

83 वर्ष की आयु में श्री गोपाल भाई आज भी उसी उर्जा एवं उत्साह से सामाजिक कार्यों में जुड़े हैं जैसा मैंने वर्ष 1989 में देखा था। भगवान से प्रार्थना है कि गोपाल भाई शरीर से स्वस्थ रहें, सामाजिक जगत के साथियों को प्रेरित करते रहें एवं सामाकजिक विशमताओं से जूझने वाले साथियों को निरंतर उर्जावान बनाते रहें।

## माँ जैसी ममता है उनमें

**अंशिता**

**सामाजिक कार्यकत्री**
**सिवनी, म.प्र.**

पिता समान संरक्षक, माँ की ममता लिए हुए कोमल व उदार हृदय और एक अच्छे मित्र के रुप में। ऐसे अपने आप में सम्पूर्ण जीवन्त व्यक्तित्व हैं, पूज्यनीय ''गोपाल भाई''। जब मैं साक्षात्कार के लिए संस्थान परिवार में आयी और मैं उनके साथ पाठा भ्रमण में गई, मैंने देखा क्षेत्र के लोगों में इतनी अधिक लोकप्रियता हैं उनकी। लोगों के हृदय में वास करने वाले व सबके संरक्षक ''पिताजी'' जो वास्तव में सबके पिताजी हैं। सचमुच मैंने उस दिन एक अलग संसार देखा, 'प्यार का संसार'। मैंने देखा लोग अपने ईष्ट के रुप में देखते हैं उनको। मैं अत्यन्त प्रभावित हुई मैंने पहली बार ऐसा व्यक्तित्व देखा था कि प्रत्येक व्यक्ति कितना लगाव रखता है उनसे। मैं सच कहूँ ABP गंगा न्यूज चैनल में, ''क्या बात है'' के माध्यम से पिताजी की जो जीवन यात्रा दिखाई गई है, वास्तव में मैं उससे भी कहीं अधिक पाती हूँ व देखती हूँ। ऐसे महान व्यक्तित्व का हृदय से सम्मान करती हूँ।

# साधक समाज के...

रीना सिंह 'रश्मि'
कवियत्री, सामाजिक कार्यकत्री
शिव, बांदा

*(कविता विरासत में मिली 'ओज' मूल स्वर हैं। कविता का ठाठ प्रभावी, पाठ और ज्यादा प्रभावी रहता है। सुनकर लगता है साहित्य इनकी प्रतीक्षा में है। –सं.)*

आराधक–साधक समाज के, हर हिरदय अनुपम प्रभाव है,
वन्दनीय है शब्दशक्ति, अभिनन्दनीय संयत स्वभाव है।
आँखों मे अन्त्योदय का ले, स्वप्न सदा चलते अविराम,
भरी हृदय में है विशालता, क्षणिक नहीं करते विश्राम ।
अंतिम जन को समाधान, और बिन सिसकी के न्याय मिले,
आँगन की खुशी कभी न झुलसे, झूठ और अन्याय तले।
गरिमा पूरित गाँव गली हित, सतत् मिटाते भेदभाव है,
वन्दनीय है शब्द शक्ति ........
बंजरता में बीज सृजन का, रोपण करके किया हरा है,
जन के परम हितैषी हैं ये, जनमन में विश्वास भरा है।
अन्तः मन में बीत रही, सब अपनी पीर बताते हैं,
मन के दुर्गम कोने की, गठरी भी खोल दिखाते हैं।
गहरे सागर सम संवेदी, अन्र्तमन में नेकभाव है,
वन्दनीय है शब्द शक्ति ........
पथ की बाधाओं से क्षणभर भी, कभी नहीं घबराते हैं,
कर्मभूमि के विकट विध्न को, सहज भाव से अपनाते हैं।
मेघ उलझनों के छँट जाते, देख दिव्यता कर्मवीर की,
संकट पर संकट छा जाते, देख भव्यता मर्मवीर की।
सत्पथ पर ही चलने वाला, दृढ़ संकल्पित एक भाव है,
वन्दनीय है शब्द शक्ति ........
लोकलयी हैं लोकविधा के, संरक्षण में अति लगाव है,
लोक कलाकर्मी की प्रतिष्ठा, के प्रति अद्‌भुत प्रेमभाव है।
हर प्रतिभा के मान और सम्मान हेतु, नित निरत गल रहे,
प्रेरित करने हेतु प्रेरणा–पुंज, दीप से सतत् जल रहे।
शैल–चित्र साहित्यिक वैभव, कीर्ति बिखेरे अखिल भाव है,
वन्दनीय है शब्द शक्ति ........
व्यर्थ चिटक जाये न जीवन, नव यौवन को जगना होगा,
मानवता हित चलते रहकर, भरे ताप में तपना होगा।
बिखरेगी जब 'रश्मि' ज्ञान की, हर दिन नवअंकुर फूटेगा,
बहे ज्ञान गंगा वसुधा में, श्रम से सारा तम टूटेगा।
नव निर्माण करे तरुणाई, शक्ति साधको को सुझाव है,
वन्दनीय है शब्द शक्ति ........

# थकान नहीं दिखाई देती उनके चेहरे पर

**नंदिता पाठक**
**प्रख्यात सामाजिक कार्यकत्री,**
**चित्रकूट**

*(भारत रत्न नानाजी देशमुख की सुयोग्य, प्रखर पुत्री के रुप में पहचान। ग्रामोदय के लिए जीवन प्रतिबद्ध है। राजनैतिक जगत की भी बड़ी सम्भावना हैं। –सं.)*

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की छत्र छाया में पलते हैं, बढ़ते हैं, ऐसे व्यक्ति कहीं पर भी रहें वे राष्ट्र भक्ति, व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण के प्रति अपनी जिम्मेदारी कभी नहीं भूलते, कितने भी संकट क्यों न आए कभी टूटकर नहीं बिखरते। ऐसे ही प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं गया प्रसाद गोपाल 'भाई जी' वे अपनें जीवन के 83 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं लेकिन उनका युवा हृदय धड़कन के साथ नित नए प्रयोगों में व्यस्त और मस्त रहना देखकर स्फूर्ति मिलती है। एक स्वयंसेवक को अपना दायित्व निभानें के लिए कभी उम्र आड़े नहीं आती यह हमनें बहुत करीबी से देखा। भारत रत्न नानाजी देशमुख जी से अनुभव भी किया फिर अब वही गोपाल भाई जी में देख रहे हैं। प्रभु की दया से हमें चित्रकूट में श्रद्धेय नानाजी देशमुख जी का सानिध्य डेढ़ दशक से भी अधिक समय तक प्राप्त हुआ नानाजी नें हमारा परिचय गोपाल भाई जी से कराया, तब हमनें भाई जी को जाना–पहचाना, पहली बार उनके आश्रम में मिलना हुआ उनकी निश्छल हँसी से हम प्रभावित हुए साथ ही उनके द्वारा पिछड़े एवं अभावग्रस्त क्षेत्र के युवाओं को दिये जा रहे शिक्षण प्रशिक्षण नें हमें बहुत आकर्षित किया। गोपाल भाई जी नें बुन्देलखण्ड चित्रकूट के पाठा क्षेत्र के लोगों की खुशहाली के लिए जो प्रयत्न किये हैं वे अविस्मरणीय हैं। भाई जी का चिंतन हमेशा समाजोपयोगी कार्यों में ही रहता है। सबसे खास बात है कि बुंदेलखण्ड की संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने के लिए सम्पूर्ण देश के विद्वानों को बुंदेलखण्ड के कलाकारों से जोड़ना, कार्यक्रम करना, संचालन करना, संकलन करना उनके उत्साह को बढ़ाना अद्भुत है। 'लोक–लय' कार्यक्रम की रचना से लेकर कार्यक्रम समापन तक स्वयं रुचि लेते हुए कार्यक्रम सम्पन्न कराना मन को भाता है। बुंदेलखण्ड के कलाकारों को बड़े–बड़े मंच उपलब्ध कराकर बुंदेलखण्ड का नाम रोशन करने में गोपाल भाई जी का बहुत बड़ा योगदान है क्योंकि वे स्वयं गीतकार, गायक, साहित्यकार एवं लेखक हैं उनमें एक संवेदनशील व्यक्तित्व होनें के कारण हर गतिविधि में सुर, लय, ताल की त्रिवेणी का मेल अनुभव कर सकते हैं। गोपाल भाई जी का जीवन स्वदेशी विचार धारा से ओत प्रोत है वे अपना पूरा समय समाज के उत्थान में लगाते हैं वनवासियों को ग्रामवासियों को 'स्व' की पहिचान कराते हैं, हमनें कभी उनके चेहरे पर थकान नहीं देखी। भाई जी ने यह ठाना है कि बुंदेलखंड में समाज सेवियों की

कमी नहीं पड़ेगी इसलिए उन्होंने पूरे बुंदेलखंड में अलग–अलग छोटी–बड़ी संस्थाओं के साथ मिलकर युवा समाज सेवियों को साथ लेकर जल संरक्षण, प्राकृतिक खेती, उन्नत किस्म के देशी पशु पालन, किसानों की आय में वृद्धि, महिलाओं का फेडरेशन बनाना, स्वयं सहायता समूहों का गठन, भारतीय परम्पराओं का संरक्षण संवर्धन, वृक्षारोपण जैसे सामाजिक कार्यों के माध्यम से युवा समाज सेवियों के अंदर समाज सेवा की अलख जगाई। हम उन्हें हमेशा अपने परिवार के संरक्षक के रूप में देखते आए हैं ऐसे कर्मठ व्यक्तित्व का 83वाँ जन्मदिन हम सब हर्षोल्लास के साथ मना रहे हैं प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि वे आजीवन स्वस्थ रहते हुए अपनें जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर जीवेत शरदः शतम के विचार को सार्थक करें ।

*सुदिनम् सुदिनम् जन्मदिनम् । तव भवतु मंगलम जन्मदिनम्।।*

## हर विपदा सही 'पिताजी' के हर संघर्षों में साथ रही

● सरस्वती सोनी

**सामाजिक, राजनैतिक कार्यकत्री**

**महिला जागृति मण्डल, कर्वी**

*(सामंती ताकतों के जितने आघात गोपाल भाई ने सहे, हमले झेले, सहयोगी के रूप में सरस्वती जी ने भी वह सब सहा, बराबर के मोर्चे मोल लिए। विधवा, परित्यक्तों के लिए वे लगातार सक्रिय हैं)*

मेरा बचपन छात्रा के रुप में आदरणीय गोपाल भाई के सानिध्य में प्रारम्भ हुआ। गोपाल भाई आदर्श बाल निकेतन अतर्रा के प्रधानाचार्य थे। मेरे बड़े भाई उनके छात्र थे और वे 8वीं तक उनके संरक्षण में रहे। मुझे छात्रा के रूप में शिशु, प्रथम कक्षा में ही आचार्य जी (गोपाल जी) का स्नेह प्राप्त हुआ। मैं बड़ी हुई, विवाह हुआ तथा दुर्भाग्य से अकेली हो गई। साथ में दो पुत्रियों का दायित्व भी 25 वर्ष के पूर्व ही उठाना पड़ा।

वर्ष 1989 में नियति ने पुनः आचार्य जी से मिलाया। मैं अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के साथ जुड़ी। मेरी सामाजिक यात्रा उनके मार्गदर्शन में प्रारम्भ हुई। उनके सारे संघर्षों में मैं उनके साथ रही। मेरी बौद्धिक, नेतृत्व क्षमता का भरपूर विकास हुआ। कभी अकेले, कभी सबके साथ जंगल के सुदूर वनवासी गाँवों में जाने का अवसर मिलता रहा। परिस्थितियों ने निडर बनाया मैं आगे बढ़ती गई। प्रेरणा पाकर **''महिला जागृति मण्डल''** नामक संस्था का गठन भी हुआ। इस मण्डल के माध्यम से श्री गोपाल जी के स्नेहिल मार्गदर्शन में सपेरों के साथ शंकरगढ़ में काम किया। शंकरगढ़ में दबंग, दादुओं, राजनेताओं के आतंक का सामना करने में समर्थ बनी। आज मैं राजनैतिक जगत में भी अपनी उपस्थिति दे पा रही हूँ। अपनी दोनों पुत्रियों के बच्चों की नानी बनने का सुख भी भोग रही हूँ। आज सामाजिक, राजनैतिक जीवन मेरा सुख बन गया है। जब मैं अपना अतीत झांकती हूँ तो उस समय मुझे मेरे पूर्व आचार्य जी सामने खड़े दिखाई पड़ते हैं। दीर्घायु स्वस्थ्य आयु की कामना करती हूँ।

# जो भी मिला उन्हीं का हो गया

**नन्दलाल कोल**
**सामाजिक कार्यकर्ता**
**मानिकपुर**

*(बंधुवा कोल परिवा के नंदलाल को जब गोपाल भाई जी का संबल मिला तो इण्टर कॉलेज में इकलौते छात्र के रूप में दिखे। लोकप्रियता बढ़ी तो गांव ने प्रधान बना दिया। बच्चे उच्च शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं, सुखद है। –सं.)*

मैं बहुत दिनों से सोच रहा था कि कुछ लिखूँ, मैंने जो सामाजिक जीवन में अनुभव प्राप्त किया हैं उसे समाज में बाँटे। मेरे माता–पिता बंधुवा मजदूर थे। अपनी हैसियत से ज्यादा मेरे लिए परिश्रम करते लेकिन पेट भर भोजन करने के सिवाय कुछ नहीं हो रहा था। निराश होकर मेरी माता जी ने कहा बेटा मैं थक गयी हूँ, अब पढ़ाई छोड़कर हमारी आजीविका में मदद करो, लेकिन मुझे पढ़ने का बहुत जुनून था। मेरे प्रिय मित्र भीम भाई मुझे पढ़ने के लिए हमेशा प्रोत्साहित करते थे। मानिकपुर ब्लॉक में एक विशाल धरना प्रदर्शन था, उस समय मैं दसवीं में पढ़ रहा था। मैंने एक फरिश्ते को देखा जो मंच में एक गीत सुना रहे थे। *पाठा की तुम सुनो कहानी हम कोलों की बानी में सदियों से हम ठगे जा रहे थे, शबरी राम कहानी में।* वर्ष 1989–90 की घटना है मैं बस्ता लेकर वहां मौजूद था। थोड़ी देर बाद देखा कि सभी लोग पैदल कर्वी–चित्रकूट ज्ञापन देने एस.डी.एम. को चल दिये। मैं साथ में था। उनको ज्ञापन लेने हेतु मानिकपुर ब्लॉक में बुलाया गया था। समाचार मिला कि वह सरकारी मीटिंग में है, नहीं आ पायेंगे। हज़ारों की संख्या में सभी कोल भाई–बहन चल रहे थे कि अभी मानिकपुर से बरमबाबा तक ही पहुंचे थे कि एस.डी.एम. चित्रकूट मिल गये। पूरी जनता ने वहाँ से उन्हें पैदल चलने के लिये बाध्य किया। वे पैदल चल कर मानिकपुर ब्लॉक पहुंचकर ज्ञापन लिये।

मैं हाई स्कूल की कक्षा में इकलौता कोल छात्र था जो 125 छात्र–छात्राओं में कुल 22 बच्चे पास हुए थे। अब मुझे आगे की पढ़ाई के लिए पढ़ना था। मेरे माता–पिता पहले बता चुके थे। जाने कहां से मुझे प्रेरणा मिली कि मैं कोलों के मसीहा आदरणीय पिता जी (गोपाल भाई) से मिला और मैं अपनी आप बीती पूरी कथा बता दिया। उन्होंने कहा निश्चित रहो आगे की आपकी पढ़ाई चलेगी फिलहाल गांव जाओ और वहां अपने गांव के बच्चों को 1 घंटा पढ़ाओ, मैं राजी हो गया। इस प्रकार से मैं मई–जून (1990) में

गांव के बच्चों को पढ़ाया। जुलाई में इण्टर के प्रवेश हेतु पिता जी से मिला उन्होंने मुझे 200 रू0 दिये और कहा कि यदि आप आगे भी पढ़ाओगे तो हम आपको 200 रू0 प्रतिमाह पढ़ाई का सहयोग करेंगे। मुझे ऐसा लगा कि जैसे खज़ाना मिल गया हो। उतने में मैं इण्टर में प्रवेश लिया, उन्हीं पैसों से पुरानी किताबों को खरीद कर अपनी पढ़ाई जारी रखी। अब मै। खिचरी और उमरी, बेलहा के बच्चों को भी पढ़ाने लगा। माह जुलाई की बैठक में आदरणीय पिता जी ने कहा कि अपने गांव से एक जागरूक महिला को जोड़ लो जो भी सामाजिक कार्यों में रूचि रखती हो। शिक्षा की कोई बात नही है। तब मैं अपनी माता जी को बैठक में लाया। मेरी माता जी थीं सामाजिक परिवर्तन के मिशन में जुड़ गयीं इसके बदले में मेरी माता जी को भी 200 रू. मिले। इस प्रकार से हमारे घर में आदरणीय पिता जी के सहयोग से 400 रू0 प्रतिमाह आने लगा। मेरी पढ़ाई बिना रूकावट के चलती रही थी। आदरणीय पिता जी कभी–कभी मुझे रविवार को भी अपने पास बुलाने लगे। वे मुझे एक अच्छे गुरु की तरह पढ़ाई के गुण सिखाते और कोल समाज की गरीबी एवं समस्याओं के निदान तथा सामाजिक जीवन परिवर्तन की दिशा में संस्कार डालने लगे। मुझे घर से यहाँ अच्छा भोजन दाल–चावल, रोटी–सब्जी खाने को मिल जाती थी। यहाँ पाठा क्षेत्र में दादुओं, पुलिस और डाकुओं का उत्पीड़न चरम सीमा पर था। यदि मैं उस समय की समस्याओं, बुराईयों, कुरीतियों को याद करता हूँ तो रूह काँप जाती है। ऐसे बीहड़, वीरान, दुर्गम क्षेत्र को मनीषी समाज सेवियों के सिरमौर आदरणीय पिता जी (गोपाल भाई) गांधीवादी विचारधारा अहिंसक गतिविधियों को अपनी जान हथेली में रखकर निडर, धीर, गम्भीर, अडिग अपने मिशन को लेकर कुछ गिने–चुने साथियों के साथ पाठा के बीहड़ चुनौतीभरे क्षेत्र को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। शिक्षा, संगठन, समस्याओं से ग्रसित सर्वाधिक समाज से अलग–थलग पड़े कोल समाज में जा–जा करके समस्याओं को डटकर मुक़ाबला करने के लिए यहाँ के नौयुवकों की टीम बनायी। हज़ारों नवयुवकों–नवयुवतियों को अपनी विचारधारा से प्रेरित किया एक तरफ पुलिस का डंडा, दूसरी ओर डकैतों का आतंक, सामन्तशाहों का भय, अपना सम्पूर्ण जीवन कोलों के नाम कर दिया पिता जी को जहाँ तक मैं जानता हूँ कि उस समय आपका जीवन कब अन्त कर दिया जाय कोई ठिकाना नहीं वे भी निहत्थे साधरण कुर्ता पाजामा और एक झोला लेकर पैदल–पैदल चलकर घर–घर जाकर एकजुटता का संदेश दिया। उसी समय सारी शक्तियाँ एक तरफ हो गयीं चाहे यहाँ का दादू दबंग, पुलिस, डाकू, राजनेता, अफसरशाह और एक तरफ सामान्य सा दिखने वाला ग़रीबों का मसीहा, कब, कहाँ, कैसे, जान गवाँ बैठे कोई परवाह नहीं, जहाँ जान पर आ जाती है, वहाँ अच्छे–अच्छों का मन विचलित हो जाता है। कई तरह के कुचक्र चलाये जा रहे थे, धमकी भरे फोन, धमकी भरे पत्र आये लेकिन उनके उत्साह एवं अथक परिश्रम को कोई भी शक्ति उन्हें विचलित नहीं कर पाई। यहाँ के लोगों ने कभी भी अपने मन का प्रतिनिधि हो चाहे सांसद, विधायक, ब्लॉक प्रमुख प्रधान सभी डाकुओं, दादुओं के अधीन था। कहा जाता था *वोट पड़े हमारे साथी पर, नहीं गोली लगेगी छाती पर और लाश मिलेगी घाटी पर।*

आपने हमेशा निर्भय होकर मतदान करने को मतदाताओं को अनेक कार्यक्रम पोस्टर, बैनर, नारे के माध्यम से संदेश दिया। आपकी प्रेरणा से कई समाज सेवक जनप्रतिनिधि बने। खासकर मैं कोल साथियों की यहाँ पर चर्चा करूँगा। आत्म विकास प्रशिक्षण और नेतृत्व

विकास प्रशिक्षण पाकर चुनाव अपनी प्रतिभा का अच्छा प्रदर्शन किया, किशोरीलाल प्रधान टिकरिया 2 बार, बच्चालाल प्रधान मनगवां 2 बार, राजन भाई सरहट से, निही चरैया से सोनिया, मैं और मेरी पत्नी प्रधान पद आपके आर्शीवाद से बने। मेरी माताजी श्रीमती देवमतिया बीडीसी रहीं। जिला पंचायत सदस्य बूटी कोल, कुसुम डीडीसी बनी। आपने व्यक्ति निर्माण पर विषेश ध्यान दिया। शैक्षिणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, पर्यावरण ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा है जिसमें आपका ध्यान न गया हो, व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र निर्माण की हमेशा भावना रही है। आपके पास जो भी आया वह आपका हो गया ऐसी विलक्षण व्यक्तित्व के धनी रहे हैं, यहाँ तक कि देश–विदेश से लोगों ने आकर अपनी सेवायें दी हैं। ग्रामीण आंचल, शहरी कोई भी हो वह आपका हो गया है, दिल्ली, लखनऊ आदि कई शहरों से लोग आकर के आपकी प्रेरणा से सामाजिक परिवर्तन की धारा से जुड़े रहे। पत्रकार, डाक्टर, वकील, जज, सांसद, विधायक, मंत्रीगण, केन्द्रीय मंत्रीगण भी विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर छात्र–छात्रायें, समाज के सभी पहलुओं को छूने का अदम्य प्रयास रहा है।

आप समय के पक्के पालनकर्ता स्वयं रहे हैं। जब हम किसी भी प्रशिक्षण में आप के पास रहते तो एक सम्पूर्ण माडल (दिनचर्या) को पालन करने के लिए जिम्मेदारियाँ दी जाती रही हैं। जैसे प्रातः जागरण, नित्य क्रिया, शौच आदि फिर सामूहिक प्रार्थना, योगाभ्यास फिर प्रशिक्षण, बाद में परीक्षा चाहे जितना छोटा–बड़ा कार्यकर्ता होता सभी की लिखित परीक्षायें होती रही हैं। एक अच्छा व्यक्ति समाज को दे कि उसे सम्पूर्ण हर विधा का ध्यान रहे। स्वाध्याय स्वयं करते हैं तथा दूसरों को स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते आ रहे हैं। क्षेत्र के सभी गाँवों में लेखपालों की प्रशासन से टीमें बनाकर खसरा–खतौनी को आज़ादी के कई वर्षों बाद पढ़कर सुनाया गया था। जब खतौनी पढ़ी गयी तो गाँव के भूमिहीनों को पता चला कि उसके नाम पर भी जो पट्टा हुआ है वो कई–कई वर्षों गाँव के दबंगों द्वारा जोता–बोया जा रहा है। हम लोगों ने अध्ययन किया है कि भूमि की 17 तरह की समस्यायें हैं। भूमि पर कब्जा दख़ल, फर्जी विरासत, डबल इंट्री आदि। हजारों कोल परिवारों को अपनी भूमि पर कब्जा मिला है। यह कार्य बहुत बड़ा कार्य है। विभिन्न गंभीर मुद्दों को लेकर आमरण अनशन जहाँ तक मुझे याद है ब्लॉक स्तर से जिले स्तर तक एवं प्रदेश स्तर तक अहिंसात्मक रूप से 31 बार चलाया गया है। पाठा कोल अधिकार मंच (आपके द्वारा संस्थापित) संगठन नाम स्थापित गया है। वर्ष 1991–92 में आपके द्वारा कोल समुदाय के लिए जिसकी लड़ाई उसकी अगुवाई को लेकर पाठा कोल विकास समिति का रजिस्ट्रेशन सोसायटी एक्ट 1860 के तहत कराया गया जिसके माध्यम से कोल समुदाय अपने समाज को शिक्षित संगठित करके समाज के मुख्य धारा से जुड़े रहे जिससे क्राई संस्था, नई दिल्ली के माध्यम से फीडिंग भी कराया गया। जब तक आपका मार्गदर्शन था, तब तक पाठा कोल विकास  चलती रही।

आपने कई संस्थाओं को स्थापित कर **'वंश'** (परिवार) का नाम दिया। मुझे गाँव के एक साधारण शिक्षक पद से लेकर शिक्षा कोआर्डीनेटर से पाठा कोल विकास समिति का मंत्री पद तक काम करने का अवसर प्राप्त हुआ और ग्राम पंचायत खिचरी का प्रधान पद प्राप्त करके आज भी आपकी प्रेरणा से काम कर रहा हूं, **जो चाहत मन में सदा का कल्याण। उनका अपने आप हो जाता कल्याण।।**

# जाने कितनों का मायका है गोपाल भाई का 'घर'

संजय देव
समाज चिंतक, लेखक
नई दिल्ली

*(समाज के गंभीर, ज्वलंत, अनछुए–अनदेखे मुद्‌दों को ढूँढ़–ढूँढ़कर प्रकाश में लाना, विमर्श का विषय बनाना और समाधान की ओर ले जाना संजय देव जी के रचनाकर्म का मर्म है, सामाजिक विसंगतियों को भलीभांति ठोंक–पीटकर ही उन्हें उजागर करते हैं। समाज, पत्रकारिता, लेखन को समर्पित हैं। –सं.)*

गोपाल भाई को जितना चित्रकूट रहते हुआ जाना, उनके स्नेहाविष्ट स्वभावको उससे कहीं अधिक तब जाना जब सहजीवन और सम्यक् न्यास के कामों से उनके साथ जुड़ना हुआ। चित्रकूट तो सन् 2000 में छूट गया था जब नानाजी जी द्वारा दिल्ली जाने के लिए कहने पर दीपा और मैं दिल्ली तो आये लेकिन दीनदयाल शोध संस्थान में नहीं, एक बार फिर से नयी यात्रा शुरू करने के लिए।

चित्रकूट में रहते हुए नानाजी के कामों से जुड़कर जिस तरह से जीवन की धारा आगे बढ़ रही थी, उसमें आसपास के ही नहीं, दूर–दराज के भी सामाजिक कार्यकर्ताओं से मिलने के संयोग बनते ही थे। अपने स्वाभिमान और सोद्देश्यता के अहंकार को लगातार पीटते–पिटते रहते देना हमारी ट्रेनिंग का एक हिस्सा ही था। कम से कम मुझे तो ये सौभाग्य मिला। जितना बड़ा काम गोपाल भाई उस समय कर रहे थे और जितना उसे कमतर देखने की नासमझी मुझमें थी, उसके बावजूद उनकी स्नेहिलता घेरा कभी कमजोर पड़ता नहीं दिखा। उनके ममत्व भरे स्नेह का आकर्षण ऐसा था कि उस छाँव में जाने को मन कर ही आता था। दूसरी सुविधा यह थी कि उस छाँव का सुख लेने के लिए रोक–टोक बहुत कम थी और हमेशा एक आकर्षक सहजता की सुंगध गोपाल भाई के भारत जननी परिसर में पसरी मिलती थी। यह सहजता सियाराम कुटीर में नानाजी के आसपास के माहौल में उतनी सहज उपलब्ध नहीं थी। नानाजी के साथ रहकर जीवन को जो सीखने को मिला वह अनमोल था, इसके बावजूद नानाजी की व्यवस्था का जो तानाबाना था, उसमें एक वृत्ताकार रचना थी। आप किस वृत्त में हैं, इससे फर्क पड़ता था। सबसे भीतरी वृत्त का कुछ समय हिस्सा रहने के कारण बाहर के वृत्त साफ दीखते थे।

गोपाल भाई के यहाँ यह रचना वृत्ताकार न होकर सर्पिल दिखती थी। नानाजी की राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि और गोपाल भाई की स्थानीय पृष्ठभूमि के अंतर के बावजूद गोपाल भाई के साथ जुड़े स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर के लोगों का तानाबाना बड़ा ही रोचक था। गोपाल भाई को अधिकतर लोग पिताजी कहते थे लेकिन मुझे उनके

बर्ताव में हमेशा स्नेहिल माँ की छटाएँ देखने को मिलती थीं। उनको अन्य लोगों से बर्ताव करते मैंने काफी बारीकी से देखा है और उनके भीतर से छलकती–बोलती ममता ने मुझे सदा बहुत आकर्षिक किया है, झुकाया है, विनत किया है। मुझे अपने भीतर के सोद्देश्यता के अहंकार को गलाने में उनकी इस मौन–मुखर ममता ने बार–बार तराशा है। कसैले अनुभवों की तो गोपाल भाई के जीवन में भरमार रही होगी, ऐसा मैं मानता हूँ क्योंकि चित्रकूट में रहते हुए और उनसे हुए संवादों से मुझे कुछ का तो बखूबी अंदाज रहा। लेकिन इन कड़वाहटों को शिव की तरह पीते हुए उन्होंने कभी उस कड़वाहट को न दिल में उतरने दिया, न दिमाग पर चढ़ने दिया। इस धैर्य और करुणा का स्रोत देखने की कोशिश करता हूँ तो लगता है कि समाज कल्याण की उनकी जिद और अपने समाज की सदियों की पीड़ा के बहुआयामी थपेड़े उनके भीतर बहुत गहरे समाये हुए थे। उसके आगे उन्होंने अपनी निजी तकलीफों को कभी खास तवज्जो नहीं दी।

चित्रकूट का दीनदयाल शोध हमारे लिए सार्थक–सोद्देश्य जीवन जीने की प्रशिक्षण केन्द्र साबित हुआ। बहुत कुछ पाया हमने नानाजी के सान्निध्य और उनकी कबीरी गुरुआई से। लेकिन जब हम चार दम्पतियों और एक बहन ने मिलकर सहजीवन समिति के रूप में सन् 2000 में अनूपपुर–शहडोल में गतिविधियाँ शुरू करीं तो हमें दीनदयाल शोध संस्थान की बजाए गोपाल भाई का संस्थान अपने मायके के रूप में अधिक सहज और भरोसेमंद लगा। एक संस्थान बनाकर, तमाम कठिनाइयों से पार पाते हुए उस संस्थान को बड़ा करना एक विशेष पराक्रम की माँग करता है। वह भी पिछली सदी के आठवें दशक के चित्रकूट–मानिकपुर–बाँदा की बात करें तो कुछ और ही तीखी सामंती मानसिकता का अँधियारा वहाँ छाया था। उसके बीच मेंदबे–कुचले ग्रामीणों को संगठित करना और चुनौतीपूर्ण था। लेकिन इससे भी आगे जाकर जो काम गोपाल भाई साथ–साथ कर पाये, वह था छोटी–छोटी संस्थाओं को पुष्ट–पोषित करने, उनकी हर तरह से मदद करने, उनका साहस बनाये रखने का काम। यह मुक्तिदा संरक्षण एक विलक्षण कला है जिसे गोपाल भाई ने प्रणम्य कुशलता के साथ अपने जीवन में साधा और तराशा। ऐसा करते हुए उन्होंने कितने धोखे और दुख झेले होंगे, इसकी कथाएँ तो वे ही जानें, लेकिन ऐसा करने से वे कभी बाज नहीं आये, इसके साक्षी हमारे सहजीवन के योगेश–सुवर्णा और मनीषा–गिरधर तो भरपूर हैं। वंदना बहन और राजेश सिन्हाजी तो उनके सदा अति करीबी रहे, हम सभी सहजीवन ग्रुप वालों में से सबसे पहले से ये दोनों उनसे जुड़े रहे, सो अलग।

आज अपने देश में भी सोशल वर्क और एन.जी.ओ. कल्ट में बदल चुका है। उसकी आंतरिक संरचनाएँ नितांत कार्पोरेटी हो चुकी हैं। यह भी एक करियर बन चुका है, अधिक व्यवस्थित, व्यापक और व्यावहारिक कुशलता से लैस हो चुका है। लेकिन उसके भीतर नानाजी और गोपाल भाई जैसी करुणा–ममता संपन्न लोगों को सामने लाने की क्षमता बहुत घट चुकी है। अनथक पुरुषार्थ करके, कठिनतम हालात में आगे बढ़ते, बड़े होते चलने के साथ ही सामाजिक कार्यकर्ताओं का एक सूत्रबद्ध वंश बना सकने की गोपाल भाई सरीखी सूझबूझ, दूरदृष्टि और शिवकंठी होने की क्षमता वालों को झेलने की कूबत तो कुछ ज्यादा ही घट गयी है। हमारे समाज की इन प्रणम्य और बेशकीमती थातियों के कामों का सही मूल्यांकन जो प्रशस्तिगान से मुक्त हो,निर्भीक अन्वेषी दृष्टि से युक्त हो, ऐसे मूल्यांकन की बड़ी जरूरत जान पड़ती है। इसकी कुछ भरपाई इस ग्रंथ से हो सकेगी और आगे के लिए कुछ संकल्प आकार ले सकेगा, यही शुभकामना और प्रार्थना।

# गोपाल भाई के संग, रचना और संघष के थोड़े से प्रसंग

**राजाबुआ उपाध्याय**
**सामाजिक कार्यकर्ता**
**मानिकपुर**

*(बुन्देलखण्ड में समाज सेवा क्षेत्र में सशक्त नाम। सूखा ग्रस्त पाठा क्षेत्र में जलागम कार्यों के प्रमुख सचेतक, विशेषज्ञ, रणनीतिकार तथा सर्जक के रुप में जाने जाते हैं। –सं.)*

उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड़ क्षेत्र हमेशा पिछड़ेपन के लिए जाना जाता रहा है। बुन्देलखण्ड का बांदा जनपद के पठारी भाग, जिसकी सीमाये मध्य प्रदेश से लगती है। वह भूभाग पाठा के नाम से जाना जाता है, और इसमें चित्रकूट जनपद के दो ब्लाक मऊ एवं मानिकपुर आते हैं। जब तक यह क्षेत्र बांदा जनपद में था तब तक प्रशासन का नाम यहाँ पर बिल्कुल नहीं था। शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका के कोई अवसर नहीं थे। यहाँ की आदिवासी दलित आबादी अपने मालिकों यानी दादू, लम्बरदार या जिमींदार जो कुछ भी कह सके उनके आधीन थी। प्रत्येक दादू के अपने कोलान थे, जिनमें उनका आधिपत्य था उनकी मर्जी के बिना परिवार का कोई भी सदस्य कहीं, काम पर नहीं जा सकता था। पुरुष–महिला दोनों मालिक के खेत में या घर में काम करते थे, तो बच्चे एक दिन पहले की बासी रोटी व नमक हांथ मे लेकर गाय या भैंस चराने जाते थे तथा शाम को पुनः रोटी मालिक के यहाँ से ही मिलती तो, मां–बाप को सवा सेर जवा या कोदो मजदूरी में मिलता था। बीमारी, शादी–व्याह आदि में यदि परिवार ने कर्ज ले लिया तो वह ब्याज भरते–भरते पीढ़ियाँ गुजर जाती थी, पर कर्ज समाप्त नहीं होता था। अपनी ही जमीनों में लोग खेती करते थे लेकिन वह मालिक के लिये, उनको यह भी पता नहीं होता था कि यह जमीन हमारी है।

ऐसी विषम परिस्थितियों में यहाँ पर एक सीधा–साधा व्यक्तित्व जिसके प्रति लोग कभी सोंच नहीं सकते थे कि यह व्यक्ति इस पाठा में इतना बड़ा बदलाव लायेगा। वह थे गोपाल भाई जिनका आगमन मानिकपुर ब्लाक में 1976–77 में सद्गुरु सेवा संघ के माध्यम से हुआ। सद्गुरु सेवा संघ का अस्तित्व तो 1982 में पाठा से समाप्त हो चुका था लेकिन इसके बाद जिस संगठन का अभ्युदय मानिकपुर क्षेत्र में हुआ, वह था अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान जिसका

पंजियन 23 मार्च, 1978 को हुआ था। समाज सेवा संस्थान के गठन का मुख्य उद्देश्य था। गोपाल भाई के मन की वह पीड़ा जिसको उन्होंने 1977 से 1982 के बीच देखी, सुनी एवं समझी थी। संस्थान द्वारा अपने प्रारम्भिक काल में मुद्दा आधारित या आवश्यकता आधारित कार्य प्रारम्भ किये गये। इन कार्यों में ऐसी घटनायें घटी जिनको स्मरण कर आज परस्वार्थ के कार्यों में ईश्वर की मदद याद आती है।

वर्ष 1987–88 में गोपाल भाई के साथ गाँव कोइलिहाई गया था, वहाँ पर समुदाय ने अपनी सबसे बड़ी समस्या पीने के पानी की रखा और यह निर्णय लिया गया कि गाँव में ही स्थित पुराना कूप की गहराई बढ़ाकर पेयजल की उपलब्धता कराई जाए। इस कूप में केवल पत्थर थे, अतः ब्लास्टिंग के माध्यम से कूप को 82 फिट गहरा किया गया और पानी निकल आया लेकिन तब तक बरसात आ गई जिसके कारण कूप की बंधाई (चिनाई) का कार्य करना असम्भव हो गया जो कि अगले वर्ष के लिए छोड़ दिया गया। अगले वर्ष जब कुयें के पानी को निकालने के लिये मैं और शिवमंगल कोइलिहाई गये और वहाँ की स्थिति देखा तो उसमें 15फिट पानी भरा हुआ था जिसके लिये यह सोचा गया कि कुयें में नीचे से 25 फिट ऊपर को स्थान तय करके उसमें बल्लियां लगाकर पम्पसेट रखा जाए और पानी निकाला जाए। इसके लिये 3–4 महिलाओं को ढूंढा गया जो रस्से का चरखा पकड़ सके। महिलाओं के मिलने के बाद उनको चरखे पर लगाया गया शिवमंगल ने धुरा पर रस्सा पकड़कर मुझको नीचे उतारना प्रारम्भ किया जैसे ही मैं कुये में लगभग 15–20 फिट नीचे गया कि चरखा का घुरा टूट गया एक लम्बा झटका लगा और मैं 10–15 फिट नीचे झटके में चला गया। संयोग की बात यह रही कि महिलाओं ने रस्सा नहीं छोड़ा शिवमंगल भी इस रस्से में लिपट गये, जिसके कारण मैं कुयें में नीचे नहीं गिरा, यदि मेरे हांथ से रस्सा छूट गया होता तो शायद उसी दिन जीवन की इतिश्री हो जाती। जब मुझको बाहर निकाला गया और मैंने वहाँ का दृश्य देखा कि 4 महिलायें और शिवमंगल के हांथो की एक पर्त की चमड़ी निकल गई थी, सभी लोग लहू–लुहान थे, हम सब लोग कांप रहे थे, लगभग एक घंटे बाद हम लोग वास्तविक स्थित में आये।

संस्थान द्वारा जमीन और जन अधिकारों को लेकर कर्वी में पाठा कोल अधिकार मंच के माध्यम से कर्वी चित्रकूट कलेक्ट्रेट में किया गया था, जिसका ज्ञापन अपरजिलाधिकारी चित्रकूट के माध्यम से अरुण आर्या को दिया गया। प्रदर्शन के बाद तत्काली अपरजिलाधिकारी द्वारा क्षेत्र भ्रमण इटवां क्षेत्र में किया गया जहाँ पर रोड़ का कार्य चल रहा था। अपर जिलाधिकारी द्वारा गाड़ी रोककर श्रमिकों से उनकी मजदूरी की दर के विषय में चर्चा की तो श्रमिकों ने 4–5 रुपया प्रतिदिन बताया। अपर जिलाधिकारी महोदय द्वारा श्रमिकों के बयान के आधार पर दबंग ठेकेदार के नाम प्रथम सूचना दर्ज कर उनको जेल भेज दिया, लेकिन जमानत पर घर वापस आकर दबंग ठेकेदार ने सभी श्रमिकों को घर वापस बुलाकर हलफ़नामा अपने पक्ष में बनवाकर कोर्ट में दाखिल कर दिया। अपर जिलाधिकारी महोदय द्वारा इसकी जानकारी गोपाल भाई को दी गई और उनसे पुनः हलफ़नामा बनवाने के लिये कहा गया। वे सभी श्रमिक कुसमी गांव के मवइया परिवारों से थे। संस्थान द्वारा यह संदेशा बाबूलाल कुसमी के पास भेजा गया तो वहाँ से केवल कुटुवा आया। दोपहर को तय हुआ कि राजाबुआ, रामकिशोर एवं मातादयाल कुसमी जाकर वहाँ से सभी को लेकर आयें। हम लोग इटारसी पैंसेजर से शाम को टिकरिया गये, वहाँ से पैदल कुटुवा के साथ कुसुमी गये वहाँ जाते अंधेरा हो गया था जब हम कुटुवा के घर के पास पहंचे तो कुटुवा ने हम लोगों को 50 मीटर पहले ही रोक दिया और यह

कहा कि मैं घर में देखकर आता हूँ कि कोई बम्बिहा का तो नहीं है। कुटुवा घर जाने के काफी देर तक वापस नहीं आया तो हम लोगों के मन में भी शंका हो गई। हम लोगों ने वह स्थान छोड़कर दूसरी जगह बैठ गये लेकिन 2–3 घण्टे तक जब कुटुवा नहीं आया तो हम तीन लोग पहाड़ी के टीले में बैठकर पूरी रात गुजारी। खाने–सोने की व्यवस्था न होने के कारण हम लोगों ने पूरी रात वहीं पर गुजारी और सुबह 4 बजे हम बाबूलाल के घर गये वह सो रहा था, उसको पूरी बात बताकर सभी श्रमिकों को एकत्रित कर टिकरिया स्टेशन आये और स्टेशन से काफी दूर बैठे रहे। जब ट्रेन आने का संकेत हुआ तो एक आदमी गया और टिकट लाया। ट्रेन आने पर सभी लोग ट्रेन में बैठकर मानिकपुर आये।

ऐसी बहुत सारी घटनायें संस्थागत कार्यकाल में हुई। गोपाल भाई के साथ कार्य करने में घटनाओं का होना आम बात थी लेकिन संस्थान का संगठनात्मक ढांचा बहुत मजबूत था। एक जानकारी पर हजारों लोग एकत्र हो जाते थे। संस्थान द्वारा सम्पादित कार्य हमेशा गुणवत्तापूर्वक व प्रभावी रहे। संस्थान जिस स्वप्न को लेकर कार्य प्रारम्भ किया था, वह आज परिलक्षित होता है। जहाँ लोगों के पास एक वक्त का भोजन बिना मजदूरी या बिना लकड़ी बेंचे नहीं प्राप्त होता था। वहाँ आज लोग अपने खेतों से 1 वर्ष के भोजन की व्यवस्था तो करते ही हैं साथ में अनाज बेंचकर अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ऐसे परिणामों को देखकर आज यह लगता है कि संस्थान द्वारा आजीविका के लिये जो प्रयास किये हैं वह आज सार्थक सिद्ध हो रहे हैं।

## शुभकामनाएं

**रंगनाथ शुक्ल**

**से.नि. पुलिस अफसर, शिक्षाविद् एवं**

**प्रबन्धक - गया प्रसाद महाविद्यालय, चित्रकूट**

समाजसेवी श्री गोपाल भाई का सरल सहृदय व्यक्तित्व अनायास ही सामने वाले को प्रभावित करने में सक्षम है। समाज सेवा में उनकी उदारता, कर्मठता अनुकरणीय है। उनकी प्रेरणा से तमाम लोग लाभान्वित हुए हैं तथा उनके सानिध्य में आए लोगों में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिला है। ऐसे ही तमाम अन्य लोगों में मैं भी एक हूँ जिसे समय–समय पर उनके सहयोग व निर्देशन में बहुत सी समस्याओं का निदान मिला है। उनकी प्रेरणा से मैं अपने गाँव के बुजुर्गों, ग़रीबों की हर माह आर्थिक मदद करने उनके सुख–दुख में शामिल होने की तरफ अग्रसर हुआ। सन् 2013–14 में बुन्देलखण्ड झांसी विश्वविद्यालय से गया प्रसाद महाविद्यालय को बी0ए0, बी0कॉम में एन0ओ0सी0 प्रदान करने व सत्र में छात्र/छात्राओं के प्रवेश लेने की मौखिक अनुमति के पश्चात् कालेज में छात्रों के प्रवेश लेने व उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अनुमति न मिलने पर छात्रों के भविष्य को लेकर मैं बहुत तनाव में आ गया था व असन्तुलित हो गया था तब गोपाल भाई जी ने मुझे हर प्रकार की मदद की व ढाढस बंधाया। मेरे साथ वहाँ भी गए जिन नेताओं के यहाँ जाना वे पसन्द नहीं करते थे व एक संरक्षक का रोल निभाया। उनके द्वारा ग़रीबों, असहायों विशेषकर पाठा क्षेत्र के आदिवासियों की मदद के बारे में पूरा समाज अच्छी तरह जानता है मैं हृदय से कामना करता हूँ कि वह दीर्घायु हों ताकि व्यापक समाज को उनकी सेवा का लाभ मिलता रहे।

# तुम मम सखा भरत सम भ्राता

**लल्लूराम शुक्ल**
**पूर्व विभागाध्यक्ष -संगीत विभाग**
**ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट**

*(श्री शुक्ल जी समाज में संगीतज्ञ, शिक्षाविद् एवं सामाजसेवी के रुप में जन–जन को प्रिय हैं। उनका सौम्य व्यक्तित्व एवं रचनात्मक कृतित्व बुन्देली समाज को बड़ी प्रेरणा देता आ रहा है। –सं.)*

आदर्श बाल निकेतन श्री गोपाल भाई जो उस समय गोपाल जी नाम से जन प्रिय थे, के भागीरथ प्रयास से जिले में नहीं बल्कि प्रदेश स्तर में भी अपने शिक्षा और संस्कारों के माध्यम से बाल एवं माध्यमिक शिक्षा का आदर्श बन चुका था।

सन् 1972–73 की बात है जब मैं श्री भाई साहब के स्नेह, प्रेम एवं भाव भक्ति से उनके साथ निकेतन में ही रहकर अध्ययनरत था और समय निकालकर शिक्षण भी करता था। निकेतन के पास अतर्रा में संगीत शिक्षा का प्रमुख केन्द्र भद्रकाली स्थान भी निकेतन बन चुका

था। पर हम लोग एक कक्ष में बैठकर रात में नीरज के गीत अक्सर गाते। निकेतन में बिलगाँव के निवासी आचार्य हजारी सिंह जी भी शिक्षक आचार्य थे।

भाद्रपद आमावस्या को उनके गाँव बिलगाँव में ग्रामीण मेला एवं दंगल का अयोजन परम्परा मे था। उनकी इच्छा को महत्व देकर भाई साहब ने सभी आचार्यों सहित बिलगाँव चलने का निश्चय किया। विद्यालय सायं 4 बजे तक का था। इसके बाद सभी आचार्यगण सहित भाई साहब के साथ बस द्वारा खुरहण्ड स्टेशन पहुंच गये तब तक शाम हो चुकी थी। वर्षा के दिन थे। काले बादल गरज–चमक कर डराने की कोशिश कर रहे थे। हम सब लोगों को खुरहण्ड से नहर का कच्ची दलदल पटरी से पन्द्रह किलोमीटर चलकर बिलगांव पहुंचना था। रेलवे स्टेशन की पटरी क्रास करके नहर पटरी पर पहुंचना था। चल पड़ा काफिला पर भाई साहब हम सबके बीच से अन्तर्ध्यान हो गये। सब लोग बातचीत करते हंसते–हंसाते, तबला हारमोनिय एवं लाउडस्पीकर की पोटली सहित उसका भोंपू अपने–अपने कंधे पर लादे नहर की कच्ची पटरी पर पहुंचे कुछ दूर ही चले थे कि पूरी तरह अंधेरा हो गया पर सुकून की बात ये थी कि पानी नहीं बरस रहा था। अब हम लोगों को भूख भी लगी तब याद आयी कि भाई साहब कहाँ हैं पर किसी को पता नहीं था। थोड़ी दूर और चले कि हम सबने अपने हाथों की मुट्ठी में मूंगफली के दाने, चने व कुछ मीठी चीज पाई तब सबको भाई साहब की उपस्थिति की मनोवैज्ञानिक संवेदना एवं प्यार का अनुभव हुआ। दल–दल में पिंडलियों तक सने पैरों से सामग्री लादे चलते जाते जहाँ कोई थकता, निराश होता भाई साहब के गीत हमारे हौसले को बढ़ाता। रात्रि 12 बजे हम बिलगाँव पहुंचे गाँव के बाहर एक साथ एक स्थान पर डेरा डाल दिया। भोजन के बाद सो गये लेकिन प्रभाती का कार्यक्रम प्रातः 4 बजे से पहले से सुनिश्चित था। अतः जगाकर माइक से प्रभाती प्रारम्भ हुई। तब बिलगाँव के लोगों ने जाना कि गोपाल जी आ गये।

### जब मैं पकड़ा गया :

मैं अपने गाँव से सन् 1967 में कक्षा नवमीं में पढ़ने के लिए हिन्दू इण्टर कालेज आया था। किराये के एक कमरे में रहकर पढ़ाई करता और कभी–कभी भद्रकाली जाकर संगीत सभा का श्रोता हुआ करता था। मेरा तब वहाँ किसी से भी परिचय न था। संगीत में रुचि व कुछ प्रारम्भिक संस्कारों के कारण संगीत सीखने में भी रुचि हुई। संगीत के कारण इण्टर कालेज के मंचीय कार्यक्रमों में मुझे प्रवेश मिला। सन् 1968–69 तक कालेज में थोड़ी मेरी पहचान बनने लगी।

हिन्दू इण्टर कालेज के सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम पुरुस्कार तो मिला ही करते थे पर मुझे आश्चर्य हुआ जब एक गीत की प्रस्तुति में मुझे एक डिक्शनरी का पुरस्कार प्राप्त होने की घोषणा सुनी। बात आई गई हो गयी। एक दिन एक भव्य दिव्य व्यक्तित्व वाले व्यक्ति ने मेरे कमरे पहुंचकर मुझे वो डिक्शनरी भेंट की और कहा कि मैने इंग्लिश टू हिन्दी नही बल्कि हिन्दी टू इग्लिश डिक्शनरी आपको भेंट की है क्यों? ये आपको खुद समझ आ जायेगा। मैं एक बार के मिलने से ही बार–बार मिलने की इच्छा कर बैठा। मधुर व्यवहार, सुरीली चर्चा बातचीत और एक खास बात कि मैं जो कुछ उल्टा–पुल्टा बोलता उसका प्रेम भरा समर्थन। तब आदर्श

बाल निकेतन के लिए भूमि खरीदी जा चुकी थी। कुछ कच्चे कमरे बनाये जा रहे थे। जाड़े के दिन थे। भाई साहब टेण्ट में तखत डालकर रात्रि में वहाँ रहा करते थे। भद्रकाली से संगीत सीखकर मैं निकलता तो भाई साहब मुझे बुला लेते। काफी समय तक बातचीत होती। मैंने इसी दरम्यान देखा कि रात्रि में जाड़े से बचाव के लिए ओड़ने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी इसलिए एक बर्तन में आग तखत के नीचे रखवा लेते थे किन्तु एक दिन आग ने काफी कुछ जला डाला। सोते–सोते अचानक जागकर आग से बचकर बाहर आये। विरोधी बहुत खुश हुए लेकिन भाई साहब का साहस, धैर्य कमजोर नहीं हुआ। उनके अपने ध्येय निष्ठा के प्रेम, समर्पण भाव की गम्भीरता को समझकर मैं भाई साहब को अपना मार्गदर्शक मानने लगा।

कक्षा 12 में मेरी उपस्थिति जानबूझकर काटकर मुझे परीक्षा से रोक दिया गया। सोमवार से परीक्षा थी शनिवार को मौखिक सूचना मिली। मैं अनभिज्ञ, अंजान, परेशान और घरवालों से भयभीत भी। अपने कमरे में पूर्ण उदास निराश होकर अपनी चारपाई पर औंध गया। शाम को अचानक दरबाजा खटका भाई साहब ने आवाज दी मैं निराश भाव से दरबाजा खोलकर खड़ा हो गया। भाई साहब ने मेरे अन्दर साहस व संघर्ष का मंत्र फूंक कहा चलो कलेक्टर के पास रात्रि में ही चलना है। उस समय बड़ी मुश्किल से ट्रक द्वारा कलेक्टर के पास पहुंचे उनसे भेंट हुई पर समाधान नहीं मिला और अन्त में मैं परीक्षा से वंचित। ऐसे में मेरे मन की व्यथा मेरे परिवार वालों की व्यथा। मेरी मानसिक विफलता को देखकर भाई साहब ने मुझे आदर्श बाल निकेतन में शिक्षक के रुप में रखा फिर से घर में खिलाया पिलाया समर्थन दिया और मुझे ऐसा लगा कि मुझे मेरा बड़ा भाई मिल गया। तब से आज तक मेरे प्रत्येक जीवन यात्रा के वो जिम्मेदार बड़े भाई हैं। उनके तिरासी बसंत पूर्ण होने पर उन्हें सादर नमन।

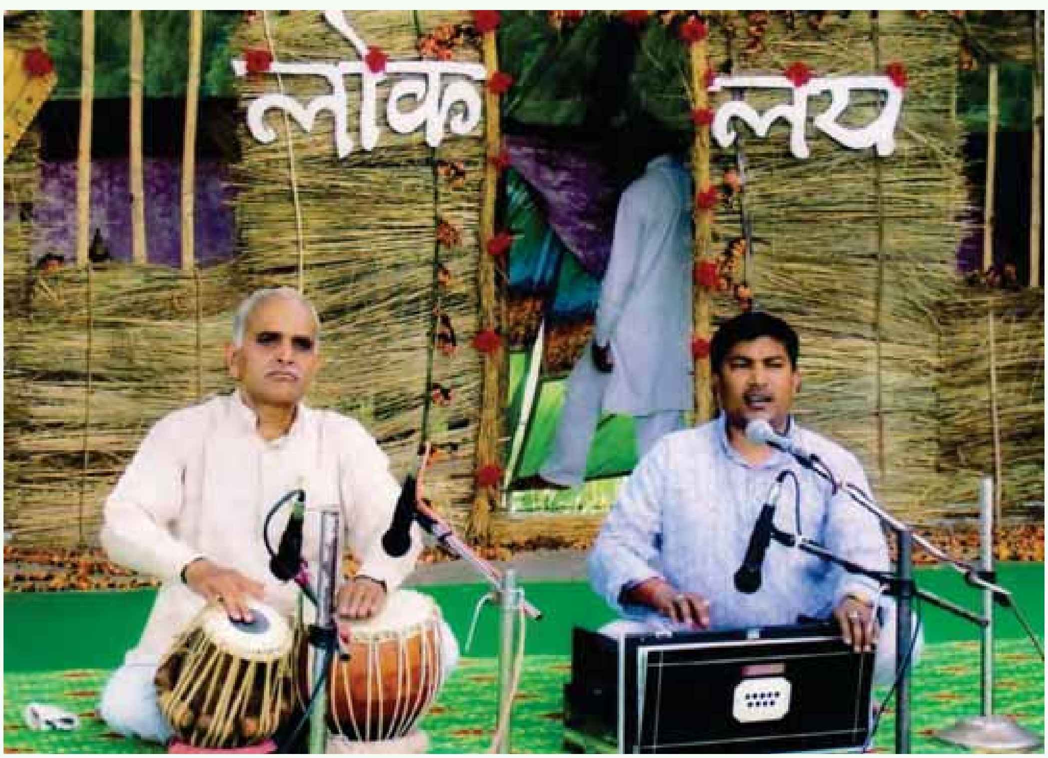

गोपाल भाई से मेरा परिचय सन् 2006 के आस–पास हुआ, जिसमें कि अपने मित्र योगेश शास्त्री एवं स्वर्णा शास्त्री से मिलने एक शिविर में अछोटी रायपुर आये हुये थे। उस मुलाकात के दौरान उनसे कुछ ऐसी आत्मीयता बनी कि चित्रकूट में आकर जीवन विद्या शिविर करने का अवसर मिला। चित्रकूट में उन्हें सबको 'पिताजी' कहते हुये देखा तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसै, तो धीरे–धीरे जैसे–जैसे उनके व्यक्तित्व के नज़दीक आया तो मैं भी उनको पितृ भाव से देखने लगा।

# ...हम धन्य हैं

● सोम त्यागी
समाज प्रेरक, प्रशिक्षक
हापुड़ उ.प्र.

*(प्रसिद्ध दार्शनिक, मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता ए0 नागराज जी के सुयोग्य शिष्य तथा देश–विदेश में मध्यस्थ दर्शन के संवाहक जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से मानवीय चेतना को जागृत करने हेतु समर्पित। –सं.)*

मुझे ममता भरा भाव उनकी ओर से मिला और सतत् मिल ही रहा है। इस क्रम में फिर धीरे–धीरे हर वर्ष इस शिविर का आयोजन चित्रकूट में होता रहा है। यह सिलसिला करीब 3 वर्ष लगातार चला और उन्हीं शिविरों की देन है कि श्री मनीष सिसोदिया जी जो उस समय उनके मित्र रहे और उनके साथ काम कर रहे थे– Right to Information पर। उनके आग्रह पर ही उन्होंने चित्रकूट में एक शिविर का आयोजन किया और उसके बाद जिस तरह से उनको छुआ और जिस तरह की संभावनाओं को उन्होंने मध्यस्थ दर्शन में देखा उसके लगभग 3 वर्ष काफी Intensively अपने परिवार व मित्रों के साथ मनीष भाई आकर शिविर करते रहे और उस समय जो उनकी निष्ठा बनी और उनकी एक Clearity बनी उसी के आधार पर जो आगे संयोग बना और दिल्ली में Happyness Curriculum द्वारा शिक्षा के मेन्यूवलीकरण का काम हुआ जो आगे चल ही रहा है और जिसको भारत में, सभी राज्यों ने भी तथा विश्व में भी कई देशों ने सराहा है, तो इस रूप में गोपाल भाई जी के प्रति एक बड़ी कृतज्ञता का भाव रहा कि उनके माध्यम से एक व्यक्ति ऐसा मिला जिसने दर्शन के मूल आत्मा, स्कूल शिक्षा में कुछ एक सकारात्मक योगदान उस माध्यम से हो पाया। उसके बाद तो एक आत्मीयता का सिलसिला बना रहा कि लगभग हर 2–3 महीने में मैं खुद ही फोन कर ही लेता हूँ, हालचाल पूछ ही लेता हूँ, कैसे हैं? ये विश्वास तो है बाकी तो एक बदलती हुई परिस्थितियों के कारण शिविर की कड़ी थमी रही लेकिन लगातार उनका स्नेह और मिलना–जुलना बना रहा। अन्य शिविरों में प्रायः उनके द्वारा गाये गये प्रेरक गीत इतने भावपूर्ण रहे कि उनके अर्थ और मर्म ने सबको छू लिया। हमारे बीच अटूट आत्मीयता स्थापित हुई। गोपाल भाई के रुप में हमें एक ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व की प्राप्ति हुई जो विभिन्न विचारधाराओं को समाकर उससे मानवीयता का रास्ता जन समुदाय को दिखाते आ रहे हैं। लोकहित में उनका चिन्तन सतत् चलता रहा है। गोपाल भाई को पाकर हम धन्य हैं। उनका सान्निध्य अभिभावक, मित्र के रुप में निरन्तर मिलता रहे यही कामना है।

# आपके अपने वे सपने

बहुत मुश्किल है
आपके व्यक्तित्व के
विस्तार को
शब्दों की
परिधि में समेट लेना।
बहुत मुश्किल है
आपके कृतित्व के
कैनवास को
किसी एक रंग से
भर लेना।
आपके अपने
वो सपने
जो छिटक कर
बिखर गए थे
पाठा की ऊसर भूमि में
आज
एक एक कर उग आए हैं
और हरे भरे खड़े हैं
आपके स्नेह जल से
सिंचित होकर
मचलन भरे हैं
फिर से छिटक कर उगने को।
आपकी अपनी
वो रुचियां
जो चिटक कर
बिखर गई थी
सेंमल के बीज सी कभी
आज
घूमकर पूरा बुंदेलखंड
जैसे लौट आती हों
यदा कदा
'भारत जननी परिसर' की
लोकलयी गोद में। आपके अपने
वो पुनीत इरादे
जो 'गो दिए थे
समय की लट में कभी
आज
पखावज की थाप में
मृदंग की ताल में
तो कभी
गुंजित होते हैं
वीणा की झंकार में।
आपके अपने
वो संघर्ष के मोती
जो 'बो दिए थे
उम्मीद की रेत में कभी
आज
संस्कृति बन आँगन में
संस्कार बन जीवन में
छा गए हैं अब तो ये
बनकर आशा अंबर में...।
('गो=गूंथना
'बो=बुआई)

•

**आशा देवी मौर्य**
**यशस्वी शिक्षिका एवं कवियत्री**
**मड़ावरा, ललितपुर**

*(अपने दौर की बेहद उम्दा रचनाकार। मन मथकर लिखती हैं। कविताओं की थाह जितनी ली जाये उतनी गहरी लगती हैं। इनसे साहित्य को बड़ी आशायें हैं। –सं.)*

# सेवाओं को समर्पित जीवन

कोई कोई व्यक्तित्व अपने कृतित्व से सेवा का पर्याय होता है। श्री गोपाल भाई एक ऐसा अद्‌भुत व्यक्तित्व है, जिन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन जनसेवा को अर्पित किया। चित्रकूट की पावन धरा को अपनी कर्मस्थली बनाकर जनसेवा का पवित्र लक्ष्य बनाने वाले श्री गोपाल जी अपनी आयु के 83 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं मैं इस अवसर पर उन्हें अपने हृदय से हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

मेरी श्री गोपाल जी से भेंट लगभग 1994–95 में हुई। मेरे निवास बलवंत नगर ग्वालियर पधारे। निवास का सही–सही पता न होने के कारण वे निवास से थोड़ी दूर ठहरकर मेरी राह देख रहे थे। मैं उन्हें लेने पहुँचा। पूर्व में कभी हमारी भेंट नहीं हुई थी, परन्तु फिर भी मैंने उन्हें पहचाना और वे भी अत्यन्त, सहज और नम्रता से बोले ''मैं ही हूँ गोपाल'' सत्य वचन कह गये थे। सर्वव्यापी, जनसेवक ''गोपाल'' को कौन नहीं पहचानता। अस्तु वे मेरे घर पधारे, भोजन किया और नम्रतापूर्वक सहजभाव से फिर अपने आने का मंतव्य प्रकट किया। बोले, आपकी गुणी पुत्री डॉ0 राजश्री अगर मेरी भी पुत्री बन जाती है तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। मेरे ज्येष्ठ पुत्र डॉ0 देशदीपक की जीवन संगिनी के रुप में हम उसे देखना चाहते हैं, आप भी विचार करें। कितनी सहजता थी उस व्यक्तित्व में। मुझे और मेरे परिवारजनों को भी इस विषय में उत्सुकता हुई और मैने अपनी सहमति बनाई। परिणामस्वरुप श्री गोपाल जी आज हमारे समधी हैं। मैं तो उन्हें अपना मित्र, छोटा भ्राता ही मानता हूँ। उनका स्नेह मेरे प्रति आदर इस सम्बन्ध को यही नाम देता है। श्री गोपाल जी ने अपनी जनसेवा का श्रेष्ठ उदाहरण आदिवासी बालक–बालिकाओं का जीवन संवारने का प्रस्तुत किया ऐसा मैं समझता हूँ। यह कहने में मुझे संकोच नहीं कि मैं स्वयं बिना किसी आधार के आज जीवन की अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त करें खड़ा हूँ। इसलिए आदिवासी, निराश्रित बच्चों की परेशानियाँ अनुभव कर सकता हूँ। उन बच्चों की शिक्षा, परवरिश, नौकरी से लेकर उनके गृहस्थाश्रम तक का दायित्व श्री गोपाल जी एक पिता की तरह निभा रहे हैं। यह समाज के लिए आदर्श है। उनके इस कृतित्व के प्रति मैं नतमस्तक हूँ। गोपाल भाई का संगीत प्रेम भी उनकी मेरी मित्रता में एक ठोस कारण है। वे अच्छे कार्य है। सदा नई–नई उत्कृष्ट कला को सीखने की चाह भी उनमें है। उन्होंने भारतीय संगीत की शैली ध्रुपद को सीखा है। वे हारमोनियम भी बजाते हैं। रागों की उन्हें पहचान है। ये सारे कार्य उनके कलात्मक और सांगीतिक गुण मेरी और उनकी चर्चा में हमेशा होते रहते हैं। मेरे पास जांचने और शोध ग्रंथो में लोक संगीत से सम्बन्धित विषयों के प्रबंध में मेरे से लेकर उनका आज भी अध्ययन करते हैं। इसीलिए वैचारिक स्तर पर भी वे मेरे अच्छे मित्र हैं। अपने परिवार के प्रति अत्यन्त संवेदनशील, कर्त्तव्य परायण श्री गोपाल जी को उनके जीवन बसंत के 83 वें वर्ष में पर्दापण करने के शुभ अवसर पर उनके शतायु होने की मैं शुभेच्छा देता हूँ।

● डॉ. प्रभाकर लक्ष्मण गोहदकर
शास्त्रीय गायकी का ग्वालियर घराना
अष्टांग गायकी के एकमात्र गायक
ग्वालियर म.प्र.

# जब कुछ प्रेरणादायी लगता है

**सुवर्णा**
**समाज प्रेरक, समाधान स्थली**
**पुणे, महाराष्ट्र**

पिता जी यानी गोपाल भाई। आपके कार्य से जुड़े सभी आपको इसी संबोधन से बुलाते हैं और क्यों न बुलाएँ? बुन्देलखण्ड के मानिकपुर क्षेत्र के बीहड़ों में बसे लोग जो सामंतवादियों के अत्याचार से पीड़ित, गरीब, असहाय थे, जीने की प्राथमिक आवश्यकताओं से वंचित थे, सम्मान से जीने का कोई अवसर नहीं था। ऐसे युवा, बुजुर्ग, महिलाएँ, किशोरियों सबके पिता बनकर, सबको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक संरक्षकत्व देकर सम्मान के साथ जीने के लिए आपने अनेकों परिवारों को खड़ा किया। अत्याचार को न सहने का आत्मविश्वास उनमें जगा।

सन् 1998–99 से चित्रकूट स्थित भारत जननी परिसर में राजेश/वंदना सिन्हा, दीपा/संजय देव, मनीषा/गिरधर माथनकर, शैला देशमुख, डॉ गुरुदास अग्रवाल सर एवं योगेश जी के साथ आपसे मिलने आते थे, फिर कई बार रहने भी आए। आपके जोरदार अतिथि सत्कार को देखा, आँगन में तख्त पर बैठकर देसी ढंग का भोजन किया। शुरुआती दिनों में आपके द्वारा आयोजित लोक कलाओं को केन्द्र में रखकर जो सांस्कृतिक आयोजन हुए उनमें से कुछ में सहभागिता की। अच्छा संगीत, नृत्य साहित्य के प्रति आपके लगाव को देखा। आप स्वयं संवेदनशील कवि और लेखक हैं ही। ग्रामीण अंचलों में बसे लोगों के हुनर को खोजकर उन्हें स्थानीय और प्रान्तीय मंच भी दिलाते रहे। सबके साथ रहना, सबके साथ खाना–पीना, हर व्यक्ति की आत्मीयता से पूछताछ, हर काम स्वयं अपने हाथ से करने की तैयारी और योग्यता भी आपमें है ही। प्राकृतिक तरीके से लोगों के शरीर का स्वास्थ्य बनाए रखने के लिये अनेकों प्रयोग करते हुए भी आपको हमने देखा है।

आस–पास के गाँव से आकर जब बच्चे भारत जननी परिसर में रहते थे, तो उनकी शिक्षा, संस्कार और वातावरण के लिए आपने बहुत

लोगों को साथ जोड़कर बुनियादी प्रयास किये, उसके हम साक्षी हैं। मानिकपुर क्षेत्र के गाँव–गाँव इस तरह शिक्षा का काम फैलता गया। सुदूर के गाँवों में वाटरशेड के माध्यम से एक–एक गाँव का चेहरा बदलता था, उसको देखकर ऐसे ही काम करने की प्रेरणा मिलती रही। जिस समय संस्थाओं के वातावरण में एकतरफा तरीके से प्रशिक्षण दिया जाता था उस समय नई पहल के रुप में आए सहभागी तरीके से विभिन्न कौशलों के प्रशिक्षण की उस क्षेत्र में शुरुआत भी आपने की। डाकुओं के क्षेत्र में काम करने वाला आपका फौलादी व्यक्तित्व भी देखा, अंदर से उतने ही मुलायम और संवेदनशील व्यक्ति के रुप में भी देखा। देश–विदेश के संगठनों के बीच ज़मीनी स्तर पर किये कार्य को आप अपनी टीम के साथ बड़े शालीन तरीके से पहुँचा पाये। आप सबके एकत्रित प्रयास को सराहा भी गया। अनेको सम्मान मिले लेकिन आपकी सादगी, मितव्ययिता कायम रही। जमीन पर खड़े रहकर ही अगली योजनाएं बनाने के लिए फिर जुटे रहे। हमने अपनी मित्रमंडली के साथ जब चित्रकूट से शहडोल जाकर काम करने का सोचा तो हमारी सभी गतिविधियों के आप संरक्षक बने, तब से लेकर आज तक। नई संस्था के गठन के लिए जैसे हमें पूरा मार्गदर्शन, सहयोग दिया, वैसे अनेकों युवाओं को अपने–अपने क्षेत्र में काम करने की प्रेरणा दी। चित्रकूट में हम उनके साथ रहे, शहडोल में कई बार वो हमारे साथ आकर रहे। समय–समय पर आपके परिचित विशेषज्ञो को भेजते रहे। हमारी संस्था के सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और पारिवारिक सभी पहलुओं पर स्पष्टता से अपने मत को बताते रहे।

आपका निजी परिवार भी इस काम में अलग–अलग भूमिकाओं के द्वारा पूरी तरह से जुड़ा रहा। संस्था की बागडोर पूरी तरह से सम्हाले हुए परिवार के एक सदस्य के आकस्मिक निधन के बाद भी उसमें से रास्ता निकालते हुए परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्व को निभाते हुए आज भी खड़े हैं। अपने मजबूत आध्यात्मिक अधिष्ठान के बिना ऐसे कामों में लगातार उसी ऊर्जा के साथ बने रहना संभव नहीं है। ये बात हम पिताजी में शुरु से देखते रहे। उसी कड़ी में जब आपका मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद से जीवन विद्या शिविरों के द्वारा परिचर हुआ तो आप स्वयं उसके अध्ययन में जुड़े ही है। संस्था की मुख्य निर्णय लेने वाली सभा के सदस्य एवं शिक्षा से जुड़े सभी साथियों ने ये शिविर किये और सभी इच्छुक व्यक्तियों को आगे इसके अध्ययन से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ताकि सभी लोग अपने जीने के लक्ष्य के प्रति अधिक सजग होकर अगली पीढ़ी के लिए शिक्षा का काम और अधिक पवित्रता के साथ कर सके। इस पर आधारित शिक्षा की परम्परा कैसे बनेगी इस पर भी आपका काम चलता रहा। देशभर के अपने मित्रों को इस दर्शन के साथ जोड़ने का प्रयास रहा ही, दर्शन के प्रणेता आदरणीय श्री ए0नागराज जी से मिलकर उनके साथ नक्सली लोगों से बातचीत करने का काम भी किया। जीवन विद्या के वार्षिक सम्मेलनों में भी सहभागिता करते रहे। शरीर की इस आयु में भी विद्यार्थी के रुप में प्रस्तुत होकर समझकर जीने का प्रयास भी प्रेरणादायी लगता है।

इस पितृतुल्य व्यक्तित्व के साथ जीने के कुछ क्षण हमें मिल पाए, मैं गौरवान्वित महसूस करती हूँ, आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ एवं आपके दीर्घायु की कामना करती हूँ।

# अभिशप्त पाठा के भागीरथ

● **आलोक द्विवेदी**
**अधिवक्ता, पत्रकार एवं**
**राजनीति विश्लेषक, चित्रकूट**

*(राजनीति से हरदम अपने पांव खींचकर पत्रकारिता और समाज सेवा के क्षेत्र में रखने वाले आलोक जी बुन्देलखण्ड में अन्याय, शोषण–उत्पीड़न के विरुद्ध सबसे बुलन्द आवाज़ हैं। सामाजिक परिवर्तन के हर आन्दोलन में उनका योगदान जुड़ा हुआ है। –सं.)*

पाठा की पथरीली ज़मीन पर स्वाभिमान के फूल खिलाने का संकल्प लिए नौजवान गोपाल भाई 50 साल पहले चित्रकूट के बीहड़ जंगलों को अपनी कर्मभूमि बनाते हैं। जंगलों में बसे कोल परिवारों के दबे–कुचले बदरंग जीवन को संवारने की राह पर वह अकेले ही चल पड़े है। न कोई संगी साथी, न कोई सहारा। उन्हें न तो इस राह की दुश्वारियों का अहसास है और न ही इन कोल परिवारों के शोषक दबंगों के जुल्मों सितम का। वह तो यह भी नहीं जानते कि उसकी राह पर क़दम–क़दम पर क्या अड़चने हैं।

अनिश्चय के इस सफर में 1975 का आपातकाल उनकी जीवनधारा बदलने वाला साल है। अब तक के तमाम झंझावतों की विरासत लिए वे अपने अभियान पर चल पड़े। गोपाल भाई का अब तक का अतीत मान अपमान का मारा, संघर्षों भरा और बहुत ही तकलीफों भरा था। अपमानित अतीत को भूल गोपाल भाई ऊर्जा और उत्साह के साथ खड़े लक्ष्य की ओर गतिशील थे। इन्हीं दिनों दिल्ली से आये बड़े भाई जनार्दन द्विवेदी (राष्ट्रीय नेता कांग्रेस) के साथ आत्मीयता का जो रिश्ता बना वह अब तक निर्बाध है। वे हमारे शुभचिन्तक हैं, संरक्षक हैं। हिन्दू

इण्टर कालेज अतर्रा में हुए एक नाटक में गोपाल भाई बड़े भाई की भूमिका यानी राम की भूमिका में थे और भाई जनार्दन द्विवेदी लक्ष्मण की भूमिका में थे। मेरे पूज्य पिता श्री योगेन्द्र दत्त द्विवेदी के प्रति आपका हमेशा विनीत भाव रहा है। विगत 50 सालों में गोपाल जी के कर्मठ जीवन की उपलब्धि के लिए तो आपको इनके क्षेत्र में जाना होगा। इनकी इस यात्रा को मैं सादर प्रणाम करता हूँ और कामना करता हूँ कि आप ऐसे ही अपनी सक्रियता बनाये रखें।

गोपाल भाई अपने पैतृक गाँव विगहना के पहले स्नातक हैं, उन्होंने जीवन में इस मुकाम तक पहुंचने से पहले ही जीवन की बहुत सी कठिनाइयों को देखा था। 12वीं पास करने के तुरंत बाद उन्हें अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए नौकरी करनी पड़ी, सौभाग्य से एक सरकारी नौकरी मिली। हालांकि वह यहाँ एक साल से अधिक समय तक नहीं रह सके क्योंकि यह इनके व्यक्तिगत उसूलों और मानसिकता के खिलाफ था। उसके बाद के चार वर्षों में उन्होंने अतर्रा में विभिन्न व्यावसायिक दुकानों में विक्रेता के रुप में काम करके देखा। यहाँ नौकरी की प्रकृति ऐसी थी कि उसे बहुत अस्वास्थ्यकर व्यायसायिक प्रथाओं में शामिल होना आवश्यक था। साथ ही उसमें उस सामाजिक कार्यकर्ता और कार्यकर्ता के लिए लाभ के लिए बहुत कम अवसर था। 1965 में अतर्रा में आदर्श बाल निकेतनल के नाम से एक स्कूल की स्थापना की। यह अवधि 1965 और 1975 के बीच कम से कम 10 वर्षों की एक लम्बी अवधि है, जिसके दौरान उन्होंने स्कूल के प्रिंसिपल के रुप में काम किया। इसी दौरान एक समाचार पत्र 'अजेय दुर्ग' के संपादक के रुप में 1970 से 1975 तक काम किया। यह एक ऐसा स्कूल था जहाँ गरीब, अमीर, निम्न जाति और उच्च जाति के बच्चों को एक ही मंच पर लाने का विशेष ध्यान रखा गया था ताकि मनुष्य की दीवारों में कृत्रिम मतभेद हमारे देश के भविष्य को अलग न कर सके। इसके पीछे इतना नेक उद्‌देश्य था और उपयुक्त रुप में इसका नाम आदर्श बाल निकेतन रखा गया। सन् 1975 का वर्ष आपातकाल का साल था जिससे देश भर में सामाजिक–राजनीतिक हलकों में हड़कंप मच गया था। बांदा में अतर्रा का पुरवा कोई अपवाद नहीं था और उन सभी लोगों के लिए जो अपने विचारों और स्थापना के विचारों में गौर अनुरुपतावादी और कट्‌टरपंथी थे, उनके सलाखों के पीछे डाल दिये जाने का खतरा था। देश में इस राजनीतिक संकट के खतरे के तहत गोपाल भाई को भूमिगत होना पड़ा। इससे वह अतर्रा छोड़कर चित्रकूट चले गए। इस प्रकार उन्हें उनकी परिस्थितियों के अनुसार उनकी कर्मभूमि पर भेज दिया गया। गोपाल भाई ने 1977 में पाठा क्षेत्र के दौरे के दौरान इस स्थिति को देखा और चकित रह गए। उन्होंने मानिकपुर के कोल आदिवासियों की दशा को नजदीक से देखा। उन्होंने फैसला किया कि वह इस हाशिए पर पड़े समुदाय को सशक्त बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देंगे। मित्रों और शुभचिंतकों, विशेष रुप से बांदा के जिला कलेक्टर मधुकर गुप्ता द्वारा प्रोत्साहित और समर्थित था, उन्होंने अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शुभारम्भ किया। दादुओं के मोहरे बने कोल परिवार धूम में परिश्रम करते, तमाम अवैध गतिविधियों और जंगल के पेड़ों को काटने, रेलगाडियों को रोकना, छोटी–मोटी चोरी, अवैध शिकार आदि जैसे कुकर्मों के लिए कोलों को आगे कर दबंग दादू कमाई करते थे। प्रशासन और पुलिस आमतौर पर कोलों के बजाय दादुओं की रक्षा करते थे। जबरन और बंधुआ मजदूरी

व्यापक रुप से प्रचलित थी और यह सुनिश्चित करती थी कि पीढ़ी–दर–पीढ़ी कोल अपनी ज़मीन पर कठिन जीवन जिए, जिसकी कमान दादुओं के हाथ में रहे। इन अभिशप्त कोल बस्तियों में गोपाल भाई की भूमिका किसी भागीरथ से कम नहीं है, जहाँ ये स्वाभिमान की गंगा लेकर गए, जहाँ आज कोल परिवार सिर उठाकर जीने की कला सीख गये हैं। ये गोपाल भाई की 50 साल की तपस्या है। यह एक कठिन कार्य था। कोल इतने भयभीत और अलग–थलग थे कि वे किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकते थे, हर अजनबी को वे विदेशी के रुप में देखते थे। अजनबियों से सामना होने पर वे सचमुच जंगल में भाग जाते। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने उनके साथ संबंध बनाने के अपने प्रयासों को जारी रखा और समय के साथ उनके जीवन के सभी पहलुओं में भाग लेना और उनका विश्वास हासिल करना शुरु कर दिया। जैसे–जैसे उनका आत्मविश्वास बढ़ता गया कोल खुलने लगे। उनकी दुर्दशा की कहानियाँ अब घने जंगल का रहस्य नहीं रहीं। गोपाल भाई को हजारो परिवारों ने पूरे मन से 'पिताजी' नाम देकर अपना लिया।

# गोविंद बोलो! हरे गोपाल बोलो!

**डॉ. स्मिता सहस्त्रबुद्धे**
**विभागाध्यक्ष - संगीत विभाग**
**कमला जारा गर्ल्स कालेज,**
**ग्वालियर म.प्र.**

पिताजी श्री गोपाल भाई हम सबके आदर्श हैं। जन सेवा के ऐसे समर्पित व्यक्तित्व को मैनें उनके स्वनाम (श्री ''गोपाल'') में श्रीकृष्ण की छवि को देखने का प्रयास किया है। अपनी अनंत, शुभकामनाओं सहित कुछ पंक्तियाँ तदानुरुप प्रस्तुत है :–

जन सेवा लक्ष्य है जिनका।
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – श्रीकृष्ण का वृन्दावन, मथुरा की जनसेवा)*

सांवरी सूरत ''कद'' ऊँचा है जिनका।
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – श्रीकृष्ण की सूरत और अंनत लीलाओं का)*

मित्रवत, ममत्व, स्नेह लुटाने का स्वभाव जिनका
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – श्रीकृष्ण सुदामा, गोपिकाओं का प्रेम)*

साहित्य, संगीत, कला का प्रेम है जिनका।
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – श्रीकृष्ण का संगीत एवं बांसुरी वादन का)*

संकल्प बाल गोपाल के जीवन संवारने का।
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – गोपिकाओं के जीवन रक्षण का)*

मंतव्य जन–जन के दिशा निर्देशन का।
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – गीता उपदेश)*

नाती, पोते, मित्र, सखा भरा पूरा परिवार है जिनका।
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – श्रीकृष्ण का विस्तृत परिवार)*

''शुभकामना'' है शुभ दिन आज जिनका।
गोपाल जी पर्याय हैं श्रीकृष्ण का।।
*(संन्दर्भ – श्रीकृष्ण की सूरत और अंनत लीलाओं का)*

# भाई जी के प्रयास से अब तक 35 हजार बच्चे शिक्षा से जुड़े

**विद्यासागर बाजपेयी**
**वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता**
**मानिकपुर**

*('गुरुजी' उपनाम से बहुचर्चित श्री बाजपेयी जी बुन्देली समाज सेवियों के बीच बड़ा गौरवशाली नाम है। दुखियों की सेवा तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं की फौज तैयार करने में उन्होंने अपना जीवन होम किया है। पाठा के लठैतों–डकैतों से जूझते हुए उन्होंने अप्रतिम समाज सेवा की है। अभी भी आदिवासी बच्चों की शिक्षा को लेकर उनके अनूठे प्रयोग चल रहे हैं। –सं.)*

*भाषा भाव शैली है, न लेखन सार गर्भित है।*
*हृदय का भाव है, जो आपको सादर समर्पित है।*

विकास के चरण कभी थमते नहीं, वह एक क्षण की बात दूसरी है। जिसे यति कहते हैं, वह चाहे सकारात्मक हो या नकारात्मक।।

जब पिछले समय की ओर झांकने का प्रयास करते हैं तो विश्वास नहीं होता कि इतनी लम्बी दूरी एक मनीषी के संरक्षण, सम्वर्द्धन एवं मार्गदर्शन में व्यतीत हो गयी। 1978 जब ददरी मवान से संस्थान की यात्रा प्रारम्भ हुई माननीय प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देशाई के कर कमलों द्वारा सामाजिक वानिकी का शुभारम्भ किया गया। मानिकपुर पाठा क्षेत्र जहाँ शोषण, उत्पीड़न, ज़मीनों पर अवैध कब्जे, डेढ़ पाव की मजदूरी, बहन–बेटियों की आबरु से सरेआम खिलवाड़, कृषि कार्य केवल दबंगों तक ही सीमित, वन उपज से वंचित आदिवासी कोल जो यहाँ के मुख्य वाशिन्दे विषम विभीषिकाओं से जूझ रहे थे। इन आदिवासी कोलों के हक़ एवं अधिकार की पैरवी श्री गोपाल भाई कुछ अपने गिने–चुने समर्पित कार्यकर्ताओं के माध्यम से कर रहे थे।

1983 में सरकार के एक अध्यादेश ने कारपोरेट घरानों को इनकम टैक्स डिडेक्शन में छूट न देने के कारण अधिकांश पूंजीपतियों ने अपने पैर पीछे खींच लिय थे। गोपाल भाई के समक्ष 903 ऐसे परिवार जिन्हें सामाजिक वानिकी के अन्तर्गत जोड़ा था, कराह उठे। उनकी दयनीय स्थिति को देखकर वो बेदना से ग्रसित हो गये और 1986 में विदेश अभिदाय अधिनियम के तहत संस्था का पंजीयन कराया।

शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण हक़दारी, आजीविका आदि के लिए विभिन्न संगठनों से सहयोग प्राप्त कर कार्यक्रम को पुनः गति प्रदान की। परिणाम स्वरुप हजारों एकड़ ज़मीन जो दबंगों के कब्जे में थी, उनके हाथों से निकल गयी। उनके शोषण–उत्पीड़न के खिलाफ लोग खड़े होने लगे। प्रतिकार को देखकर सामन्तशाही शक्तियों ने मिलकर

संस्था को नेस्तनाबूत करने एवं श्री गोपाल भाई व उनके कार्यकर्ताओं को नीचा दिखाने के लिए षड़यंत्र रचना शुरु कर दिये, जिसके परिणाम स्वरुप एक विवेकहीन एस0ओ0 विन्ध्यांचल सिंह उर्फ लोहा सिंह द्वारा एक झूठे मनगढंत केस में फंसाने का प्रयास किया। यह घटना माह अगस्त 1993 की है। मानिकपुर के एस0आई0 कमल सिंह संस्थान परिसर में लगभग 3 बजे आते हैं। उस समय संस्थान में मैं स्वयं एवं श्री हजारी सिंह पंकज उपस्थित थे। उन्होने आकर बताया कि एस0ओ0 आपको थाने बुला रहे हैं। आप लोगों के खिलाफ 120बी0 के तहत एफ0आई0आर0 दर्ज़ हुई है। आप लोगों ने एक लड़की को भगाकर उसे बेंच दिया है। उन्हें स्पष्टीकरण भी दिया गया कि ऐसी कोई घटना नही है। हम लोग तो खुद ही महिलाओं के खिलाफ आवाज़ उठाते हैं। उन्होंने कहा कि आप थाने चलिए। हम लोग थाने चले गये वहाँ पर एस0ओ0 ने बड़ी ही अभद्रतापूर्ण ढंग से कहा कि आप लोग लड़की बेंचने का भी धन्धा करने लगे। पंकज जी ने उनसे विस्तार से जानकारी देने का कहा। उन्होंने ममता शर्मा नाम की लड़की का नाम लिया और कहा इसे आप लोगों ने कहीं ले जाकर बेंच दिया है। उसके पति ने आप लोगों के खिलाफ रिपोर्ट लिखाई है। उन्हें अवगत कराने की बहुत कोशिशे की गयीं लेकिन वह नहीं मानें। यह भी कहा गया कि ममता शर्मा हमारे यहाँ शिक्षा समन्वयक के पद पर काम करती है। उसके पति से उसके सम्बन्ध अच्छे नहीं है, उसने तलाक लेने का आवेदन भी कर रखा है। वह अक्सर आकर उसके साथ अभद्रता भी करता है, जिसके कारण वह काम छोड़कर एक्शन एड़ दिल्ली में कार्यक्रम अधिकारी मीनू बड़ेरा के साथ दिल्ली चली गई है। लेकिन वह इस बात से सहमत नहीं हुए तथा थाने में बिठाये रखा और कहा कि जब तक लड़की नहीं आ जाती तब तक आप लोगों को छोड़ा नहीं जायेगा।

श्री गोपाल भाई उस दिन किसी काम से इलाहाबाद गये हुए थे। 8 बजे शाम जब वह वापस मानिकपुर आते हैं उन्हें सारी जानकारी हुई। जानकारी होते ही वह तत्काल थाने पहुंच गये। एस0ओ0 को उन्होने पूरी तरह आश्वस्त करने की कोशिश की लेकिन उन्होंने वर्दी के नशे में कुछ भी नहीं सुना। गोपाल भाई

के साथ गये उनके भाई सन्तोष और उनके ड्राइवर को लाकअप के अन्दर बन्द कर दिया और हमें चबूतरे में ही रात्रि भर बैठा रखा। गोपाल भाई ने कहा कि अगर हमारी रिपोर्ट है तो आप हमारा चालान कर दीजिए। एस0ओ0 ने न चालान किया और न हमें छोड़ा। दूसरे दिन मानिकपुर के गणमान्य व्यक्ति और महिला सामाख्या की माधवी कुकरेजा मिलने आई और एस0ओ0 से छोड़ देने के लिए कहा लेकिन वह नहीं माना। तीसरे दिन सबेरा होते ही पाठा के प्रत्येक गाँव से बच्चे, बूढे, नौजवान एवं महिलाओं का हुजूम थाना घेराव के लिए उमड़ पड़ा। हुजूम देखकर तत्कालीन सी0ओ0 सिन्हा ने तीन ट्रक पी0ए0सी0 बुला लिया। इधर बाँदा के जिलाधिकारी के पास ममता शर्मा का मजिस्ट्रेटियल फैक्स आ गया कि वह अपनी मर्जी से दिल्ली आकर एक्शन एड़ संस्था में काम कर रही है। फैक्स आते ही बाँदा का पूरा मीडिया मानिकपुर थाने पहुँच गया। उनके द्वारा लगातार घटना के बारे में पूछे जाने पर एस0ओ0 और सी0ओ0 घबरा गये। इधर लोगों का घेराव लगातार बढ़ता ही जा रहा था। जन दबाव को देखते हुए और दरोगा के खिलाफ बढ़ती कानूनी उलझनों को देखकर सी0ओ0 सिन्हा की भाषा बदल गई। सिन्हा जी ने अब हम लोगों को ही मैनेज करना शुरु कर दिए कि आप लोग हमें लिखकर दे दीजिए कि हमारे साथ कुछ भी नहीं हुआ। सिन्हा की बहुत कोशिशों के बाद जब हम लिखकर देने को तैयार नहीं हुए तो वह हमें अपनी गाड़ी से कार्यालय तक छुड़वाने की बात करने लगे। गोपाल जी ने कहा कि हम पैदल आये हैं और हम ग्रामीण साथियों के साथ पैदल ही चलकर अपने कार्यालय तक जायेंगे। तमाम शर्तों को ठुकराने के बाद उन्होने हमें छोड़ने में ही अपनी भलाई समझा।

थाने से जैसे ही हम लोग श्री गोपाल भाई जी की अगुवाई में बाहर निकले वैसे ही थाने के बाहर खड़े ग्रामीणों ने जोर–जोर से जैकारा लगाना शुरु किया। गोपाल भाई आगे–आगे कार्यालय की ओर चल दिए। ग्रामीण भी पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद, गोपाल भाई जिन्दाबाद बोलते हुए चल दिए। पूरी बाजार से चलकर गोपाल भाई अपने ग्रामीण महिला–पुरुषों के साथ कार्यालय पहुँचे। कार्यालय में कुछ देर सभी के साथ बैठक हुई तब लोग अपने–अपने घर वापस गये।

थाने से छूटने के दूसरे दिन ही संस्थान ने कर्वी न्यायालय में मानवाधिकार हनन एवं ग्वालिन को लात मारकर गर्भपात हो जाने का मुकदमा दायर किया। इस केस में एस0ओ0 और सी0ओ0 सिन्हा के खिलाफ केस चला।

**दूसरी घटना :**

बांदा जिले के मानिकपुर ब्लाक का वह पठारी भाग जिसे पाठा के नाम से जाना जाता है। जबसे गोपाल भाई ने 1978 में इस क्षेत्र के विकास का संकल्प लिया था तब उन्होंने महसूस किया कि इस क्षेत्र में सबसे अधिक जनसंख्या कोल समुदाय की है जो अशिक्षा, जागरुकता की कमी के कारण अपने अधिकारों से वंचित है, बंधुवा जैसा जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

इसी को ध्यान में रखकर लोगों को जागरुक करने एवं शिक्षा की अलख जगाने का काम प्रारम्भ किया। लगभग 5000 हजार परिवारों के सर्वेक्षण से यह निकलकर आया कि पूरे क्षेत्र में दो कोल युवक सुन्दरलाल (स्नातक) एवं राजाभइया मात्र दसवीं पास मिले थे। शिक्षा की इस स्थिति को जानकर गोपाल भाई ने शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं बच्चों के निर्माण का वीणा उठाया। सबसे पहले क्षेत्र में 5 शिक्षा संस्कार केन्द्र प्रारम्भ किये गये। 1986 में आक्सफॉम

इण्डिया के सहयोग से इन केन्द्रों की संख्या बढकर 20 हो गई। 1989–1991 में 100 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों का संचालन किया गया । 1993 में एक्शनएड के सहयोग से 40 शिक्षा संस्कार केन्द्रों का संचालन शुरु हुआ जो 2004 तक लगातार संचालित होते रहे। चाइल्ड फण्ड इण्डिया के सहयोग से भी पुनः 2015 से 2021 तक 79 गाँवों में शिक्षा संस्कार केन्द्रों का संचालन होता रहा है। वर्तमान में संस्थान द्वारा 10 शिक्षा संस्कार केन्द्र संचालित हैं। अभी तक गोपाल भाई जी के सतत प्रयास से लगभग 35000 हजार बच्चे शिक्षा प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। जो कोल समुदाय शिक्षा के कारण अपनी बात रखने में असमर्थ था, अपने अधिकारों से वंचित था, आज स्वयं अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने लगा है। अनेक पंचायत प्रतिनिधि के रुप में अच्छा काम कर रहे हैं। इस सबका श्रेय श्री गोपाल भाई को जाता है।

यही नहीं गोपाल भाई के सहयोग से दिल्ली के उपमुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया ने अपने राज्य के शिशु से लेकर कक्षा 8 तक के पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया है। हैप्पीनेश पाठ्यक्रम सभी दिल्ली के स्कूलों में लागू किया गया है जो बच्चों के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। 1978 – 2022 तक की गोपाल भाई जी की इस विकास यात्रा में शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण हक़दारी, पेयजल, सिंचाई सुविधायें, आजीविका, कृषि आदि पर बराबर ध्यान रहा। प्रारम्भिक दिनों में मुश्किल से यहाँ 10 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में फसलें ली जाती थीं। आज स्थिति यह है कि 85 से 90 प्रतिशत भूमि में खेती होने लगी है। जहाँ 3–4 महीने के लिए अनाज पर्याप्त नहीं होता था, आज अनेक कोल, अनुसूचित जाति परिवार 15–20 कुन्तल अतिरिक्त अनाज बेंच लेते हैं। हरिजनपुर के बिन्दा, इन्द्रपाल, राममनोहर आज इसके उदाहरण हैं। टिकुरी, टिकरिया, मनगवाँ, इटवा, पाटिन, बगरहा आदि गाँवों में सच्चाई का अवलोकन किया जा सकता है।

पहले से परिवार अपनी कृषि भूमि से वंचित थे। अनेक आन्दोलन, 49 दिनों के क्रमिक अनशन, सर्वोच्च न्यायालय की पहल आदि के द्वारा पाठा में गोपाल भाई लगभग 15000 एकड़ ज़मीन पर इन्हें कब्जा दिलाने में सफल हुए, जो दबंगों के कब्जे में थे। पांच दशक का गोपाल भाई का यह कार्यकाल अनेक चुनौतियों से भरा रहा। किन्तु उन्होंने कभी साहस नहीं खोया, अपने सहयोगियों के साथ उनका मुक़ाबला किया है। जिनके हित बाधित होते रहे हैं वहीं दबंग, सामन्तशाह विरोध में रहे हैं। अनेक जांचों एवं कुचक्रों में फंसाने के प्रयास हुए हैं किन्तु गोपाल भाई की कार्यशैली के सामने सबको झुकना पड़ा है। मैं लगातार उनके प्रयास में साथ रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि उनका जीवन इस क्षेत्र के विकास के लिए कैसा रहा है।

उनके शब्दों में –

*"माना अगम अगाध सिन्धु है, संघर्षों का पार नहीं है।*
*किन्तु डूबना मझधारों में, साहस को स्वीकार नहीं है।"*

वह कहते रहते हैं

*"निर्माणों के पावन युग में, तुम चरित्र निर्माण न भूलो।*
*स्वार्थ साधना की आंधी में, पाठा का कल्याण न भूलो।"*

# साथ पढ़े हम साथ बढ़े हम


**छोटेलाल त्रिपाठी**

**अवकाश प्राप्त लेखाधिकारी, बांदा**


*(गोपाल भाई के सहपाठी। कक्षा 1 से लेकर 12 तक साथ–साथ पढ़े। –सं.)*

*कुपथ निवारि सुपंथ चलावा।*
*गुन प्रगटै अवगुनहि दुरावा।।*
*देत लेत मन संक न करई।*
*बल अनुमान सदा हित करई।।*
*विपतिकाल कर सतगुन नेहा।*
*श्रुति कह संत मित्र गुन एहा।।*

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने रामचरित मानस में गोपाल भाई जैसे सहृदय समर्पित मित्रों को देखकर ही उक्त उद्गार व्यक्त किये होंगे। एक समय की बात है कि मैं बचपन में भाऊ (अपने पिता) के साथ खुरहण्ड स्टेशन से अजीतपारा (अपने गाँव) पैदल जाते हुए विगहना (गोपाल भाई का गाँव) में थकान दूर करने हेतु रुका। वहीं हमारी दोनों की प्रथम भेट हुई और अंतरगत्वा के साथ आपस में खेलने लगे। एक दूसरे के प्रति नैसर्गिक रुप से आकर्शित होते देख भाऊ ने काकू (गोपाल भाई के पिता) से कहा मोहन लाल (भाऊ उम्र में बडे थे अतः काकू को नाम लेकर पुकारते थे।) यह आपका लड़का जमरेही पढ़ने जाता है तो इसे हमारे गाँव भेजो दोनों साथ–साथ पढ़ेंगे, और फिर क्या था गोपाल जी व मैं विलगाँव स्कूल में कक्षा एक में पढ़ने लगे।

प्राइमरी स्कूल में हम लोग कक्षा पांच तक साथ–साथ पढ़े। तब स्कूलों में पीने वाले पानी की व्यवस्था नही थी आप मेरे घर जाकर पानी पीते थे। गोपाल भाई दीदी (माँ) के हांथ की पोई हुई गोरसी में कण्डे की आंच में पकी हुई मोटी चने गेहूं की रोटी व धनिया पत्ती की हरी चटनी लाते थे जिसे हम दोनों लोग साथ–साथ बड़े चाव से खाया करते थे। पांचवी के बाद मेरे पिताजी ने मेरे गाँव अजीतपारा में ही संस्कृत विद्यालय में मेरा नाम लिखवा दिया। गोपाल जी ने खुरहण्ड में 6वीं कक्षा में प्रवेश लिया। मैंने गोपाल जी को संस्कृत विद्यालय में पढ़ने हेतु अपने पिता जी से वाध्य कराया। खुरहण्ड से नाम कटवाकर गोपाल जी को संस्कृत विद्यालय में मेरे साथ लाया गया। गाँव की रामायण, कथा वाचना, कीर्तन मण्डली में भाग लेना, रामलीला में रामायण पढ़ना, नाटकों मे भाग लेना 6वीं कक्षा तक गोपाल जी का अच्छा अभ्यास बन गया था। एक साल बाद 7वीं कक्षा में हम दोनों बिछड़ गये मैं गाँव के संस्कृत विद्यालय

में रह गया और गोपाल जी खुरहण्ड मिडिल स्कूल में फिर से मिले। जुलाई 1955 में हम लोग पुनः अतर्रा हिन्दू इण्टर कालेज में कक्षा नौ में मिले। बारहवीं तक एक साथ पढ़े, एक साथ बैठे, एक साथ रहे। कालेज में हमारी दोस्ती विख्यात थी।

गोपाल भाई बचपन से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। संगीत गायन वादन में विशेष रुचि थी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में निरन्तर बढ़कर भाग लेते थे। प्राइमरी से इण्टर तक की प्रातः विद्यालय प्रार्थना का जिम्मा गोपाल भाई के जिम्मे रहता था। विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेते थे विद्यालयीय लोक गीत प्रतिस्पर्धा व नाट्य मंचन की प्रतिस्पर्धा में पुरुस्कृत होते थे।

विभिन्न वाद्ययंत्रों के कुशल वादन में बचपन से ही सिद्ध हस्त थे। सन् 1958 में गोपाल भाई के नेतृत्व में विद्यालय की टीम ने बांदा रैली में लोकगीत प्रस्तुत किया था जिसकी चतुर्दिक सराहना हुई। अतर्रा से इण्टर पास करने के बाद मैं प्रयाग बी0एस0सी0 पढ़ाई हेतु चला गया, गोपाल भाई का मलेरिया इन्फेक्शन के पद पर चयन हो गया। प्रयाग में मेरी साइकिल चोरी हो गयी मैने गोपाल भाई को सूचना दी जिस पर अपनी व्यक्तिगत परेशानी को दरकिनार कर मेरे लिए तुरन्त अपनी साइकिल भेज दी।

गोपाल भाई का जीवन दूसरों की परेशानी से अभिभूत हो जाता था और वह उसकी परेशानी को दूर करने का हर सम्भव प्रयास करते थे जो आज भी है। मैंने बहुत ही निकट से देखा है कि वह समाज में फैली विशमता, भेदभाव, ऊँच–नीच को दूर करने के लिए चिन्तशील ही नहीं रहते अपितु सभी प्रकार की सामाजिक विसंगतियों व कुरीतियों को जड़ से मिटाने में प्राण पण से लग जाते हैं।

भाई जी को मलेरिया विभाग की सरकारी नौकरी रास नहीं आई उन्हें तो वंचितो, असहायों का सहारा बनकर उनकी गरीबी, अशिक्षा, शोषण से मुक्ति दिलानी थी। अतः नौकरी छोड़कर अतर्रा में ही रहकर संघ की शाखा का संचालन बाल निकेतन विद्यालय में अध्ययन के माध्यम से राष्ट्र निर्माण के कार्य में लग गये। चित्रकूट स्थित जानकीकुण्ड में सदगुरु सेवा संघ में कार्य करते हुए ईश्वर की प्रेरणा मिली कि स्वतंत्र रुप से समाज सेवा का कार्य किया जाये जैसे कि भगवान राम ने स्वतः कहा है कि मैं बारह वर्ष चित्रकूट में रहा और कोल भील आदिवासियों ने मेरी बहुत सेवा की। वर्तमान में उनके ऊपर नाना प्रकार के अत्याचार, शोषण हो रहे हैं। ग़रीबी, भुखमरी, बीमारी, अशिक्षा उनकी नियति बन गई है। तुम मेरे प्रतिनिधित्व के रुप में उनके गाँव–गाँव, घर–घर जाकर उनके बच्चों व परिवारजनों का उत्थान करों, उन्हें सहारा दो, शिक्षा दो तथा स्वावलम्बी बनाने में योगदान दो। मन ही मन भगवान राम की ही आज्ञा समझकर मानिकपुर में कोल भीलों के मध्य अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की स्वतंत्र स्थापना की और जीवन सेवा में समर्पित कर दिया। वर्तमान में आप हम सभी उनके अनपेक्षित जीवन द्वारा किये गये जनकल्याण कार्यों के साक्षी हैं। अंत में उनके दीर्घायु होने और अनवरत लोकहित के नये कीर्तिमान स्थापित करने की मंगल कामना।

# जिनके सुझावों का लोहा मानती रहीं दानदाता संस्थाएँ

**डॉ. विनोद शंकर सिंह**
**पूर्व विभागाध्यक्ष**
**समाज कार्य विभाग**
**ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट**

मेरा चित्रकूट में आगमन 1993 में हुआ। नाना जी देशमुख द्वारा स्थापित महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट के समाज कार्य विभाग में प्रवक्ता पद पर चयनित होकर आया था। यहाँ आने के पश्चात् तत्कालीन अध्यापकों में डॉ0 रामचंद्र सिंह, डॉ0 अरूप कुमार गुप्ता एवं अन्य अध्यापको ने मुझे बताया कि यहाँ पर एक संस्था है जिसका नाम अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान है और इसके निदेशक श्री गोपाल जी हैं और इसके माध्यम से समाज कार्य के छात्रों का फील्ड वर्क कराया जाता है। उस समय इस संस्था का मुख्यालय मानिकपुर में था और बाद में रानीपुर भट्ट गाँव में स्थापित हुआ। इसी रानीपुर भट्ट के कार्यालय में मेरा छात्रों के साथ आना शुरू हुआ। प्रथम परिचय में आपका आत्मीय व्यवहार, छात्रों के प्रति स्नेह एवं ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्रति अटूट लगाव के कारण समाज कार्य विभाग एवं अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का एक अटूट रिश्ता बन गया। उस समय चित्रकूट में ऐसी कोई संस्था नहीं जहाँ छात्र–छात्राओं को फील्ड वर्क कराया जा सकता था। प्रसार कार्य तो नियमित रूप से गाँव में होते रहते थे लेकिन समाज कार्य के छात्रों को सीखने के लिए लैब का कार्य स्वयंसेवी संस्थाए करती हैं। इस प्रकार अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ग्रामोदय विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग की प्रयोगशाला बन गयी। यह कार्य गोपाल भाई जी के स्नेह एवं सहयोग के बिना संभव नहीं था। इसके बाद छात्रों को फील्ड वर्क हेतु मानिकपुर जाना शुरू हो चुका था। आपके साथ हम लोंगो का मानिकपुर ब्लाक के विभिन्न गाँवों में जाना हुआ। यह सब कुछ मेरे लिए एक नए अनुभव की बात थी। मेरे जीवन का

प्रारम्भ पूर्वांचल से हुआ। मेरी उच्च शिक्षा वाराणसी से हुई। पूर्वांचल का क्षेत्र मैदानी भाग है और वहाँ कृषि में उत्पादन भी अधिक था एवं पानी की कोई समस्या नहीं थी लेकिन जब गोपाल भाई जी के साथ हम लोंगो का मानिकपुर ब्लाक के गाँवों में जाना शुरू हुआ तब मुझे अन्य समस्याओं के साथ पानी की विकट समस्या का आभास हुआ। कोल आदिवासी समाज के दूर–दूर तक फैले गाँव, आवागमन के साधनों का आभाव, स्कूल एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, एक तरफ दबंग लोंगो का प्रभाव दूसरी तरफ डकैतों का दबाव कोल आदिवासियों के जीवन को छिन्न भिन्न किये हुए था। यह क्षेत्र मेरे लिए एक नया अनुभव प्रदान करने वाला था। जैसे जैसे इस क्षेत्र में आना जाना शुरू हुआ मेरी भी जीजिविशा बढ़ती गयी। गोपाल भाई जी इस क्षेत्र में एक आशा की किरण थे। इन कोल आदिवासी समाज का इनके प्रति निश्छल प्रेम इनके प्रति अटूट संबंधों को दर्शाता है। मुझे ज्ञात है कि गोपाल भाई जी को स्थानीय उच्च वर्ग के लोग स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर बहुत परेशान करते थे। स्थानीय लोंगो में ऐसा विश्वास था कि यदि गोपाल भाई जी ने स्थानीय कोल आदिवासी समाज को जागरूक कर दिया तो ये लोग हमारे लिए कार्य नहीं करेंगे और अपना अधिकार भी मांगेगे। उस समय शासन द्वारा जो ज़मीने आदिवासी समाज को पटटे के रूप में दी गयी थी उन सभी ज़मीनों पर स्थानीय दबंग एवं प्रभावशाली लोंगो का कब्जा था। आदिवासी समाज के पास मजदूरी एवं जंगल से लकड़ी लाकर उसे बजार में बेंचना और उसी से जीवन यापन करना उनकी नियति थी। उनकी मजदूरी की दर एक पाव निर्धारित थी। एक तरफ पानी एवं भोजन की समस्या थी तो दूसरी तरफ उनकी बहु बेटियाँ भी सुरक्षित नहीं थी। उनकी बहू–बेटियों को स्थानीय डकैत एवं दबंग लोगों का गठबंधन उन्हें जंगल की तरफ ले जाता था, उनके साथ दुराचार करता था और कुछ लोग उन्हें रखैल बनाकर रख लेते थे और उनके खिलाफ कोई बोल नहीं सकता था इस प्रकार उनके जीवन में मानवाधिकार नाम की कोई चीज नहीं थी। कोल आदिवासी समाज का जीवन निराशा, हताशा एवं भय के कारण बड़ी बुरी हालत में था।

इन सभी विसंगतियों के बीच एक तरफ चित्रकूट में नाना जी ग्रामीण पुनर्रचना हेतु ग्रामोदय विश्वविद्यालय की रचना कर रहे थे तो दूसरी तरफ गोपाल भाई जी एक कर्मयोगी के रूप में मानिकपुर ब्लाक में सामाजिक विसंगतियों को तोड़कर सामाजिक पुनर्रचना में लगे थे। दोनो कर्मयोगियों के प्रेरणा स्रोत प्रभु श्रीराम द्वारा चित्रकूट में किये गये कार्य थे। ऐसे कर्मयोगी का सानिध्य पाना मेरा भी किसी सौभाग्य से कम नहीं था। पाठा के कोल आदिवासी समाज की पुनर्रचना करनी थी। गोपाल भाई जी पाठा में संस्कार केन्द्रों के माध्यम से मानव निर्माण का कार्य कर रहे थे क्योंकि उन्हें ही तो अपने भविष्य का निर्माण करना था। जहाँ भय के कारण अध्यापक विद्यालयों में नहीं जा रहे थे वहाँ पर संस्कार केन्द्रों के माध्यम से नयी पीढ़ी का भविष्य का निर्माण हो रहा था। यह उनका अनूठा प्रयोग था जिसे जन समर्थन भी प्राप्त था और उसमें जनसहभागिता भी थी। प्रशासन के साथ मिलकर आदिवासियों के पटटा की ज़मीनों को वापस दिलाने का कार्य, मानवाधिकार की प्राप्ति हेतु अभियान, प्रशासन एवं स्थानीय लोंगों द्वारा आदिवासियों के शोषण के विरुद्ध समूर्ण पाठा में न्याय एवं समानता की प्राप्ति का बिगुल बज चुका था। स्थानीय प्रभावशाली लोग, प्रशासन में बैठे लोगों के साथ

मिलकर एक तरफ प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहे थे तो दूसरी तरफ इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने पर गोपाल भाई जी को रात दिन परेशान किये हुए थे। गोपाल भाई जी के निवेदन पर तत्कालीन जिलाधिकारी जगन्नाथ सिंह जी ने इस गंभीर प्रकरण को संज्ञान में लिया और संस्थान द्वार आदिवासियों को ज़मीन का पट्टा वापस दिलाये जाने के कार्यक्रम को अपना पूरा सहयोग दिया। यहाँ तक की आदिवासियों की जमीनों पर जिन दबंग लोंगो ने जबरदस्ती कब्जा किया था उन ज़मीनों पर बोई गयी खड़ी फसलों की नीलामी कराकर ग़रीबों को उनका कब्जा एवं हक़ दिलाया। यह तत्कालीन जिलाधिकारी एवं गोपाल भाई जी की संवेदनशीलता को प्रगट करता है। मुझे याद है कि आदिवासी समाज अपने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए गोपाल भाई जी के एक आवाहन पर मानिकपुर से हज़ारो की संख्या में चित्रकूट मुख्यालय पर एकत्रित होकर गाँधीवादी तरीके से धरना एवं प्रदर्शन द्वारा अपनी आवाज प्रशासन तक पहुचने का कार्य करते थे। उस समय प्रशासन में बैठे लोग इन्हें न्याय देने की बजाय नक्सलवादी का ठप्पा लगाकर शोषणकर्ताओं का ही समर्थन करते थे ।

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान चित्रकूट मेरे लिए भी एक प्रयोगशाला थी जहाँ गोपाल भाई जी, ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्रो0 जी0डी0 अग्रवाल, प्रिया के डॉ0 राजेश टंडन जी, सहभागी शिक्षण केंद्र लखनऊ के श्री अशोक भाई, जल जंगल जमीन के अगुवा श्री पी0वी0 राजगोपाल जी, उच्चतम न्यायलय से सम्बंधित श्री हर्षमंदर जी (पूर्वआई0ए0एस0) कॉलिन गोंजाल्विस अधिवक्ता उच्चतम न्यायलय, नयी दिल्ली जैसे अनेकों महान व्यक्ति गोपाल भाई जी के प्रयोग में अपनी–अपनी वैचारिक आहुति दे रहे थे। मैं भी अपने विद्यार्थियों के साथ इस प्रयोशाला के परिणामों से लाभान्वित हो रहा था। प्रतिदिन बहुत ऐसे प्रश्न उठते थे चाहे वे शिक्षा से सम्बन्धित हो, स्वयंसेवी संस्थाओं से सम्बंधित हों, समुदाय से सम्बंधित हों हमलोग इस प्रयोशाला में बैठकर उनका समाधान ढूंढते थे। स्व0 श्री भागवत जी संस्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे थे, हमलोग प्रायः शाम को बैठकर अनेकों अनसुलझे प्रश्नों का व्यावहारिक समाधान ढूंढा करते थे जिसका परिणाम सार्थक रहा।

श्री गोपाल भाई जी चित्रकूट में श्रध्येय नाना जी के बाद दूसरे ऐसे समाज सेवी हमारे बीच हैं जिनके पास समाज सेवा का अपार भंडार भरा पड़ा है, जिसकी इच्छा हो वह उनके पास जाकर उसका लाभ उठा सकता है, उन अनुभवों से ज्ञान प्राप्त कर सामाजिक पुनर्रचना में योगदान दे सकता है। गोपाल भाई जी हज़ारों कार्यकर्ताओं, युवाओं, छात्र–छात्राओं, स्वयंसेवी संस्थाओं, दानदाता संगठनों के प्रेरणास्रोत रहे हैं। बहुत सी फंडिंग एजेंसी अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों की रचना में परिवर्तन आपके सुझाव पर करती थी और आपके ज़मीनी अनुभवों का लोहा मानती थी।

यह कार्य गोपाल भाई जैसे सहनशील, विनम्र एवं धैर्यवान व स्नेही समाजसेवी द्वारा ही संभव था। ऐसे समाजसेवी के तिरासीवें बसंत के जीवन उत्सव के अवसर पर उनके मंगल जीवन की शुभकामना करता हूँ। इस चित्रकूट की पावन धरती पर बहुत कम में संख्या ऐसे समाजसेवी मिलेंगे।

# उनका वात्सल्य, उनकी प्रेरणा

**दद्दू प्रसाद**

**पूर्व कैबिनेट मंत्री, उ.प्र.**

लोक संत पूज्य गोपाल जी से मेरी पहली मुलाकात दिसंबर 1987 की एक शाम को अशोक की लाट बांदा में हुई थी। पाठा के शोशितों, पीड़ितों, हक–वंचितों कोल आदिवासियों के लिए उनकी जो कारुणिक पुकार थी उससे प्रभावित होकर मैं पाठा की तरफ खिंचा चला आया। 3 जनवरी 1988 को ग्राम चूल्ही मानिकपुर में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा एक चेतना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें मैंने भी भाग लिया और गोपाल जी के अंतस में बैठी हुई तड़पन और करुणा को मैं पहचान सका।

पाठा के कोल आदिवासियों के लिए उनकी लगन, तड़पन और समर्पण देख कर लोकहित में मैं भी समर्पित हो गया विगत पैंतीस वर्षों से यह समर्पण–संघर्ष यात्रा लगातार जारी है. उनके वात्सल्य प्रेम से मैं कभी भी वंचित नहीं हुआ। पूजनीय गोपाल जी आज 83 वर्ष के हो चुके हैं परंतु त्याग, बलिदान, चारित्रिक–पवित्रता, शीलवान व संयमित, प्राकृतिक जीवन–शैली ने उनके शरीर को तथागत बुद्ध के समान ही मजबूत बनाया है। आज भी वह पच्चीस वर्षीय युवा नज़र आते हैं। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व वात्सल्य प्रेम, करुणा और ममता से परिपूर्ण है। उनकी वाणी में नौजवानों को सच्चाई, ईमानदारी, संघर्ष व परिवर्तन के रास्ते पर चलने की प्रेरणादायक ओजपूर्ण शक्ति आज भी विद्यमान है.

सितंबर 1993 में मानिकपुर क्षेत्र से मेरी उम्मीदवारी निर्धारित होने के बाद भी मैं पीछे हट गया होता, यदि पूजनीय गोपाल जी का चार लाइन का पत्र मुझे नहीं मिला होता। उस

पत्र ने मेरे मन–मस्तिष्क में प्रेरणा जगाई और मैं पाठा क्षेत्र का ही होकर रह गया। मैंने गोपाल जी के निर्देशन में ही, जो बन सका वह संघर्ष किया। आदरणीय गोपाल जी ने पाठा क्षेत्र में 1987 से ही भारत माता शिक्षा संस्कार केंद्रों के माध्यम से शिक्षा जागृति और चेतना पहुंचाने का काम गाँव–गाँव में किया। जबकि उस समय दूर–दूर तक विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित प्राथमिक पाठशालाएँ स्थापित नहीं हुई थीं। चारों तरफ बंधुआ मजदूरी, बेगारी प्रथा अन्याय, अत्याचार का बोलबाला था। पाठा की अधिकांश आबादी घास–फूस की झोपड़ी में ही निवास करती थी। पूरी तरह से ''दादू साम्राज्य'' स्थापित था। आदिवासियों के पास कागज़ में ज़मीनों के पट्टे थे परंतु मौके पर उन ज़मीनों पर कब्जा दादू–दबंगों का ही था। भूमि हक़दारी कार्यक्रम के तहत 1995 में आदिवासियों को ज़मीनों पर कब्जा दिलाने का अभियान पूजनीय गोपाल जी के द्वारा चलाया गया। कोल आदिवासियों को तत्कालीन शासन–प्रशासन की मदद से उनकी ज़मीनों पर कब्जा मिला। शोषितों–पीड़ितों के लिए लगातार संघर्ष करना उनके स्वभाव में है। सच्चाई, ईमानदारी, त्याग, समर्पण बलिदान, कठोर परिश्रम, और सतत् संघर्ष उनके व्यक्तित्व के आभूषण हैं। उन्होंने अपने चारों पुत्रों डॉक्टर देशदीपक, कुलदीप, राष्ट्रदीप, जनदीप व इकलौती पुत्री कंचन दीदी को बेहतर परवरिश देकर उच्च शिक्षा दिलाई। उन्हें योग्य व लायक बनाया। मुझको भी गढ़ने–तराशने में पिता तुल्य गोपाल जी का ही बड़ा योगदान है। उनका वात्सल्य प्रेम मुझे हमेशा पुत्र के समान ही मिलता रहा है। आज हम उनके 83वें जन्मदिन के अवसर पर उनके सदा स्वस्थ रहने, दीर्घायु और यशस्वी होने की मंगल कामना करते हैं।

# खूब किया गोपाल भाई ने

**संतोष बंसल**

**पत्रकार, आज तक-चित्रकूट**

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड के अंतर्गत आने वाले चित्रकूट जनपद जहाँ एक शख्स की मेहनत, लगन, सोच और रणनीति ने लाखों लोगों को फसल उगाने के लिए खेत उनके बच्चों को पढ़ने के लिए शिक्षा के मंदिर और उन्हें बंधुआ प्रथा से मुक्ति दिलाई है। जी हां हम जिस शख्सियत की बात कर रहे हैं उनका नाम है गया प्रसाद गोपाल है। प्यार से चित्रकूट के आदिवासी उन्हें पिताजी कहकर पुकारते हैं। देश की आजादी के बाद जब गांधी जी ने समाज रचना के लिए लोगों से सामाजिक क्षेत्र में काम करने का आह्वान किया तो उनसे प्रेरित होकर गोपाल भाई भी समाज सेवा के क्षेत्र में कूद पड़े। ज्यादातर आदिवासी इलाके के दबंग लोगों के यहां बंधुआ मजदूरों के रूप में काम करते थे और मजदूरी के रूप में शाम को सवा पाव अनाज लेकर घर चले आते थे। गोपाल भाई ने इन परिस्थितियों को एक चुनौती के रूप में लेते हुए न सिर्फ आदिवासियों को बंधुआ मजदूरी से मुक्त कराया बल्कि इनकी जमीनों का चिन्हीकरण भी करवाया और जिला प्रशासन के सहयोग से आदिवासियों को लगभग 12 हजार एकड़ से ज्यादा जमीन पर कब्जे दिलवाए गए। लगभग पांच हजार आदिवासी परिवारों को ब ंधुआ मजदूरी से मुक्ति दिलाई गई। इतना सब कुछ करने के बाद गोपाल भाई को यह लगा कि अगर यह शिक्षित नहीं होंगे तो उनकी जमीनों पर फिर से दबंग कब्जा कर लेंगे। आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से मानिकपुर ब्लाक में दर्जनों की संख्या में बाल कल्याण केंद्रों की स्थापना की गई। इन केंद्रों में बच्चों को शिक्षित करने के साथ साथ बच्चों के माता–पिता को भी शिक्षा का महत्व समझाया जाने लगा।

# गोपाल जी का संगीत प्रेम

**पं. अवधेश द्विवेदी**

**देश के प्रतिष्ठित मृदंगाचार्य, कूदऊ सिंह घराना, बांदा**

*(पं0 श्री अवधेश द्विवेदी जी सुप्रसिद्ध मृदंगाचार्य पं0 श्री स्व0 झण्डीलाल जी के यशस्वी सुपुत्र हैं। स्वयं में संगीत के विश्वविद्यालय हैं, जिनसे जुड़कर नई पीढ़ी संगीत साधना कर पारंगत हो रही है। बड़ी संख्या में मृदंग वादक तैयार हुए हैं जो कुदऊ सिंह घराने तथा उनके पूज्य पिताश्री की संगीत परम्परा का चहुंओर मान बढ़ा रहे हैं–सं.)*

**श्री लल्लूराम शुक्ल जी के साथ तबले पर संगत करते हुए श्री अवधेश द्विवेदी**

वैसे तो संगीत की सत्ता–महत्ता को सुर, नर, मुनि सभी ने स्वीकारा है। क्योंकि संगीत गायन, वादन, नृत्य के संयोग को कहते हैं संगीत कला अपना प्रभाव जड़, चेतन दोनों पर छोड़ती है। पर हम यहाँ चेतन या चेतना की बात करते हुए कर्म योग पर आधारित नादयोग की सांगीतिक चर्चा कर रहे हैं। कोई एक ऐसे मां सरस्वती के वरद पुत्र हैं जिन्हे मां भगवती ने (शब्द, सुर, सम्पदा) देकर भौतिक जगत में भेजा और कहा कि सामाजिक सेवा का दायित्व निभाना है और कुछ चाहना हो तो बताओ। साधक ने माँ से अपने लिए कुछ नहीं माँगा पर अपनों के लिए बहुत कुछ माँगा, माँ एवमस्तु कह अंर्तध्यान हो गई। साधक और कोई नहीं माननीय भाई गोपाल जी ही हैं। श्री गोपाल जी को बालकाल्य से ही सांगीतिक संस्कार मिलने लगे थे। आपके मामा जो आवाज के धनी थे उनका गायन आप सुनते रहे। आपके गाँव में कुछ कृषक शास्त्रीय संगीत के गायक थे, उनका गायन सुनने का आपको नित्यप्रति अवसर प्राप्त था। आपकी सुमधुर आवाज सभी को अच्छी लगती थी। विद्यार्थी जीवन में भी आपकी सांगीतिक रुचि थी। कालांतर में आप शिक्षक बने। बाल निकेतन विद्यालय में आप शिक्षण कार्य किया। शिक्षा की नगरी, बाहुबलियों की नगरी, धनी पुरुषों की नगरी अतर्रा में आपके व्यक्तित्व

कृतित्व की चर्चा फैली, सफलतायें आपके आगे–आगे पर ईर्ष्या हंस की भांति पीछे–पीछे लगी रहीं। पर वे ईर्ष्या इस प्रकार थे कि जैसा रामचरित मानस में कहा गया है –

*बैर अकारन सब काहू सो। जो कर हित अनहित ताहू सो।।*

पर उन ईर्ष्या ईश करने वालों से मुठभेड़ करने के लिए आपके पास कोई शस्त्र नहीं था। पर हाँ श्री गोपाल जी के पास मधुर सांगीतिक आवाज़ व शास्त्रीय संस्कारित शब्द थे जो अभोध बाणों का काम करते हुए आपको सफलता दिलाते थे। समय–समय पर आपको साथी मिलते रहे संगीतज्ञ श्री लल्लूराम जी शुक्ल आपके कंधे से कंधा मिलाये रहे। कालांतर में श्री गोपाल जी बाल निकेतन भवदीय जनों को सौंपकर आगे बढ़े क्योंकि उन्हें बाल निकेतन ही नहीं युवा नेतृत्व दलित उद्वार, दीन दुखियों का प्रतिपालन और वयोवृद्धों की सेवा–सम्मान का भी उनके अंतहकरण में शुभ संकल्प था। अब आगे सामाजिक संरक्षण हेतु मानव समाज के कल्याण हेतु अनेक प्रकल्प योजनायें बनाई। सांगीतिक सभायें करके समाज को एकत्रित करना राग ईस ऊंच नीच का भेदभाव न रखकर सामाजिक जीवन व्यतीत करने का संदेश देते हुए, अपनी जीवन यात्रा कार्यान्वित रखी। भाई श्री गोपाल जी की **'संगीत'** उपासना रही पर उन्होंने मनोरंजन का फूहड़ संगीत कभी स्वीकार नहीं किया। उनकी उन सांगीतिक गीतों की उपासना रही जिनमें समाज को दिशा मिले, युवकों को प्रेरणा मिले, सामाजिक कुरीतियों को दूर किया जा सके। शिक्षा, स्वास्थ्य, समरसता संस्कारित समाज के निर्माण का संगीत उन्हें सदैव प्रिय रहा। आपने समाज की सेवा करते हुए सामाजिक दिशा की दशा बदलने हेतु अनेक संगीत संभावनाओं की संरचना की जो देश–प्रदेश व बुन्देलखण्ड की अखण्डता को प्रभावित करती है। जैसे – शास्त्रीय ध्रुपद, मृदंग सम्मेलन जिसमें विश्वविख्यात कलाकारों ने भारत जननी परिसर, चित्रकूट में आकर अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं। विराट कबीरी सम्मेलन भिन्न–भिन्न प्रान्तों के कबीरी भजन गायक आकर अपनी प्रस्तुतियाँ देकर अमिट छाप छोड़ी है। विशाल बुन्देली लोकलय कार्यक्रम जिसमें विभिन्न शैली की लोक गायन विधा, विभिन्न लोक वाद्‌य यंत्र व लोक नाट्‌य के माध्यम से सामाजिक जीवन शैली का संदेश भी गोपाल जी ने हम सबको दिलवाया। श्री गोपाल जी के प्रत्येक कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु संगीत ही होता है और संगीत ही उनकी सफलता का मूल मंत्र है। अनेक सभाओं में जहाँ विद्वान लोग काफी देर तक व्याख्यान देकर भी अपना असर श्रोताओं पर नहीं डाल पाते वहीं माननीय श्री गोपाल जी चन्द लाइनों के मधुर प्रेरणास्पद गीत गाकर समाज को प्रभावित भर ही नहीं कर देते बल्कि श्रोताओं को कर्त्तव्य पथ पर चलने को बाध्य कर देते हैं। यह है श्री गोपाल जी का संगीत प्रेम या सांगीतिक शस्त्र जो अमोध है। इसी सामाजिक सेवा में आपने 83 बसंत देखते हुए बिताये है। आज भी आप अपने लिए नहीं पर अपनों के लिए तन, मन, धन से सदैव तैयार रहते हैं। आपकी जीवन शैली सामाजिक सेवा की रही कभी भी आपकी सहधर्मिणी आदरणीया आपकी श्रीमती जी बाधक नहीं बनी, बल्कि साधक रहीं तभी आप अपनी कर्त्तव्य निष्ठा में सफल हो पाये। सम्बन्धों में भी आपका संगीत ने साथ नहीं छोड़ा और सांगीतिक ही मिले। जैसे आपके मामा श्री रामकृपाल गायक, आपके समधी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉ0 गोहदकर साहब, आपकी बहू विदुशी कोकिला कंठीय गायिका श्रीमती राजश्री गोहदकर आदि अनेक मित्र मंडली संगीतमय वातावरण में मिले। ऐसे परोपकारी, जनसेवी, उदार मन समाज में कभी–कभी जन्म लेते हैं। ऐसे कर्मयोगी, मनीषी भाई श्री गोपाल जी के उज्ज्वल एवं कीर्तिमय भविष्य की मंगल कामनायें।

*सामाजिक सेवा करते, हुए तिरासी साल। शत बसंत देखे नयन, श्रीयुत श्री गोपाल।।*

# जीवेत शरदः शतम्

**मंजू मिश्रा**
**प्रवासी भारतीय**
**अर्न्तराष्ट्रीय शिक्षाविद्, कवियत्री**
**सामाजिक कार्यकत्री**
**सैन फ्रांसिस्को, कैलीफोर्निया**

गोपाल जी जैसे कर्मठ व्यक्तित्व से परिचय होना मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व की बात है। 2017 में जब मैं पहली बार मिली थी गोपाल जी से तब मैंने देखा कि इनके कार्यक्षेत्र में क्या बच्चे क्या बड़े सभी इनको 'पिताजी' कहकर सम्बोधित करते हैं। पहले पहल तो बात कुछ समझ में नहीं आयी लेकिन फिर वर्ष दर वर्ष आपके साथ काम करते हुए मैंने यह जाना कि यह सही मायने में इस आदरपूर्ण सम्बोधन के सच्चे अधिकारी हैं। क्षेत्र के सभी रहवासियों का ख्याल यह एक पिता की तरह ही रखते हैं। चित्रकूट के पाठा आदिवासी क्षेत्र में पानी की समस्या हो या रोज़गार की, बच्चों की शिक्षा हो या महिला उत्थन की, क्षेत्र के समग्र विकास के लिए गोपाल जी सदैव प्रयासरत रहते हैं।

कुछ वर्ष पूर्व अपने परिवार में आर्थिक विषमताओं एवं विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ने की घटनाओं के बावजूद आपने हिम्मत नही हारी और लगातार देश विदेश की संस्थाओं तक पहुँचकर क्षेत्र के लोगों के लिए आर्थिक तथा अन्य संसाधन जुटाने से लेकर रोज दुर्गम रास्तों पर मीलों का सफर तय करके आदिवासी बच्चों के, उनके परिवार तक पहुँच कर उनके साथ समय बिताने, उनका उत्साहवर्धन करने के काम में लगातार लगे हुए हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि गोपाल जी दीर्घायु हों स्वस्थ रहें ताकि कोल आदिवासी क्षेत्र के लोगों को उनका आशीर्वाद एवं सहयोग यूँ ही मिलता रहे।

# परहित बस जिनके मनमाहीं

•

विमला श्रीवास्तव
शिक्षिका, प्रयागराज

12 अक्टूबर सन् 1989 का दिन मुझे आज भी याद है जब मैं पहली बार गोपाल भाई से कस्तूरबा ट्रस्ट में मिली। मुझे तो इतना ही पता था कि ये समाज सेवा संस्थान के निदेशक हैं। भाई जी के प्रथम वार्ता के दौरान दो प्रेरणास्पद पंक्तियाँ मुझे आज भी याद है –

**परहित बस जिनके मन माही।**
**तिन्ह कह, जग दुर्लभ कछु नाही।**

जो आज भी मुझे दूसरों के प्रति सहानुभूति प्रदान करने की प्रेरणा देती है। मैं इस चौपाई से अपरिचित नहीं थी, परन्तु भाई जी के सुन्दर शब्दों द्वारा अनोखा वर्णन सुनने पर दोहे का साक्षात्कार मेरी आत्मा से हुआ। भाई जी द्वारा लिखित तमाम पंक्तियों से मेरे जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया।

**पथ भूल न जाना पथिक कहीं,**
**पथ में तो काँटे होंगे ही।**
**संघर्ष क्षेत्र है विश्व यहाँ,**
**सिसकी भरना पागलपन है।**
**चुपचाप गरल पी लेना,**
**मुस्करा देना ही जीवन है।**

मैं रोक नहीं सकी, मैंने पूछा आपको समाज से अन्तिम व्यक्तियों की सेवा की प्रेरणा कैसे मिली? प्रश्न का पूछना ही था कि आँखे नम हो गयी व बोले **''विमल''** मैने समाज के नंगे, भूखे, अशिक्षित, शोषित एवं उत्पीड़ित असहायों को देखा है। समय किस तीव्र गति से निकलता जा रहा है यह आज समझ में आया। पिता जी की कीर्ति को कभी शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

तब मैं अपने आपको उस समय बहुत ही असहाय एवं लाचार महसूस करती थी लेकिन पिता जी से मिलने के बाद जो प्रेरणा एवं ऊर्जा प्राप्त हुई वो आज भी एक अदष्य शक्ति के रुप में मेरे अन्तः कर्ण में विराजमान है। मैं ऐसे महान व्यक्तित्व वाले समाजसेवी एवं आदर्शवादी व्यक्ति परम आदरणीय पिताजी के प्रति सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ एवं परम् पिता परमेश्वर से उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करती हूँ।

# जिनके सदृश दूसरा कोई सहयोगी न मिला

**जगन्नाथ सिंह (आई.ए.एस.)**
**पूर्व जिलाधिकारी, चित्रकूट**

मैं वर्ष १६६७ से २००२ तक लगभग पांच साल जिलाधिकारी चित्रकूट के पद पर पदासीन रहा था। इस अवधि में आदरणीय नानाजी देशमुख का मार्गदर्शन एवं संरक्षण, कामतानाथ मंदिर के मुख्य पुजारी आदरणीय पुरुषोत्तम दास जी, नादी हनुमान मंदिर के प्रभारी आदरणीय राम कृष्णदास जी, आदरणीय पंजाबी भगवान जी तथा अन्यान्य सन्त गणों के आशीर्वाद तथा गोपाल भाई आदि प्रमुख समाजसेवियों का सहयोग पाकर मैं चित्रकूट में कुछ उल्लेखनीय कर पाया था।

गोपाल भाई एक सहयोगी के रूप में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुए थे। चित्रकूट के दुर्गम स्थानों तक वह इस कारण मुझे पहुँचा सके थे, क्योंकि वह यहाँ के एक–एक इंच भूभाग से भलीभांति परिचित थे। वह एक संवेदनशील कलाकार होने के कारण मेरी धर्मपत्नी डॉ0 मधुरिमा सिंह के भी बहुत प्रिय थे। मेरी पत्नी साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक अभिरुचियों के कारण मुझसे अधिक समय गोपाल जी के सानिध्य में रहती थी। गोपाल भाई मेरे प्रशासनिक कार्यों में सहयोग तो करते ही थे, सघन वनों के भीतर अदभुत भोजन भी प्राप्त कराते रहते थे। एक बार तो इन्होंने इतनी मोटी रोटी 'अमरावती रोटी' खिलायी थी कि उसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति घबड़ा जायेगा क्योंकि एक रोटी के चौथाई हिस्से से अधिक कोई खा ही नहीं सकता था। शबरी प्रपात को खोजने व इसके नामकरण का सौभाग्य मुझे मिला तो गोपाल

श्री रामकुमार वर्मा (पूर्व सहकारी मंत्री), श्री जगन्नाथ सिंह (पूर्व जिलाधिकारी), श्री भैरों प्रसाद (पूर्व सांसद) के साथ सहभोज

भाई ने वहाँ बेर के बहुत सारे पौधे रोप दिया था, जिससे यह स्थान वस्तुतः शबरी का आश्रम लगने लगा था। मेरी पत्नी कवियत्री थीं और उनके द्वारा प्रायः कवि, गोष्ठियाँ और कभी कभी कवि सम्मेलन भी आयोजित करती रहती थीं, जिसमें गोपाल भाई की सक्रिय भूमिका तथा सहयोग रहता था। भारत जननी परिसर रानीपुर भट्ट एक सांस्कृतिक केंद्र बन गया था, जहाँ प्रायः गीत– संगीत का कार्यक्रम होता रहता था और मैं सपत्नीक इसका साक्षी बनता रहा हूँ। साक्षरता अभियान मेरे कार्यकाल की एक सफल व उल्लेखनीय उपलब्धि थी, जिसके लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री आदरणीय अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा मुझे विज्ञान भवन नई दिल्ली में भारत के सर्वश्रेष्ठ जिलाधिकारी का सम्मान प्रदान किया था। गोपाल भाई ने महीनों–महीनों तक इस अभियान में भी अपना सक्रिय व मूल्यवान योगदान दिया था।

पाठा क्षेत्र में गर्मियों में लू लगने से पक्षियों के गिरकर मर जाना एक आम बात थी, जिसके परिप्रेक्ष्य में मैंने युद्ध स्टार पर बृहत वृक्षारोंपण अभियान अभिनव तरीके से चलाया था, जिसमें पूरा जनपद सहयोगी की भूमिका में था। यह साक्षरता के बाद दूसरा सबसे बड़ा अभियान था। इस अभियान में भी गोपाल भाई सहित अनेक स्वयंसेवी संगठन मेरे साथ सक्रिय सहयोगी के रूप में खड़े थे। मेरे पूरे सेवा काल में आम जनमानस में गोपाल भाई सदृश दूसरा कोई सहयोगी नहीं मिला। मैं उनके उज्जवल भविष्य और शतायु होने की कामना करता हूँ।

# ‘गांव का पैसा गांव में, शहर का पैसा गांव में’
## यह ध्येय वाक्य व्यवस्था का आचरण बने : गोपाल भाई

### समाजसेवी गोपाल भाई से सामाजिक कार्यकर्ता अर्चन की बातचीत

● *माता–पिता की पारिवारिक ग़रीबी और ग़रीबी की हिम्मत के कौन से दृश्य भुलाये नहीं भूलते?*

भोजन का अभाव। भोजन, शिक्षा, वस्त्र का पिता द्वारा जुगाड़।

● *बाल गोपाल को गुणवंत विद्यार्थी बनाने वाले कौन–कौन थे?*

श्री रामऔतार शास्त्री (पालदेव), श्री भगवती प्रसाद खरे (बिलगाँव), श्री केदार (विगहना), श्री रामबहोरी कुशवाहा (विगहना)।

● *युवा गोपाल के सपने क्या थे? क्या न हो पाने की कसक रह गई?*

अन्याय का प्रतिकार, दो जून का भोजन। गाँव को अपना न बना पाया।

● *युवा गोपाल ने कैसा समाज देखा? किन–किन सामाजिक आघातों का सामना किया?*

शोषण, उत्पीड़न, अन्याय, अत्याचार का शिकार, लाचार समाज को देखा है। जातीयता का दंश, श्रेष्ठता का दंभ पग–पग झेला है।

● *समाज कर्म की यात्रा में धर्मपत्नी के किस तरह के महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख करना चाहेंगे?*

बच्चों को तिल–तिल जोड़ कर पाला, मुझे कभी किसी काम से रोका नहीं। संकटकाल में दुश्मनों के सामने दुर्गा बनीं। आपातकाल में संकटमोचक बनीं।

● *कभी पीछे मुड़कर देखा कि अपनी संतति को क्या देना शेष रह गया?*

संतति की शिक्षा का काम अधूरा रहा, भौतिक सुविधा अपने काल में नहीं दे पाया।

● *आपके गुरू कौन हैं? उनके बारे में कुछ उल्लेखनीय?*

परम्परागत गुरु कोई नहीं। सामाजिक जीवन के गुरु डॉ रूद्रभूति (कर्नाटक), श्री प्रेमभाई (वनवासी सेवा आश्रम, सोनभद्र)

● *किस–किस महापुरूष ने आकर्षित किया? वे ग्रंथ, पुस्तकें जिन्हें आपने बार–बार पढ़ा?*

चन्द्रशेखर, भगतसिंह, स्वामी विवेकानन्द, राम, कृष्ण। रामायण, क्रान्तिकारियों का इतिहास, लाल रेखा।

● *परिवार और गाँव से क्या लेकर और क्या छोड़कर समाज के लिए निकलना पड़ा?*

परिवार का विश्वास, गाँव का प्यार पाया तथा वह सदा साथ रहा। परिवार का आर्थिक उन्नयन प्रयास छोड़कर, नियति का बंदी बन कर चलता रहा–चलता रहा।

● *समाज–कार्य की आरंभिक चुनौतियाँ क्या थीं? कैसे पार हुए?*

क्रमशः 1–संसाधनों का सदा अभाव रहा।

2– समर्पण भाव से साथ देने वालों का सदैव गौरवपूर्ण संसार रहा।

● *पाठा के दादू–दबंगों से जूझने के लिए क्या औकात थी आपके पास?*

आत्मबल, आतंक से जूझने की सहज प्रवृत्ति।

● *वह कौन सी युद्ध–नीति थी जिससे दादू–दबंग दबे–कुचले समाज के समक्ष परास्त हुए?*

अन्यायी में आत्मबल का अभाव होता है। शोषित समाज को विश्वास योग्य जब आधार मिल जाता है, वह अजेय बन जाता है। शोषित को मेरा प्यार मिला है।

● *शोषितों–पीड़ितो–वंचितों के लिए आपके द्वारा लड़े गए प्रमुख युद्ध कौन–कौन से हैं?*

1–पाठा की अजेय शक्ति के साथ प्रथम टकराव, सुखरामपुर, हरिजनपुर। उन्हें मजदूरों से क्षमा मांगनी पड़ी। साक्षी बने तत्कालीन जिलाधिकारी बाँदा टी0 ब्लाह

2–जिलाधिकारी बाँदा,ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट कर्वी से सीधा मतभेद। उनके षडयन्त्र को विफलता मिली

3–बहिलपुरवा का दुवसिया काण्ड

4–जिलाधिकारी बाँदा "नालायक जिलाधिकारी बाँदा" काण्ड

5–कर्वी में सम्पन्न आन्दोलन को हिंसक होने से बचाया गया।

6–40 दिन की क्रमिक भूख हड़ताल भूमि माप आदि के सन्दर्भ में

7–छोटेलाल कोल की हत्या के विरोध में विराट आन्दोलन तथा प्रतिकार अभियान आदि, आदि।

● *दादूलैण्ड पाठा में दादुओं के अत्याचार के कुछ प्रमुख किस्से कृपया उद्धृत करें, जो आपके मानस–पटल में संचित हों।*

कर्ज़ के बदले व्यक्ति को जबरन पकड़कर काम, बंधुआ मजदूरों को जानवरों की तरह बांधकर ले जाते थे। बंबिहा, कुसमुही का बाबूलाल मवइया एक दादू के यहाँ गुलाम था, एक दिन बुखार के कारण काम पर नहीं गया, दादू ने जबरन पकड़कर बुलाया 102 डिग्री सेन्टीग्रेट बुखार था, रास्ते में खुद को छुड़ाया, एक करिंदे को पटक दिया, करिन्दे ने कहा मवइया होकर मुझसे लड़ रहे हो। पेड़ में बांध दिया वह बंधा रहा बुखार से तड़पता रहा।

जिस कोलबाला ने सुन्दर बदन पाया, वह अपना जीवन नहीं जी पाई, किसी न किसी दादू की रखैल बनी, चमक–दमक समाप्त होने पर लात मार कर निकाल दी गई। कुछ कोल बालाओं को अत्याचार के विरूद्ध हिंसक भी बनना पड़ा, जो अज्ञात इतिहास के पन्नों में हैं।

सुअरगढ़ा की एक कोल बाला को विवाह के तुरंत बाद एक दबंग दादू पकड़ लाया, न घर जा पाई न ससुराल रह पाई। दबंग की हविश का शिकार होती रही, बच्चे पैदा हुए, बड़े हुए अपने ही घर पर मजदूर बनकर जीने लगे। बाप ने अपने ही बच्चों के नाम मनमाना लोन लिया। बाप सवर्ण था, बच्चों को हरिजन बनाकर लाभ लिया। बैंक का लोन न भरने के कारण बच्चों को ही जेल भिजवाया। जेल से आने के बाद माँ–बेटों को वह घर छोड़ना पड़ा जिन्हें वे अपना मानते थे।

अपने गुलाम कोलों के नाम ज़मीन के पट्टे लिए गये, उस ज़मीन का उत्पादन खाते रहे, इतना ही नहीं उनकी भूमिधरी ज़मीन पर दबंगों का ही कब्जा रहा, हजारों–हजार एकड़ ज़मीन।

- *दादूशाही क्षीण होते–होते, अब कितनी? किस रूप में बची है?*

पुरानी प्रथा समाप्त है, लोग बराबरी में खड़े होने लगे हैं, मुंह खोलना सीख लिया मुट्ठी बांधना सीख लिया। लेकिन थाने, बैंक, विभागों में दलाली कर, तिकड़म कर ग़रीबों को फंसाते, आफतों में डालते रहते हैं।

*पाठा के कोलों के जीवन को बदलने में शिक्षा सहित जल, ज़मीन–जंगल के तमाम प्रश्नों का समाधान किया गया, कृषि के साथ जोड़ा गया। नवचेतना का संचार हुआ। अहसास शून्य लोग बोलने लगे, स्थिति पूर्व को देखते हुए संतोषजनक है किन्तु, सबके साथ दौड़ने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक काम करने की आवश्यकता है।*

● *पाठा के कोल आदिवासियों के जीवन को बदलने के लिए क्या–क्या करणीय मानते हैं? क्या–क्या हुआ? क्या अभी शेष रह गया?*

पाठा के कोलों के जीवन को बदलने में शिक्षा सहित जल, ज़मीन–जंगल के तमाम प्रश्नों का समाधान किया गया, कृषि के साथ जोड़ा गया। नवचेतना का संचार हुआ। अहसास शून्य लोग बोलने लगे, स्थिति पूर्व को देखते हुए संतोषजनक है किन्तु, सबके साथ दौड़ने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक काम करने की आवश्यकता है।

● *आपके 'रचना और संघर्ष' को खूब जाना गया, अभी कौन सा संघर्ष, कौन सी रचना योजना में है?*

अब जीवन के शेष दिनों में मानवीय चेतना से संपन्न होकर युवा–युवती नेतृत्व की भूमिका में समर्पित होकर खड़े हो सकें, रचना और संघर्ष का काम कर सकें,इतनी ही एकमात्र आस मन में पल रही है।

● *रचना और संघर्ष की अपनी दीर्घ यात्रा में किन–किन सहयोगियों का उल्लेख करना चाहेंगे?*

रचना और संघर्ष के क्षेत्र में जिन–जिन का आत्मीय समर्थन, समर्पण, निष्ठा, प्रेरणा, सहयोग प्राप्त हुआ है, ऐसे बहुत सारे नामों में से कुछ नाम उल्लेखनीय हैं, सर्वश्री राजाभइया सिंह, लल्लूराम शुक्ल, विद्यासागर बाजपेयी, हजारी सिंह 'पंकज', राजाबुआ उपाध्याय, शिवमंगल बाबा, सरस्वती, माया साकेत, विमला श्रीवास्तव, मीनू, संजो कोल, बूटी कोल, मातादयाल, रामकिशोर, राजन कोल, कुबेर कोल, भीम कोल, छोटेलाल कोल, उत्पला दास, रामकिशोर मवई, रामविश्वास, बाबूलाल मवइया, गजेन्द्र, भूरा कोल, श्यामा, जोगा, भारत डोगरा, संतोष निगम, अशोक निगम, जमुना प्रसाद बोस, सांसद अम्बिका प्रसाद पाण्ड़ेय, जगन्नाथ (पूर्व विधायक बाँदा), शिवरसन, हजारी कोल, टिल्लन जी, संदीप रिछारिया, संतोश बंसल, सत्यनारायण मिश्रा, छोटेलाल कोल, संतोष कोल, गप्पी बाबा, प्रेमभाई वनवासी सेवा आश्रम, डॉ0 देशदीपक, भागवत जी, इरशाद अहमद, उमाशंकर तिवारी, द्वारिका प्रसाद पाटोदिया। कला (मोटवन), आरती श्रीवास्तव आदि आदि के योगदान से ही रचना और संघर्ष की यात्रा फलीभूति हुई।

● *पाठा में डकैतों की उत्पत्ति के मूल कारण क्या मानते रहे हैं? गिरोहों में कोलों को जाने से रोकने में क्या आप असफल रहे?*

प्रायः सामाजिक विसंगतियों के कारण लोगों को हताश–निराश हो करके व्यवस्था के विरोध में डकैत बनना पड़ा। ज्यादातर डकैतों के ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें न्याय नहीं मिला वे विद्रोही बने। लम्बे कालखण्ड तक कोल परिवार डकैत बनकर सामने नहीं आये किन्तु बाद के दिनों में फर्जी मुठभेड़ में कोल नौजवानों को मारा गया। तब मात्र एक कोल जवान का असामाजिक दल न्याय के लिए, स्त्रीधन की रक्षा के लिए डकैत बनने को मजबूर दिखा।

● *दस्युओं के आत्मसमर्पण और उन्मूलन में आपका क्या योगदान रहा?*

1983–84 के आसपास ददुआ के गुरु गया बाबा के समर्पण कराने की योजना बन चुकी थी। डॉ0 सुब्बाराव जी का नैतिक समर्थन भी था किन्तु तत्कालीन सरकार के बाँदा जनपद के जनप्रतिनिधियों ने मा0 मुख्यमंत्री को इस आयोजन में सम्मिलित न

होने के लिए मना लिया, क्योंकि यदि वे सम्मिलित होते तो राजनैतिक स्वार्थों के लाभ से वंचित होते।

- *देश की शिक्षा प्रणाली पर आपकी आपत्तियाँ क्या हैं? नीतिगत व्यावहारिक सुझाव क्या हैं?*

प्राथमिक शिक्षा के सर्वाधिक विद्यालय गाँव में हैं। शिक्षा से जुड़े हुए शिक्षक ज्यादातर सब प्रकार से समृद्ध परिवारों से हैं। शिक्षा क्षेत्र में लगे हुए ऐसे शिक्षकों की रुचि ग़रीब परिवार के बच्चों के शैक्षिक विकास में आज भी नहीं है। इस प्रवृत्ति का सर्वाधिक शिकार जनपद का पठारी क्षेत्र है। इसीलिए उच्च शिक्षा से जुड़े हुए आदिवासी कोल बच्चे कहीं नहीं पाये जाते।

मैं पूरी ईमानदारी से कह सकता हूँ कि विपन्न, उपेक्षित परिवारों के बच्चों के विकास में वर्तमान शिक्षा सफल नहीं है। शिक्षक जगत की प्रवृत्ति में बदलाव होना चाहिए, वो दिन अभी दूर हैं। भवन की चमक–दमक से शिक्षा की गुणवत्ता नहीं सुधरेगी, आवश्यकता है, शिक्षकों के भाव–विचार में परिवर्तन की।

- *पाठा में जल संकट (पेयजल एवं सिंचाई) के स्थायी निदान के लिए क्या–क्या किया जाना चाहिए?*

जो बूंद जहाँ गिर रही है, उसे वहाँ ही स्थान मिलना चाहिए। जब तक ऐसे सार्थक प्रयोग नहीं होंगे। अमृत महोत्सव की तरह शत वर्ष महोत्सव में भी हम इसी स्थिति का सामना करेंगे। पानी पर जो योजनाएं हैं, उनमें बेइमानी न हो।

- प्राकृतिक खेती पर आपके करणीय नए विचार क्या हैं?

गाँव का पैसा गाँव में, शहर का पैसा गाँव में, जब तक यह नारा, यह ध्येय वाक्य व्यवस्था का आचरण नहीं बनेगा तब तक किसान नित्य दुर्गति की ओर बढ़ेगा, गाँवों से और अधिक पलायन होगा, धीरे–धीरे गाँव खाली होंगे। एक मात्र समृद्धि का, स्वास्थ्य का, पर्यावरण का, सुखी जीवन का अगर कोई मार्ग है, वह है गो–आधारित कृषि। गोवर्धन के बिना इन्द्र के प्रकोप से नहीं बच सकते हैं। वैश्विक तापमान के नियंत्रण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी है।

- *लोक–कलाओं को कैसे बचाया जा सकता है?*

लोक–विधाओं, लोक–कलाओं को बचाने के लिए वर्तमान सरकार ने यथोचित प्रबंध किए हैं किन्तु अभी भी, संस्कृति विभाग की जड़ता, संस्कृति विभाग की पूर्व संस्कृति ने योजनाओं को बेड़ियों में जकड़ रखा है। जब तक भ्रष्टतंत्र रहेगा,कार्य का ठीक–ठीक मूल्यांकन नहीं होगा, जब तक लोकमंगल का यह पवित्र क्षेत्र अपनी गरिमा को नहीं पा सकेगा।

- *समाज के विकृत मानव कैसे ठीक हो सकते हैं?*

अक्षर ज्ञान, विषयवस्तु का ज्ञान, हुनर आदि से मानव तमाम ऊँचाईयों को पार करते हुए चंद्रलोक तक पहुंच रहा है। इसके बाद भी एक भी ऐसा संबंध नहीं है, जहाँ निरंतरता पूर्वक सुख–शांति–समृद्धि के दर्शन होते हों। ज्ञानी, ध्यानी मानव के सामने क्यों जीना है? कैसे जीना है? का बड़ा संघर्ष आज भी विद्यमान है। रहस्यवाद, गुरुवाद, अवतारवाद, के मकड़जाल में परिवार से लेकर विश्व स्तर तक देश, विदेश, संघर्ष, युद्ध के बादलों से आच्छादित है। इसलिए आज ऐसी समझ की आवश्यकता है जो मानवीय चेतना से संपन्न हो, संबंधों की पहचान हो तालमेल का सागर हो और यह सब केवल और केवल मानवीय चेतना संपन्न शिक्षा से ही संभव हो पाएगा।

# 12 हज़ार एकड़ ज़मीन भू-माफियाओं से कोलों को दिलाकर ही माने गोपाल भाई

● गजेन्द्र
**सामाजिक कार्यकर्ता, मानिकपुर**

*(25–30 सालों में दुनिया बदली लेकिन पाठा के गाँव गुरौला के गजेन्द्र भाई बिल्कुल नहीं बदले। न मन से, न तन से, न धन से और न जीवन से । अभाव और सादगी को दामन से अलग नहीं किया। 24 घण्टे गाँव के ग़रीब गुरबों के लिए जिया। 24 कैरेट सामाजिक कार्यकर्ता हैं। अपने सहकर्मी सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच लेखपाल, दरोगा, वकील सबकुछ माने जाते हैं। उनके बराबर का 'लिक्खाड़' सामाजिक कार्यकर्ता दूसरा कोई ढूढ़े नहीं मिलेगा। गिनीज बुक आफ रिकार्ड वालों की नज़र पड़ती तो गजेन्द्र भाई ग़रीबों की अर्जियाँ लिखने वालों में विश्व रिकार्ड में दर्ज होते। बुन्देलखण्ड में अन्त्योदय के लिए कारगर जनपैरवी कर रहे हैं। –सं.)*

संस्थान का उदय जिस विचार और संकल्पना के साथ हुआ था वही विचार कार्यरूप में दिखाई देने लगा। संस्थान के कार्यकर्ता गाँव–गांव जाकर जब ग़रीब कोल परिवारों के दुःख दर्द को समेटना चालू किया तब पाया कि गाँव के सभी कोल परिवार किसी दादू–दबंग परिवारों के यहां 5 पाव अनाज की मजदूरी में बच्चों सहित बन्धुवा हैं। घर का मुखिया हलवाही कर खेती बाड़ी की देखरेख और सुरक्षा के सारे इन्तजाम में सुबह से शाम तक लगा रहता है। पत्नी घर के झाड़ू–पोछा से फुरसत होकर खेत की निराई गुड़ाई करती। बच्चे दबंगों के माल–मवेशियों को चराते और सुबह शाम का बासी भोजन खाकर उनके बच्चों के फटे पुराने कपड़े पहनकर अपना जीवन यापन करते। न तो पति–पत्नी को कहीं आने जाने की छूट थी न बच्चों को खेलने कूदने, पढ़ने–लिखने की कोई आज़ादी थी। काम करते–करते यदि कोई

सदस्य बीमार हो जाता या बच्चों की शादी–विवाह में कुछ खर्च करना होता तो इन्हें अपने मालिक का मुँह ताकना–झांकना पड़ता था। मालिक यदि रहम करता तो पैसे देने के बाद वह इस पैसे को कर्ज़ के रुप में लिख लेता। ये कर्ज़ फिर इतना बढ़ जाता कि इस कर्ज़ को पिता भरता फिर उसके मरने के बाद बेटा भरता, बेटे के बाद वह कर्ज़ नाती के सिर मढ़ दिया जाता। यह कर्ज़ भरने में उनकी तीन–तीन पीढ़ियाँ खप जाती थी लेकिन कर्ज़ कभी खत्म नहीं होता था। दबंगों ने सम्पत्ति की तरह कोलो के गांव बांट रखे थे और अपने गांव से वह किसी मजदूर को बाहर नहीं जाने देते थे न ये किसी अन्य दबंग के गांव से बिना उनकी अनुमति मजदूर ला पाते थे। यदि कोई मजदूर इस घुटन भरी ज़िन्दगी से भाग कर कहीं अन्य गांव चला भी जाता तो दबंग उस गांव के दबंग से मिलकर जबरन बन्धुवा मजदूर को बांधकर जानवरों की तरह टाँग कर अपने गाँव ले आता था और ऐसा दण्ड देता था कि उस घटना को देखकर कोई अन्य मजदूर काम छोड़कर दुबारा गाँव से न भाग सके। मजदूर वर्ग चुपचाप इस अन्याय को सहन करने के अलावा कोई प्रतिरोध नहीं कर पाता था। प्रशासन दबंगों का ही गुलाम था। वे जो तथ्य प्रशासन के सामने रखते वही प्रशासन मानने को मजबूर होता था।

आदिवासी यहाँ पर ज़िन्दा चलती फिरती एक लाश के समान थे। इनका तन, मन और जीवन पूरी तरह दबंगों के हाथ था। इनका शरीर और ज़मीर दोनों बन्धुवा थे। दबंग इतना अत्याचार करते कि इनकी पत्नी, बहू बेटी सभी के साथ जो मन आये वही करते थे। रखैल की तरह कुछ दिन भोग–उपयोग करने के बाद फिर उन्हें बच्चों के सहित फेंक देते थे। बिना बाप की औलादें अपनी माँ के कुनबे में पलते बढ़ते और उन्ही की परम्परा में जीने के लिए रच बस जाते। जैसे सुअरगढ़ा की तेरसिया, हाता गाँव की बिटटन, नई बस्ती की लालमनी, मनगवां की बुधिलिया, आदि महिलाएं आज भी अपने गाँव में साक्ष्य के तौर पर मौजूद हैं।

संस्थान ने इस पीड़ा से आहत होकर सबसे पहले इन्हें बन्धुवा मुक्त कराने हेतु लोगों को एकजुट करना शुरु किया। गाँव–गाँव पाँच–पाँच लोगों की कमेटी बनाकर पंच परम्परा की नींव डाली। इन्हीं के साथ उठना बैठना, मिलने–मिलाने का काम शुरु किया। जब हर गांव में पंच परम्परा की व्यवस्था बन गई तब सभी गांव के पंचों के साथ एक बडी मीटिंग की गई। बैठक में बन्धुवा जीवन से मुक्ति पाने का उपाय बताया गया। पीडित कोल परिवार तो पहले से ही अपनी जिन्दगी बदलने के लिए झटपटा रहे थे। सभी लोगों ने एकजुट रहने का संकल्प लिया और अहिंसात्मक तरीके से लडाई लडने की रणनीति तैयार की गई। रणनीति का पहला हिस्सा था कि एक बड़ा आन्दोलन प्रशासन के सामने किया जाए ताकि अपने सभी कोल परिवारों का आत्मविश्वास जाग उठे। उन्हें लगे कि वह अकेले नहीं हैं कोई और भी है जो हर परस्थिति में उनका साथ देने को तैयार है। आन्दोलन में पहली बार कुछ अपने अधिकार की बात जानेंगें, कुछ बोलना सीखेंगें। अपने लोगों का भय दूर कर उन्हें एकजुट रखेगें। मीटिंग समाप्त होने के बाद गांव के पंचों ने लोगों को तैयार करके आन्दोलन की तारीख तय किया और एक बड़ा आन्दोलन कर्वी तहसील में किया गया। आन्दोलन में उठी मांगों को मीडिया जगत ने खूब प्रचारित–प्रसारित किया। प्रशासन के कान खड़े हुए उनमें जांच कमेटी गठित हुई और बन्धुवा मजदूरों को मुक्ति दिलाने का काम शुरु हुआ। पहली बार साढ़े सात हजार

लोग बन्धुवापन से छूटकारा पाये। बन्धुवा मजदूरों को प्रशासन पुर्नवास हेतु बकरी भी बांटा। लोग स्वतंत्र होकर नजदीकी शहरों व गाँव में खुल्ला मजदूरी करने लगे लेकिन सवाल अभी इनकी स्थायी आजीविका दिलाने का बाकी था जिसके लिए गोपाल भाई ने अपने कार्यकर्ताओं के साथ ग्राम प्रधान और लेखपालों से मिले। कागज के अन्दर दफन अभिलेखों के राज उगलना शुरु किये। उनसे पता चला कि इन बन्धुवा मजदूरों के नाम जमींदारी उन्मूलन के बाद दबंगों ने अपनी जमीन बचाने के लिए इनके नाम कर दिया है या ग्राम समाज की ज़मीन हड़पने के लिए पट्टे करवा कर अपने कब्जे में ले रखा है। प्रशासनिक कर्मचारियों का ये संकेत जुझारु टीम के लिए काफी था। गोपाल जी का आदेश हुआ कि एन–केन किसी प्रकार से लेखपालों से अभिलेख की प्रति तैयार की जाए या कोल परिवारों का नाम व रकबा नं0 और जमीन का क्षेत्रफल हासिल किया जाये ताकि उसकी सूची बनाकर प्रशासन को सौंपकर उन्हे ज़मीन नाप कर कब्जा दिलवाने के लिए बाध्य किया जाये। यदि शोषित बंचित पीड़ित परिवारो को हम ज़मीन से जोड़ पाते हैं, तो यह उनके लिए सबसे बडी स्थायी आजीविक होगी। कार्यकर्ता एक रणनीति बनाकर मिशन में लग गये और उसे गाँव की मीटिंग बैठक में पढ़कर लोगों को बताना शुरु किए। कोल परिवारों को यह सुनकर बहुत बड़ा आश्चर्य हुआकि उनके बाप दादा के नाम 14–14 बीघे की ज़मीन है। लोगों की मानसिक तैयारी के बाद संस्थान ने लगातार धरना प्रदर्शन के माध्यम से कोलों को ज़मीन नापकर कब्जा दिलाने का दबाव बनाया। प्रशासन भूमि नाप और कब्जा दिलाने के भूमि नाप समिति बनाया जिसमें एसडीएम कर्वी स्थानीय पुलिस एवं कई लेखपाल और संस्थान कार्यकर्ता शामिल हुए। यह अभियान हर गाँव में कई–कई दिनों तक चला। पहली बार ज़मीन पाकर आदिवासी बहुत खुश हुए लेकिन उनके पास खेती किसानी करने के लिए कोई संसाधन नहीं थे। संसाधन दिलाने के लिए संस्थान ने पुनः पहल शुरू किया। कुछ फडिंग एजेन्सी से सहयोग प्राप्त हुआ कुछ प्रशासन के सहयोग से हल–बैल, खाद–बीज का जुगाड़ जुटाया गया। थोड़ा सहयोग प्राप्त होने से आदिवासी कोल परिवार खेती से तो जुड़े लेकिन पानी की उचित व्यवस्था न होने के कारण आधी अधूरी खेती करने लगे। धीर–धीरे उनके खेतों में मेड़बन्दी, फार्मपाण्ड एवं चेकडैम और तालाब निर्माण के काम शुरु किये गये जिसके जागते प्रमाण बगरहा तालाब, धजवा तालाब, पुष्कर्णी तालाब मरम्मत, बाबा तालाब, हरिजनपुर, टिकुरी चेकडैम आदि ढांचागत निर्माण 1990 से लेकर आजतक निरन्तर पानी की सुविधा हेतु मौजूद हैं। कोल परिवार जब खेती से जुड़ गये तो उनकी स्वयं की मेहनत से उत्पन्न अनाज से पूरा परिवार भरपेट रोटी खाने लगा। पहले ये परिवार हमेशा बाज़ार से पुटकी लेकर घर जाते रास्ते में अक्सर मिल जाते थे अब ये दृश्य देखने को कहीं नहीं मिलता। पुटकी वाली प्रथा हमेशा के लिए बन्द हो गयी है।

भूमि हक़दारी की इस पहल से लगभग 60 प्रतिशत कोल परिवारसीधे लाभान्वित हुए लेकिन 10 प्रतिशत परिवार दबंगों की कानूनी पेंच में फँसकर उलझ गये। दबंग लोग कोर्ट का सहारा लेकर एक लम्बा विवाद बना दिया जिसकी पैरवी करने के लिए कोल परिवार सक्षम नहीं था। संस्थान ने इसकी पैरवी करने के लिए अपना एक अलग से वकील नियुक्त कर उनकी पैरवी करना प्रारम्भ किया। इस पहल से बहुत सारे विवादों में सफलता भी प्राप्त हुई है।

जैसे निही गांव में कलुवा, दद्दी, मौजीवा, रामलाल आदि के नाम बहुत पुराने पट्टे थे। जब इन लोगों ने अपनी जमीन लौटाने की बात की तो यहाँ के दबंगों ने इन्हें मार–मार कर गांव से ही निकाल दिया। ये परिवार भागकर डोंड़ा सोसायटी में रहने लगा। इनके जब अभिलेख देखे गये तब पता चला कि इनमें से 8 परिवारों को मृतक बताकर इनकी ज़मीन पर गोबरहाई के एक दबंग वरासत करवा लिए हैं। जब कि ये परिवार जीवित थे। पहले तो इन्हें ज़िन्दा करवाने की लड़ाई लड़ी गयी। मानवाधिकार आयोग जब इसमें पहल किया तब ये ज़िन्दा तो हो गये लेकिन इनकी जमीन में दुबारा नाम चढ़वाना बहुत कठिन था। छोटी अदालतों में इनकी पैरवी की गयी नाम चढ़ गया लेकिन दबंग हाईकोर्ट से स्टे लेकर लगातार ज़मीन में काबिज बने रह गये। हाईकोर्ट से भी इनकी पैरवी हुई। कब्जा दिलवाया गया तब जाकर ये अपनी ज़मीन के मालिक बने। इस तरह की विसंगतियों से पता चला कि पाठा में ग़रीब कोल परिवारों की ज़मीन हड़पने के अनेक तरीके अपनाएं गये हैं और इस षड़यंत्र में राजस्व विभाग पूरी तरह शामिल है।

संस्थान के सबसे अनुभवी, कुशल और भूमि विषयक मामलों के विशेष जानकार स्व. हजारी सिंह पंकज जी ने दबंगों की भूमि हड़पने के तौर–तरीकों की खोज करना शुरु किया। उन्होंने इन तरीकों के बारे में अपनी किताब ''धरती का दर्द'' में लिखा है कि स्थानीय दबंग किस प्रकार से लोगों के साथ धोखाधड़ी कर के गरीबों की ज़मीन हड़प लेते थे। पंकज जी ने जिक्र करते हुए लिखा कि दबंग मदद के नाम पर कुछ पैसे देकर उनसे सादे कागज़ में अंगूठा–दस्तखत करवाकर उसकी ज़मीन को गिरवी रखकर पूरी ज़मीन पर कब्जा किये हुए हैं। गाँव में अगर कोई परिवार खाने–कमाने हेतु बाहर चला गया है तो उसकी ज़मीन को खारिज करवाकर अपने परिवार के नाम पर दबंग पट्टा करवाकर कब्जा किए हैं। जैसे– मऊ तहसील के ग्राम कलचिहा कोल कालोनी में जुगलाल, रामखेलावन, सुखलाल, रमूझन, नन्हकुन, जवाहर, लल्लू, सुखलाल, तीरथ आदि 20 कोलों को 1374फ0 में 10–10 बीघे के पट्टे देकर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी के आदेश पर झांसी कमिश्नर श्री महाबीर शरण ने बसाया था लेकिन इन परिवारों को ज़मीन मऊ तहसील के एस0डी0एम0 ने 15.01.1988 को दबंगों की सह पर खारिज करके 200 बीघा ज़मीन गाँव समाज की श्रेणी 5 में दर्ज करने का आदेश दे दिया। जबकि सभी परिवार उस ज़मीन में खेती कर रहे थे। संस्थान को जब इस साजिश का पता चला तो अपने वकील के मार्फत आपत्ति लगवाकर इन ग़रीबों की ज़मीन बचाई गयी।

इसी तरह मारकुण्डी पुरवा में मवैया कोल की 7 बीघे ज़मीन पर गाँव के बड़े दबंग ने पम्पिंग सेट मशीन निकलवा लिया। मशीन का भरपूर उपयोग भी किया लेकिन मतैया कर्ज़ नहीं भरा। कुछ दिनों बाद वर्ष 2001 में मतैया की आर0सी0 कट गयी। ज़मीन की नीलामी तिथि तय हो गयी। नीलामी के दिन संस्थान ने भी अपना एक कार्यकर्ता रामबचन कोल को बैठाया। नीलामी में वही दबंग जो मतैया की ज़मीन पर पम्पिंग सेट निकाला था वह भी बोली बोलने के लिए बैठा। बोली लगातार बढ़ती जा रही थी। दबंग को जब ये पता चला कि इस व्यक्ति के पीछे संस्थान खड़ा हुआ है तब वह वहाँ से भाग चला। उसके जाने के बाद बोली समाप्त

हो गयी। रामबचन के नाम से मतैया की ज़मीन बचा ली गयी। बाद में वही पैसा मतैया के कर्ज के रुप में जमा करके उसकी ज़मीन उसे दे दी गयी। मतैया कर्जमुक्त होकर आज भी अपनी खेती कर रहा है।

कोटा कंदैला ग्राम पंचायत के मजरा हर्दिया में के0 इविल एक ईसाई थे उसके नाम पर 102 बीघे ज़मीन थी जिसे वहाँ के ग़रीब कोल परिवार कमाते–खाते थे। साल में एक या दो बार इविल गाँव में शिकार करने के लिए आता था। दो–चार दिन रहने के बाद पूरी ज़मीन कोलों को सौंपकर वह इलाहाबाद लौट जाता था। इविल के मरने के बाद काफी दिनों तक कोल परिवार जोते बोते रहे क्योंकि उसके कोई औलाद नहीं थी। कर्वी के एक शहरी चालक सामन्तशाह ने कागज में इविल की दो लड़कियाँ बताकर वरासत दर्ज करवाकर ज़मीन पर काबिज हो गया। इसी तरह सेठ भगेलूलाल की लगभग 200 बीघे ज़मीन ऐलहा गाँव के सेमराटार में थी। भगेलूलाल के भी कोई औलाद नहीं थी। इसकी ज़मीन पर बांदा लोकसभा के पूर्व सांसद ने उनकी वरासत अपने बहू–बेटे के नाम पर करवाकर लगातार काबिज है। इसी तरह पाठा में सामन्तशाहों ने ज़मीन की सोसायटी बनाकर एक बहुत बड़े भू–भाग पर काबिज है। बांदा जनपद में उस समय 25 सहकारी खेती समिति लि0 बनी थी उनमें 11 समिति केवल मानिकपुर में है। जैसे मरवा सोसायटी, किहुनिया सोसायटी, करौंहा सोसायटी, हनुवा सोसायटी, जुगनवाह प्रथम व द्वितीय सोसायटी आदि हैं। इन सोसायटियों में पहले ग़रीब व्यक्तियों की ज़मीन लेकर उन्हें सोसायटी बना ली गयी बाद में एक–एक सदस्य को बाहर करके समिति अध्यक्ष ने अपने परिवार के लोगों के नाम इन समितियों में जोड़कर ग़रीब सदस्यों को बाहर करके पूरी ज़मीन पर कब्जा कर लिए।

इसी तरह फर्जी बैनामा करवाकर यहाँ के सामन्तशाहों ने ग़रीबों की ज़मीन बड़ी मात्रा में हड़प लिये जैसे सकरौंहा के छोटा कोल की ज़मीन सात बीघा थी इसकी ज़मीन का फर्जी बैनामा यहाँ पर तैनात लेखपाल मन्नीलाल ने अपने लड़के शिवशंकर के नाम करवा कर कब्जा कर लिया। जब कि छोटा बैनामा करवाने कभी गया ही नही। इसी तरह कर्ज़ के नाम पर ग़रीबों की पूरी जायजाद हड़प ली गई और उन्हें गाँव से निकाल दिया गया। जैसे ऊँचाडीह के मजरा चौर गाँव में शिवबालक कोरी दबंग व्यक्ति की हलवाली करता था। उसका दम भी हल जोतते–जोतते निकला था। उसके मरने के बाद उसकी पूरी सम्पत्ति दबंग ने कर्ज़ बताकर हड़प लिया उसका लड़का मनभरन उस समय 1 वर्ष का था। बड़े होने पर मनभरन ने जब अपने पिता की सम्पत्ति और ज़मीन माँगा तो उसे बुरी तरह मार–पीट कर गाँव से निकाल दिया गया। मनभरन उसी समय गाँव छोड़कर म0प्र0 के सतना जिले के रामपुर गाँव में रहता है।

इस तरह की विसंगतियों से लड़ते हुए संस्थान ने ग़रीबों को 12000 एकड़ ज़मीन पर कब्जा दिलवाकर ग़रीबों का पुनर्वास करवाया है जो आज खेती से जुड़कर अच्छा जीवन बता रहे हैं।

# जीवन की तान और मुस्कान हमारे नाना जी

**मीताक्षरा**
बायोटेक छात्रा
क्राइस्ट इंस्टीट्यूट, बंगलौर

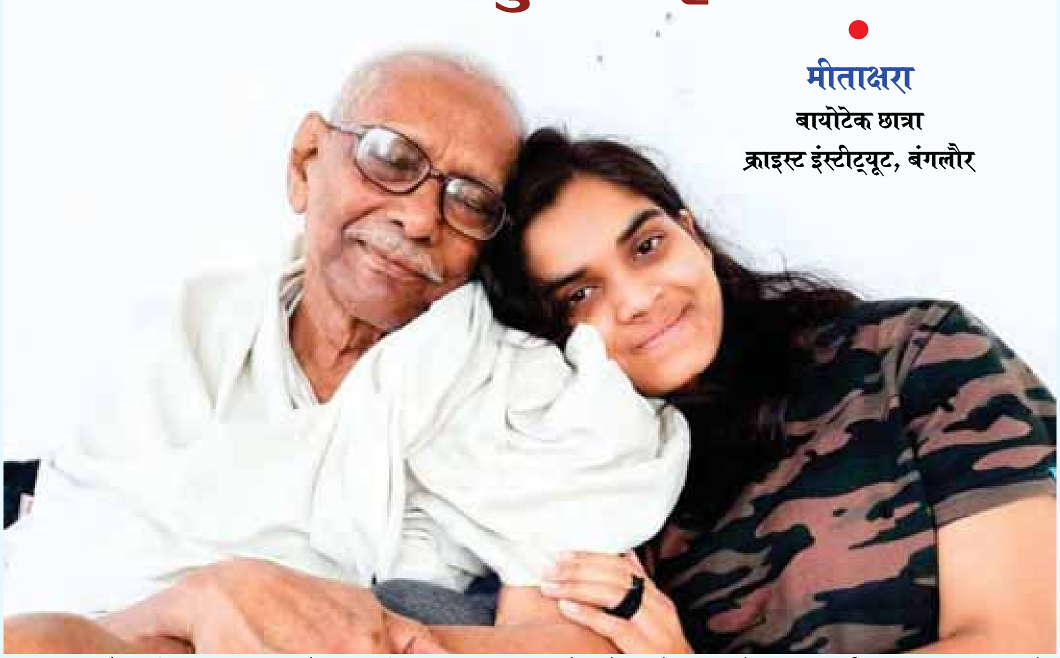

मैं दुनिया की सबसे खुशकिस्मत लड़की हूँ जो मुझे श्री गोपाल भाई जी नाना जी के तौर पर मिले, और मेरा जन्म इस सुंदर परिवार में हुआ। सबसे पहले मुझे इतने अच्छे माता–पिता देने के लिए धन्यवाद।

आपकी पूरी जिंदगी हमारे लिए प्रेरणा है, मैंने बचपन से आपको दूसरों के लिए जीते देखा है। आप अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान को इस दुनिया मे लाये, उसके जरिये बहुतों को ज़िन्दगी जीने का मक़सद दिया। मुझे नही पता मैं क्या लिखूँ पर अगर आप नहीं होते तो जो भी मैंने सीखा है, जाना है वो भी कम होता।

आपके जैसा बनना तो मुमकिन नहीं पर कोशिश आपकी सीख को लेके आगे बढ़ने की रहेगी। मुझे याद है बचपन में आपके गोद में सुनी वो कहानियाँ और गाने, आपकी वजह से संगीत से मेरा नाता जुड़ा, और आज यही संगीत मुझे सबसे ज्यादा खुशी और शांति प्रदान करता है। आज भी अगर मन उदास होता है तो आपसे बस बात कर के सब अच्छा लगता है। आप मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा हो। आपका हर मुश्किल घड़ी का समझदारी और शांति से सामना करना ही मुझे कठिनाईयों से लड़ने के लिए प्रेरित करता है। आप मुझे ही नहीं बल्कि घर के हर बच्चे को उसी तरह से वही गाने और कहानियाँ सुनाते है जो मुझे सुनायी थी, और इसके पीछे आप यही उम्मीद करते हैं कि घर के सारे बच्चों के अंदर सीखने की ललक, संगीत के प्रति प्यार, दूसरो के लिए अपनापन और दिल मे सबके प्रति सद्भावना हो।

आप पूरी कोशिश करते हैं कि मानव जीवन को कैसे जीना है, और क्यों जीना है, इस जीवन का, मानव जाति का धरती में आने का मक़सद क्या है और इसीलिए जीवन विद्या पढ़ने के लिए कहते हैं। आपके पास आकर हर एक इंसान जीवन को नए नज़रिये से देखने की कोशिश करता है। आपका जीवन बहुत ही संघर्षों से भरा हुआ था पर उससे निकल के आपने अपनी खुद की पहचान बनाई और आज आपको हर कोई गोपाल भाई जी के नाम से जानता

है। पाठा के लिए आप उनके भगवान है, मुझे पता है आपको ये बहुत बड़ी संज्ञा लगती है पर एक तरीके से मेरे हिसाब से ये बिल्कुल सही है। आपका निःस्वार्थ भाव हम सभी को थोड़ा बुरा लगता है कि आप खुद के बारे में सोचते ही नही हैं पर सच कहूँ तो अब घर से बाहर रह कर महसूस हुआ की ये खूबी तो मुझमें भी है, इसीलिए अब मैं आपको समझ पा रही हूँ, हम खुद को रोक नहीं सकते ऐसा करने से।

मैं बस हमेशा आपको खुश और स्वस्थ देखना चाहती हूँ, और अपने पूरे मन से आपके सपनों को पूरा करने की कोशिश करूँगी।

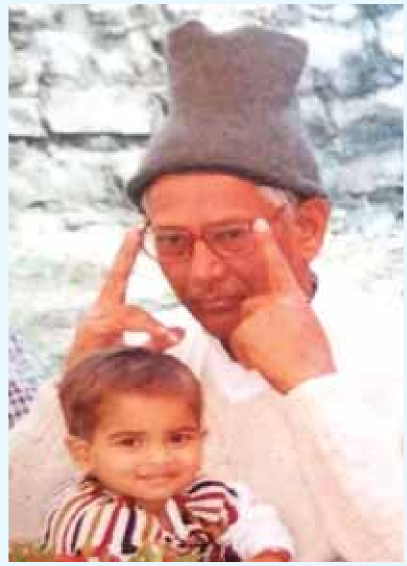

# बाबा जी अपना दिया हुआ वचन कभी नहीं भूलते..

**विश्वदीप**

एक छोटा सा प्रसंग है सन् तो याद नहीं पर घटना आज भी जहन में है बात तब कि है जब आकाश छोटा था और बाबा जी रानीपुर भट्ट में रहने लगे थे यहाँ हमारे ऑफिस का मुख्य कार्यालय बना था सब कुछ नया था। एक शाम बाबा जी मानिकपुर से लौटके कर्वी में स्थित घर आये, हम सब से मिले और फिर जाने लगे आकाश ने जिद पकड़ ली कि वो आज हमारे साथ यहीं पर रहें किसी तरह उन्होंने आकाश को समझाया और वादा किया कि वो अगली शाम हमारे साथ रहेंगें और रात को यहीं रुकेगें आकाश मान गया। अगली शाम मौसम बहुत ही खराब हो गया था बारिस भी हो रही थी आकाश ने पापा से पूछा कि बाबा जी कब आयेंगें तो पापा ने उसको समझाया कि मौसम सही नहीं है वो नहीं आ पायेंगें आकाश निराश हुआ। अंधेरा हो चुका था और रात्रि भी बढ़ रही थी बारिस हो रही थी तभी हमारा चैनल खुला हम बाहर आये और सामने बाबाजी खड़े थे जो पूरी तरह से भीग गये थे उनको देखते ही आकाश दौड़कर उनसे लिपट गया उन्होंने उसको गोद में लिया और प्यार किया फिर मुझे भी उन्होंने गोद में ले लिया और घर के अन्दर आ गये।

पापा ने तुरन्त उनको तौलिया दी उन्होंने अपने कपड़े बदले। फिर पापा ने कहा कि पिताजी आप ऐसे मौसम में क्यों आयें हैं आप कल भी आ सकते थे। तब बाबा जी ने कहा कि मैने अपने पोते से वादा किया था और वो वादा मुझे पूरा ही करना था। बाद में हमको पता चला कि उस रात कितनी कठिनाईयों का सामना कर वो हमारे पास आये थे।

चित्रकूट की यात्रा प्रारंभ होती है मंदाकिनी और पयस्वनी के संगम स्थल रामघाट से। स्नान करने के बाद चित्रकूट के महाराजाधिराज 1008 मतगजेन्द्र नाथ जी स्वामी पर जल चढाकर यात्रा की शुरूआत की जाती है। मंदिर में चार रूद्रावतार भगवान शंकर की मूर्तियाँ प्रतिस्थापित हैं। आदिकाल की मूर्ति स्वंय सृष्टि रचयिता बृहमा जी द्वारा स्थापित की गई थी। रामधाट भक्तों एवं श्रद्धालुओं के लिए बड़ा ही पवित्र स्थान माना जाता है। इसी घाट पर गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रतिमा भी है, पूज्य पाद गोस्वामी जी को श्रीराम के दर्शन श्री हनुमान जी की प्रेरणा से इसी घाट में हुये थे। तोतामुखी श्री हनुमान जी द्वारा उपदेश किये जाने से यहाँ पर एक तोतामुखी हनुमान जी की प्रतिमा आज भी पायी जाती है।

राघव प्रयाग नाम का यह स्थान मन्दाकिनी गंगा के पश्चिम तट पर स्थित है। यहाँ पर मन्दाकिनी पयश्वनी एवं सरयू गंगा का संगम है। इन तीनों नदियों के उद्गम स्थान पृथक–पृथक है। मन्दाकिनी अत्रि मुनि के आश्रम से निकली है। पौराणिक गाथा के अनुसार श्री अत्रिमुनि की पत्नी अनुसुइया जी ने अपने तपोवल से प्रकट किया है। पयश्वनी गंगा का उद्गम ब्रह्मकुण्ड है, जो श्री कामदगिरि के दक्षिण तट पर स्थित है। कामदगिरि के उत्तरी तट से श्री सरयू जी का उद्गम है। यही तीनों नदियाँ मिल करके प्रयाग के रूप में परिवर्तित हो जाती है। रघुकुलभूशण श्री रामजी ने अपने पूज्य पिता के लिए यहीं पर पिण्ड दान दिया था, इसलिए उक्त स्थान को राघव प्रयाग कहा जाता है। चित्रकूट का सबसे महत्वपूर्ण स्थान श्री कामदगिरि है। इसको भगवान का ही स्वरूप माना जाता है। इसमें

# मेरा चित्रकूट और चित्रकूट के गोपाल भाई


● टिल्लन रिछारिया
देश के प्रख्यात पत्रकार
नई दिल्ली

प्रवेश के चार द्वार हैं। जिसमें कामदगिरि का उत्तरी द्वार मुख्यद्वार के नाम से जाना जाता है। श्री रामघाट से स्नान करके अधिकतर लोग श्री कामदगिरि के मुख्य दरवाजे पर आते तथा यहीं से प्रदक्षिणा आरम्भ करते हैं।

श्रद्धालु कामदगिरि पर्वत की 5 किलोमीटर की परिक्रमा कर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होने की कामना करते हैं। जंगलों से घिरे इस पर्वत के तल पर अनेक मंदिर बने हुए हैं। चित्रकूट के लोकप्रिय कामतानाथ और भरत मिलाप मंदिर भी यहीं स्थित है। मान्यता है की कामदगिरिदेव के दर्शन एवं परिक्रमा करने से सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। इसीलिए इसका नाम 'कामदगिरि' है। इस गिरिराज का प्रभाव यों तो अनादिकाल से चला आ रहा है, पर भगवान राम के प्रवास करने से इसका महत्व और भी बढ़ गया है। दर्शन के लिए प्रतिमास की अमावस्या, चौत्र रामनवमी और दीपमालिका को भारत के कोने–कोने से अंसख्य यात्री चित्रकूट आते हैं और इसकी परिक्रमा कर स्वयं को धन्य मानते है। परिक्रमा के लिए पर्वत के चारों ओर पक्का मार्ग बना हुआ है। परिक्रमा के किनारे–किनारे सैकड़ों देवालय बने हुए हैं, जिनमें राममुहल्ला, मुखारविन्द, साखी गोपाल, भरत–मिलाप "चरण–पादुका" तथा 'पीली कोठी' अधिक महत्वपूर्ण है। पर्वत के दक्षिण पार्श्व में एक छोटी–सी पहाड़ी है, जिसे 'लक्ष्मण पहाडी कहते हैं। इसके शिखर पर श्री लक्ष्मण जी का मन्दिर बना हुआ है। जन–श्रुति के अनुसार राम के वनवास–काल में लक्ष्मण जी का यही निवास स्थान था। भरत मिलाप, यह वही स्थान है, जहाँ भरत–राम का मिलन हुआ था। वह मिलन, जिसमें पर्वतराज की कठिन शिलायें भी पिघल कर पानी–पानी हो गयी थी, जिसके कारण पाषाण शिला में उनके चरण चिन्ह अंकित हो गये हैं। पिघली हुई उन शिलाओं का चिन्हावशेष आज भी उस अपूर्व मिलन की याद को ताजा कर देता है। प्रमोद वन, जानकीकुंड, स्फटिकशिला, अनुसूया आश्रम, गुप्त गोदावरी दर्शनीय स्थल हैं। बांके सिद्ध, कोटतीर्थ, देवांगना। हमुमानधारा के साथ पहाड़ी पर स्थित सिद्ध स्थान हैं। इसी चित्रकूट की पुण्य भूमि पर कोल भीलों के दारुण जीवन के भयावह कबीले हैं जहां जिंदगी हर दिन नया जन्म पाती है। न कुछ खाने को, मीलों दूर पानी, दबंगों के शोषण की चकरी में पिसती जिंदगानी। इन्हीं इलाकों की जिंदगी की बैचनी और तड़प को शुरूआती दिनों में अखबारों और पत्रिकाओं तक पहुंचाती रही है मेरी पत्रकारिता। एक ओर चित्रकूट की नैसर्गिक सुषमा है तो दूसरी हैं दारुण चित्रावलियाँ। मेरी इस यात्रा के साक्षी हैं गोपाल भाई और मैं साक्षी हूँ उनके जुझारू व्यक्तित्व का, आइये देखिये अपने परम पावन चित्रकूट की ह्रदयविदारक सच्चाई।

इन इलाकों में जैसे जैसे तापमान 45 डिग्री के पार जाने लगता है तो चिटकूट के आसपास का पठारी इलाका चटकने लगता है। जलती झुलसती धरती, आग उगलता आसमान। पानी की दुश्वारी, चौतरफा त्राहि–त्राहि। गर्मियाँ आते ही इस इलाके में पानी के लिये त्राहि–त्राहि मच जाती है। समस्या केवल कुँओं, नदियों, तालाबों आदि के सूख जाने की ही नहीं है। सबसे बड़ी समस्या है जन और जानवर के लिए पानी की है। भारत के एक लाख गाँवों में आज भी पानी की भयंकर कमी है। दो लाख से ऊपर गाँव ऐसे हैं, जिनके निवासियों को दो तीन किलोमीटर दूर से पानी लाना पड़ता है। चित्रकूट के पठारी अंचल मे हालात

भयंकर हो जाते हैं। एक जमाने यानी पिछली सदी के आठवें दशक तक के हालत याद आते हैं जब मीलों दूर से महिलाओ को मिटटी के घड़ों में पीने का पानी लाते देखते थे। चित्रकूट की नदी पयस्विनी में एक जगह है भौरा दहार यहाँ से जब अपने गाँव पुरवे के लिए महिलायें सिर पर मिट्टी के घड़े लिए चलतीं हैं तो एक मार्मिक गीत गाती चलती हैं –

*भौंरा तोर पानी गजब किये जाए !*
*गगरी न फूटे खसम मरि जाए !!*

चित्रकूट के इन दारुण इलाकों और यहाँ की जीवन संस्कृति से साक्षात्कार का अवसर मुहैया कराते थे हमारे परम आत्मीय अग्रज साथी गोपाल भाई! इन दिनों अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के माध्यम से लंबी यात्रा कर चुके हैं। उम्र छोड़िये तब भी युवा थे अभी आज भी युवा हैं। हमारी जीवन यात्रा के ये दिशावाहक हैं और दिशासाधक भी। सादा जीवन, सादा विचार यही मंत्र दिया इन्होंने। अपने दांये बाएं जब भी मैंने देखा इन्हें अपने निस्पश्ह संरक्षक के रूप में पाया । 1972–73 की कोई शाम रही होगी, जब नेहरु युवक केंद्र की एक संगीत संध्या में बांदा में मित्रों के साथ पहला संपर्क हुआ। समय कहाँ से कहाँ गुजर गया लेकिन आपके स्नेह की छाया कभी छिछली नहीं पड़ी।

चित्रकूट और मानिकपुर के जंगलों में जब हम जाते तो जीवन का जो रूप देखते वह बहुत हृदय बिदारक होता। डकैतों और दबंगों के से आक्रान्त यहां के बाशिदे इतने डरे सहमें होते थे कि होठों से बोल नहीं फूटते थे। भयभीत हिरणियों सी द्रवित आँखें हर घर में देखी जा सकती थीं, इन इलाकों में गोपाल भाई को किसी देवदूत की तरह देखा जाता था। मिटटी के बर्तनों में सूखे महुवे, बेर, कहीं कहीं ज्वार, बाजरा जैसे मोटे आनाज, गुड़, चना बस इतना ही, किलकते बच्चे, मुरझाई औरतें पिंजर बने मानुश। इन्हीं के बीच गोपाल भाई ने इनकी खुशहाली के लिए अपना जीवन होम दिया।

क्या अतीत रहा है गोपाल भाई का जानना चाहेंगे? अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के संस्थापक गया प्रसाद गोपाल का जन्म 1941 में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के बिगहना नामक एक छोटे से गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री मोहनलाल ग़रीब किसान थे, जो ऋण और अन्य मौद्रिक दायित्वों से ग्रस्त थेय उनकी माँ श्रीमती देवरती एक साधारण गृहिणी थीं, जिन्होंने अपने पति की 10–12 सदस्यों के परिवार के पालन–पोषण में सहायता की, जिसमें उनके पाँच बच्चे शामिल थे, जिनमें बेटियां और तीन बेटे शामिल थे। उनका भारत में प्रचलित हास्यास्पद जाति स्तरीकरण के अनुसार एक गैर–ब्राह्मण, निम्न जाति का परिवार था।

गाँव बिगहना में स्कूल और अस्पताल जैसी मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव है। इसने गाँव के बच्चों के लिए शिक्षा को एक दुर्लभ वस्तु बना दिया। उन माता–पिता में से जो इसके दीर्घकालिक महत्व को महत्व दे सकते थे और परिणामी आर्थिक कठिनाइयों को सहन कर सकते थे, अपने बच्चों को पास के स्कूलों में भेजने में कामयाब रहे। बालक गया प्रसाद गोपाल उन विशेषाधिकार प्राप्त ग़रीबों में से एक थे। हालाँकि, उन्हें पास के एक गाँव बिलगाँव में अपने स्कूल तक पहुँचने के लिए कठिन, कच्ची सड़कों के माध्यम से कम से कम 6 किलोमीटर की

दूरी तय करनी पड़ती थी, जहाँ उन्होंने 5 वीं कक्षा तक स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी। चूंकि बिलगांव के स्कूल ने 5 वीं कक्षा के बाद शिक्षा की व्यवस्था नहीं की, इसलिए उन्हें आगे की शिक्षा के लिए खुरहंड के एक स्कूल में भर्ती कराया गया। इस समय तक बालक गया प्रसाद ने महान महाकाव्य रामचरितमानस के अध्ययन, गायन और पाठ में अपनी प्रतिभा के लिए पहले ही एक प्रशंसनीय ख्याति प्राप्त कर ली थी, जिसे उन्होंने गाँव की रामलीलाओं के दौरान बहुत खुशी से किया था। यही उनके गुण थे जो उन्हें बिगहना और बिलगाँव के वरिष्ठों और महिलाओं से प्यार दिलाते थे। जिसने न केवल उनकी आगे की पढ़ाई के लिए प्रावधान किया बल्कि कई बार अनजाने में इसे बाधित भी किया। ऐसा हुआ कि जब बिलगांव के लोगों को इस बात की जानकारी हुई कि गया प्रसाद को उनके गांव से पास के खुरहंड में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले एक स्कूल में भर्ती कराया जाना है, तो वे इसे अपने गौरव पर ले गए और उनकी आँखों में गायन और धार्मिक छंदों का पाठ करने में माहिर थे, जो कि वे वास्तव में थे, और इसलिए बिलगाँव से खुरहंड जाने के दौरान उन्हें कुछ हद तक नुकसान का अनुभव हुआ, और उन्हें वापस लाने की कोशिश की। लेकिन, बिलगांव में पांचवीं कक्षा के बाद कोई सामान्य स्कूल नहीं होने के कारण थोड़ी परेशानी हुई। फिर भी उनके उत्साह ने उन्हें समाधान दिला दिया। बिलगाँव में एक संस्कृत विद्यालय था जहाँ उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी, जो वास्तव में उच्च जाति के बच्चों के लिए थी। उसे वापस पाने की अपनी भावना में, बिलगाँव के लोगों ने इसके लिए एक बहुत ही प्रगतिशील चेहरा दिखाया और अंततः उन्हें वहां के संस्कृत स्कूल में भर्ती कराया गया। हालाँकि, उनके दृष्टिकोण की यह सामूहिक व्यापकता अल्पकालिक थी और गया प्रसाद के संस्कृत विद्यालय में प्रवेश का विरोध उच्च जाति के वार्डों के कुछ माता–पिता द्वारा होने लगा। जल्द ही गया प्रसाद को वापस लाने वालों का प्यार उन लोगों के झुंझलाहट से हावी हो गया, जिन्होंने केवल ब्राह्मणों के लिए बने स्कूल में गैर–ब्राह्मण के प्रवेश पर आपत्ति जताई थी। यह वास्तव में जातिगत भेदभाव का पहला अनुभव था, जिसे बालक गया प्रसाद ने बिना किसी स्पष्ट दोश को झेला। इसने बच्चे के संवेदनशील दिमाग पर एक अभेद्य छाप छोड़ी और साथ ही अपने जीवन के बाद के हिस्से में शायद इसके खिलाफ लड़ाई छेड़ने का संकल्प भी लिया। सौभाग्य से, वह अपने एक ब्राह्मण मित्र के रूप में स्कूल से निकाले जाने के इस आसन्न दिखने वाले अपमान से बच गया, जो उसी स्कूल में एक वार्ड था और जिसके पिता गांव में एक प्रभावशाली व्यक्तित्व थे, स्कूल नहीं जाने पर अड़े हुए थे। मामले में वह अपने दोस्त और सहपाठी गया प्रसाद से अलग हो जाता है।

एक और नीचता का अनुभव उन्हें एक गाँव में खाने के दौरान हुआ जब उच्च जाति के ब्राह्मण लोगों के साथ उनके खाने का उनके साथ कुछ लोगों ने विरोध किया। यह निश्चित रूप से एक बहुत ही अपमानजनक स्थिति थी। लेकिन यहाँ फिर से वह उन उच्च जाति ब्राह्मणों में से उनके कुछ शुभचिंतकों द्वारा किए गए सकारात्मक हस्तक्षेप के कारण अपमानित होने से बच गया। गया प्रसाद ने अपनी 7वीं और 8वीं खुरहंड से की 9वीं से बीएड से ग्रेजुएशन पूरा करने तक। और इससे भी आगे, वह अतर्रा में रहे जो बांदा जिले में पहले की तुलना में तुलनात्मक रूप से बहुत बड़ा स्थान था। गया प्रसाद गोपाल, जो अपने पैतृक गाँव के पहले

स्नातक थे, ने जीवन में इस मुकाम तक पहुँचने से पहले ही जीवन की बहुत सी कठिनाइयों को देखा था। 12वीं पास करने के तुरंत बाद उन्हें अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए नौकरी करनी पड़ी, सौभाग्य से एक सरकारी नौकरी। हालांकि, वह यहाँ एक साल से अधिक समय तक नहीं रह सके क्योंकि यह उनकी व्यक्तिगत मूल्य प्रणाली और मानसिकता का अनुपालन नहीं करता था। उसके बाद के चार वर्षों तक उन्होंने अतर्रा में विभिन्न व्यावसायिक दुकानों में उनके विक्रेता के रूप में काम करके देखा। यहाँ नौकरी की प्रकृति ऐसी थी कि उसे बहुत अस्वास्थ्यकर व्यावसायिक प्रथाओं में शामिल होना आवश्यक था। साथ ही, उसमें उस सामाजिक कार्यकर्ता और कार्यकर्ता के लिए लाभ के लिए बहुत कम था जो प्रकट होने के लिए तैयार था और व्यक्तिगत रूप से अभिव्यक्ति की मांग की थी। इसलिए, वह यह जाने बिना कि आगे क्या करना है, इसे छोड़ने का फैसला करता है। यहीं से उसका जीवन और अधिक पुष्टि करने वाली भूमिकाएँ लेना शुरू कर देता है, जो निश्चित रूप से उसके भविष्य के दाँव और कद की पुष्टि करता है।

1965 में अतर्रा में आदर्श बाल निकेतन के नाम से एक स्कूल की स्थापना सामाजिक कार्यों में उनके भविश्य के प्रयोगों के लिए एक प्रारंभिक था। यह अवधि 1965 और 1975 के बीच कम से कम 10 वर्शों की एक लंबी अवधि है, जिसके दौरान उन्होंने स्कूल के प्रिंसिपल के रूप में काम किया। इसी दौरान एक समाचार पत्र के संपादक के रूप में भी, काम किया 1970 से 1975 तक। यह एक अभिन्न स्कूल था जहाँ ग़रीब, अमीर, निम्न जाति और उच्च जाति के बच्चों को एक ही मंच पर लाने के लिए विशेष ध्यान रखा गया था ताकि मनुश्य की दीवारों में कृत्रिम मतभेद हमारे देश के भविष्य को अलग न कर सकें। इसके पीछे इतना नेक उद्देश्य था और उपयुक्त रूप से इसका नाम आदर्श बाल निकेतन रखा गया। मानो उस समय तक सामाजिक जवाबदेही के अपने हिस्से के इतने कमीशन से संतुष्ट नहीं थे, उन्होंने 1970 में अजेय दुर्ग के नाम से एक समाचार पत्र शुरू कर मुख्य–संपादन किया, जिस पर उन्होंने अपनी चिंताओं को उठाया। 1980 में समाचार पत्र के बंद होने तक विभिन्न सामाजिक–राजनीतिक मुद्दे और समस्याएं उठाते रहे।

1975 का वर्ष आधुनिक भारतीय इतिहास में गिना जाने वाला वर्ष है। यह वह वर्ष था जब भारत में आपातकाल लगाया गया था, जिससे देश भर में सामाजिक–राजनीतिक हलकों में हड़कंप मच गया था। बांदा में अतर्रा का पुरवा कोई अपवाद नहीं था और उन सभी लोगों के लिए जो अपने विचारों और स्थापना के विचारों में गैर–अनुरूपतावादी और कट्टरपंथी थे, उनके सलाखों के पीछे डाल दिए जाने का खतरा था। देश में इस राजनीतिक संकट के खतरे के तहत गया प्रसाद गोपाल को भूमिगत होना पड़ा। इससे वह अतर्रा छोड़कर चित्रकूट चले गए। इस प्रकार उन्हें उनकी परिस्थितियों के अनुसार उनकी कर्मभूमि पर भेज दिया गया। 1975 से 1985 के बीच उन्होंने श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट, चित्रकूट (मफतलाल व्यवसाय घराना द्वारा संचालित और प्रबंधित एक ग्रामीण विकास संगठन) के साथ ग्रामीण विकास समन्वयक की नौकरी की। यह वह अवधि थी जिसके दौरान उन्हें कोलों की कठोर वास्तविकताओं और दुखों से गहन रूप से अवगत कराया गया, जो अंतहीन कठिन जीवन जीते थे और

बुनियादी जरूरतों से इनकार करते हुए केवल कुछ प्रमुख उच्च जातियों के विलासिता और व्यर्थ भोग का समर्थन करते थे। व्यवहार में इस प्रकार का मानव जीवन स्वतंत्र भारत की उनकी कल्पना से कोसों दूर था। यह वास्तव में उनके भीतर एक गहरी सोच की प्रक्रिया को गति प्रदान करता है कि कोलों के दुखों को साझा करने और कम करने और उनकी मदद करने के लिए उनकी भूमिका और जिम्मेदारी का हिस्सा क्या होना चाहिए। उन्होंने जल्द ही महसूस किया कि जैसा उन्होंने कल्पना की थी, सब कुछ करना तभी संभव होगा जब वे समाज के अपने दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने के लिए कुछ हद तक स्वतंत्र हों। और इस विचारधारा ने अंततः अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के नाम से एक समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। इतनी चोटों और टूटे चटके दिल वाला आदमी आज भी वही लड़ाई लड़ रहा है जो इसने अपने साथ होने वाले अन्याय के रूप में स्वयं के लिए लड़ी थी। यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई।

एक शाम मैं बांदा स्टेशन पर 'दिनमान' पत्रिका लिए टहल रहा था, हमारे कुछ मित्रों ने चुटकी ली, इसमें कोई लेख छपा है क्या आपका। मैंने कहा लेख तो नहीं उल्लेख जरूर है। क्या उल्लेख है। लो देखो। बनारस के चर्चित फोटोग्राफर और पत्रकार एस अतिबल चित्रकूट कवरेज के लिए आये थे। गोपाल भाई के सौजन्य से उनसे मुलाकात हुई। जहाँ–जहाँ वो गए मैं भी साथ रहा। चित्रकूट के जिस त्रासद हालात के चित्र दिखाए उन सब से वो भी गुज़रे। साथ रहते हुए मैंने अपने अनुभव बताये, उन्होंने अपने लेख के लिए नोट्स भी लिए चित्रकूट के संदर्भ में उन्होंने बहुत मेहनत और मनोयोग से अपनी रिपोर्ट तैयार की। मैंने उन्हें अपने लिखे कुछ दोहे भी सुनाए –

*विंध्यगिरि की पीठ पर, अभिषापित से गाँव ।*
*सूखे सरवर यों दिखें, ज्यों रधिया के पाँव ।।*
*सूखा सूखा साल भर, बहुतय मिला कलेस ।*
*सइयाँ बइठो ट्रेन मां चलव कहूँ परदेष ।।*
*हाड़ तोड़ मेहनत किया, पाया नहीं अनाज ।*
*दिल्ली को चिट्ठी लिखी, हाकिम जी नाराज ।।*
*किसकी ड्योढ़ी बांचिये, यह पठार का दर्द ।*
*इसे किताबी मानते, अधिकारी नामर्द ।।*

ये दोहे अतिबल जी ने मेरे नाम के साथ अपनी रिपोर्ट में शामिल किए जो दिनमान में छपी। ये दोहे तब बने जब धर्मयुग में इसी अंचल की त्रासदी पर मेरा लेख छपा। तब लखनऊ से एक सूचना अधिकारी की प्रतिक्रिया धर्मयुग में ही प्रकाशित हुई। मैंने प्रतिक्रिया स्वरूप ये दोहे लिखे और धर्मयुग को भेज दिए। धर्मयुग के सम्पादक धर्मवीर भारती जी का पत्र आया जिसमें उन्होंने लिखा था तुम्हारे लेख की प्रतिक्रिया में सूचना अधिकारी की प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है। वह छप गयी है। ये दोहे अच्छे हैं, इनके प्रकाशन के कई मौके आएंगे।

# सद्गुणों के कारण हुए समाज के मुकुटमणि


● **गुलाबचन्द्र व्यास**

**समाज चिन्तक**

**अतर्रा-बांदा**


पौराणिक कथा के अनुसार वर्तमान काल में बिहार प्रांत के गया जनपद में ही मायासुर नाम का असुर (स्वयं प्राण–पोषण परायन) रहता था जो दूसरों के दुख की चिन्ता न करके स्वयं विषयों का भोग करता था। फलतः विष्णु भगवान द्वारा मारे जाने पर अपनी छाती (हृदय) में चरण रखने का वरदान मांगा जिससे प्रसन्न होकर भगवान ने कहा कि "आज से यह स्थान गया क्षेत्र कहलायेगा और पितरों को श्राद्ध करने से मृतक पितृलोक को प्राप्त हो जायेगा।" और चरण चिन्ह स्थापित कर दिया।

इसी विधान के अनुसार ग्राम–विगहना निवासी श्री मोहनलाल बापू ने गया क्षेत्र में पिण्डदान किया। इसके कुछ दिन बाद उनके घर एक बालक का जन्म माता देवरती से हुआ। देवता से प्रेम करने वाले देवरती देवता के प्रसाद की प्राप्ति होती ही है। उसका नाम गया

प्रसाद रखा गया। क्योंकि लोक मान्यता के अनुसार यह गया श्राद्ध का फल माना जाता है। वही गया प्रसाद शिक्षा प्राप्त करने के लिए अतर्रा नगर में स्थित हिन्दू इण्टर कालेज का विद्यार्थी हो गया। नवजात बालक में दैवी सम्पदा के संस्कार विद्यमान थे।

जो कालांतर में विकसित होकर देवी गुण के रुप में प्रकट हुए।

प्रिय गया प्रसाद गोपाल कक्षा 12 में उत्तीर्ण होकर अपनी शिक्षा परिस्थिति के कारण आगे न करके श्री रामगोपाल गुप्ता बिसण्डा वाले की दुकान में मुनीमी करने लगे। उस समय अतर्रा कस्बा चावल की प्रदेश में सबसे बड़ी मण्डी था। श्री रामगोपाल जी आढ़तिया धान खरीदकर चावल मिल में दिखाते थे। शासन की व्यवस्था के अनुसार 60 प्रतिशत चावल सरकार को देना पड़ता था, जिससे व्यापारी प्रायः मिलावट किया करते थे। उस समय मार्केटिंग विभाग में श्री रामचन्द्र जी एस0आई0 थे जो अत्यधिक ईमानदार थे वे कुर्ता–पैजामा के साथ हवाई चप्पल पहनकर रह लेते किन्तु किसी प्रकार का अनैतिक कार्य स्वयं न करते और न ही करने देते थे। फलतः सरकारी लेनी की चावल की कड़ी जांच पड़ताल होती थी। गया प्रसाद को लेनी का चावल देने के लिए विभाग में जाना पड़ता था जिससे वे श्री रामचन्द्र जी एस0आई0 के सम्पर्क में हो गये तथा गया प्रसाद की सरलता, सहजता आदि गुणों सहित ईमानदारी से प्रभावित हुए जिससे उनकी लेनी का चावल बिना जांच के कर्मचारी स्वीकार कर लेते और अनजाते में श्री रामगोपाल का नाम (गोपाल) शब्द को गया प्रसाद के साथ जोड़कर कहते कि यह 'गोपाल' का चावल है। इसमें मिलावट नहीं है। गोपाल जी ईमानदारी के प्रतीक हो गये। इस प्रकार गया प्रसाद 'गोपाल' हो गये जिससे लोग उन्हें गोपाल जी कहकर व्यवहार करने लगे।

कालांतर में श्री रामगोपाल जी द्वारा इस पवित्र सम्बन्ध का दुरुपयोग किया जाने लगा जिसके कारण गोपाल जी ने नौकरी छोड़ दिया। तद्न्तर हम सभी मित्र मिलकर 'आदर्श बाल निकेतन' के नाम से विद्यालय चलाने का निर्णय लिया जिसमें गोपाल जी को प्रधानाचार्य बनाया गया और वहीं से उनकी स्वाभाविक प्रतिभा का विकास हुआ।

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की स्थापना करके इन्होंने दोनों दिशाओं की यात्रा एक साथ प्रारम्भ किया, अर्थात समाज के अन्तिम व्यक्ति की सेवा ''सर्वस्य तद् भवति मूल निशेचनं यत्'' 'जड़ का सिन्चन सम्पूर्ण वृक्ष का पालन है' के अनुसार प्रारम्भ किया तथा अपने से बड़ों को आदर देकर उनसे सद्भाव के रुप में वही सम्मान प्राप्त किया। इस प्रकार पालन करते हुए छात्र के रुप में तो सद्गुणो के कारण समाज के मुकुटमणि के समान हैं।

मेरी हठधर्मिता, प्रगाढ़ता की परिचायिका बन गई। सन् 1985 में स्थान अतर्रा चौराहा में एक नर्तक के साथ तबला वादन के लिए मेरे द्वारा हठपूर्वक लाये गये। गया प्रसाद ने कुशल वादन करके तत्कालीन उपस्थित समाज का मन मोह लिया सभी ने उस दिन के नर्तक और वादन की भूरि–भूरि प्रशंसा की। बस यहीं से मेरी मित्रता की प्रगाढ़ता का प्रारम्भ हो गया।

अन्ततः मैं छोटों के लिए छत्र–छाया और बड़ो के 'जीवित शरदः शतम'' की कामना करता हूँ।

# जिनके पदचिन्हों पर चलना जरूरी लगता है

**डॉ. अर्चना भारती**
**सुपरिचित सामाजिक कार्यकर्ता**
**उपाध्यक्ष अ. भा. समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट**

*पग–पग पे सुनहरे फूल खिले,*
*कभी न हो काँटों का सामना।*
*जीवन आपका खुशियों से भरा हो,*
*यही हमारी अर्चना और शुभकामना।।*

सर्वप्रथम 83 बसन्त जीवन उत्सव की हार्दिक शुभकामनायें एवं आपके स्वस्थ जीवन के लिए अर्चना है, ईश्वर से आप जैसे व्यक्तित्व का जीवन उत्सव एक महोत्सव होता है जो हम सबको नई ऊर्जा एवं प्रेरणा से भर देता है। बसंत आपका 83 है लेकिन आपकी ऊर्जा एवं सक्रियता 38 वाले युवा से भी अधिक है। इस बुन्देलखण्ड के लिये यहाँ की परिस्थितियाँ आज की पीढ़ी के भी अनुकूल नहीं है। आप से प्रथम भेंट हमें ठीक से स्मरण नहीं है, लेकिन कुछ कार्यक्रम की स्मृतियाँ है जे0पी0 यादव जी के विद्यालय श्री कृष्णा आइडियल स्कूल पल्हरी में एक कार्यक्रम एवं विद्यालय के वार्षिकोत्सव की एक अन्य कार्यक्रम खुरहण्ड में किशोरियों के लिए आयोजित हुआ था हमारे संस्थान की ओर से उस कार्यक्रम की विषय की जानकारी हमारे द्वारा दी गई थी दुर्भाग्यवश आज जे0पी0यादव जी एवं डॉ अनीता सागर दोनों ही हमारे बीच नहीं हैं लेकिन अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान एवं आपसे जुड़ा हुआ यह नाम 8 से 9 वर्ष का हो गया है। जब वर्ष 2013 में विवाह के बाद मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से बुन्देलखण्ड के एक छोटे से गाँव मथनाखेड़ा आई तो बहुत सारे स्वप्न और आकांक्षाओं के साथ समाज सेवा एवं राष्ट्र के लिए कुछ करने की इच्छा तो हमेशा ही मेरे अन्दर रही। आपसे जुड़ने के पश्चात लगा कि संस्थान के माध्यम से हम बुन्देलखण्ड के लोगों के लिये बहुत कुछ कर सकते हैं, जिसकी यहाँ बहुत आवश्यकता है। इतने वर्षों से संस्थान के माध्यम से किशोरियों के स्वास्थ्य के लिए मैंने कई कार्यक्रमों में सहभागिता की, मन को बड़ा संतोष मिलता है। इस क्षेत्र की किशोरियों जागरुकता की बहुत आवश्यकता है, जिसके लिए हमने सार्थक कार्य किये। मेरे ससुर जी एवं पति मुझसे कहते है कि हम बुन्देलखण्ड में गोपाल भाई (पिताजी) के किये हुए कार्यों के बारे में सुनते आये हैं और हमें लगता है ये हमारा सौभाग्य है कि हमें आपके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आपके द्वारा दिये गये दायित्व संस्थान की उपाध्यक्ष के द्वारा इस परिवार का सदस्य बनकर प्रसन्नता होती है। इन 8–9 वर्षों के समय में हमने कई अच्छे एवं बुरे दिन भी देखे। सबसे कठिन समय था जब भागवत जी का आकस्मिक जाना हुआ तब सभी के लिए पारिवारिक एवं संस्थान की बहुत बड़ी क्षति थी, लेकिन उन कठिन परिस्थितियों में आपने जिस प्रकार से परिवार और संस्थान को सम्बल दिया, वो हृदयस्पर्शी है। जिस चित्रकूट की भूमि में राम वनवासी बनकर प्रभु राम बन गये, जहाँ राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख ने समाज के लिए नया प्रकल्प दिया उस भूमि को अपनी कार्यस्थली बनाकर आपने नये पदचिन्ह बनाये हैं, जिन पर हम चलने का प्रयत्न कर रहे हैं। सबके पिता जी इसीलिए हैं आप क्योंकि आपसे पितातुल्य स्नेह प्राप्त होता है और गोपाल जैसे सखा होने के कारण आप गोपाल भाई हैं। एक बार पुनः स्वस्थ्य जीवन की कामना करते हुए...

*नये कमरों में चीजे पुरानी कौन रखता है,*
*परिंदों के लिए कुण्डो में पानी कौन रखता है।*
*हम ही थामें हुए हैं गिरती हुई दीवार को वरना*
*इतने सलीके से बुजुर्गों की निशानी कौन रखता है।*

# हम कोल आदिवासियों के मसीहा हैं गोपाल भाई

**श्यामा**
सामाजिक कार्यकत्री, रंगकर्मी
मानिकपुर

अपने हक़ और अधिकार पाने के लिए आदिवासी **पिताजी** के साथ–साथ चल पड़े। जिस प्रकार महात्मा गांधी जी ने देश के लिये आज़ादी दिलाने में पूरा जीवन समर्पित किये, उसी प्रकार माननीय पिताजी का भी जीवन इस पाठा के कोल/आदिवासियों को बन्धुवापन की जिन्दगी से छुटकारा दिलाने में भी अहम भूमिका निभाने का संघर्ष किया। यहां के जो दबंग प्रकृति के लोग थे वे इनके नाम को सुनकर लोगों से धमकी दिलाने का भी काम किया करते थे लेकिन पिता जी उनकी धमकियों से कभी भयभीत नहीं हुए, वे अपने सिद्धांत पर निरंतर चलते रहे। धीरे–धीरे इस पाठा क्षेत्र में उन्होंने ऐसी अलख जगायी कि पाठा के पूरे दलित परिवार माननीय पिताजी के बताये हुए रास्ते पर चलने का संकल्प उठाये और बोले कि *''खूब सहा है, अब न सहेंगे''* इस नारे की गूंज पाठा में छा गयी। तब यहां के दबंगों में दहशत फैल गई कि अब इस पाठा में कोई इन्सान आ गया है, जो कोलों में जागरूकता पैदा कर दिया है। जब गांव के लोगों में चेतना आयी तो धीरे–धीरे अपनी जगह–ज़मीन का पता लगाने लगे और खेती–किसानी भी करने लगे।

पिता जी के द्वारा लोगों की जमीनों पर मेड़बन्धी और सिंचाई का थोड़ा–बहुत सहारा कर दिया गया, जिससे लोगों के खेतों की आय कई गुना बढ़ गई, लोग बड़ी उत्सुकतापूर्वक संस्था को अपना घर–परिवार मानकर अपना काम करने लगे, अपने हक और अधिकार की लड़ाई लड़ने के लिए कई धरना प्रदर्शन एवं क्रमिक उपवास भी लोगों को करना पड़ा, फिर भी लोग बराबर काम करते रहे, बहुत से कार्यकर्ताओं को इस पाठा को जगाने में दबंगों से लाठियां भी खानी पड़ी फिर भी पिता जी का उत्साह बराबर मिलता रहा किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं होती थी, पिता जी के आने से देखा गया कि यहाँ के कोल, आदिवासियों के बच्चों में शिक्षा का स्तर बहुत कमजोर था। पिता जी द्वारा गांव–गांव में भारत माता शिक्षा संस्कार केन्द्र खोले गये। जिनमें छोटे–छोटे बच्चों की शिक्षा के साथ–साथ

और संस्कारों को बदलने का काम किया जा रहा था, इन्हीं केन्द्रों से पढ़–लिखकर लोग पूरा अपने अधिकारों को समझने लगे। धीरे–धीरे हमारे गांव पाटिन में एक केन्द्र चल रहा था तभी से संस्थान के कार्यकर्ताओं से हमारे घर–परिवार का लगाव हुआ तो मैं भी एक बार रानीपुर भट्‌ट में बच्चों का बाल मेला हो रहा था तो मुझे भी वहां जाने का अवसर मिला वहां पर कार्यक्रम को देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। पिता जी के मार्गदर्शन से मुझे संस्थान के मंचों पर भी कार्यक्रम करने के अवसर मिले।

पिता जी की प्रेरणा से मुझे आगे बढ़ने के अच्छे अवसर मिलते रहे। यहाँ तक कि कई जगह ऐसे कार्यक्रम करने का अवसर हमारे पाठा के लोगों को मिला। पिता जी का मार्गदर्शन न होता तो ऐसी जगहों पर पहुंचने के कोई अवसर नहीं मिलते यहाँ तक कि लखनऊ, मुम्बई, दिल्ली जैसे स्थान में अगर कार्यक्रम प्रस्तुत करने का मौका मिला है और इस पाठा की जो पुरानी संस्कृति है, उसके माध्यम से पाठा का नाम इतिहास के पन्नों में आया है। ये सिर्फ माननीय पिता जी की मेहनत का फल है। जो आज पाठा का आदिवासी समूह आगे आया है। इन्ही का आर्शीवाद है। चाहे तो सामाजिक स्तर पर देखें, चाहे राजनैतिक स्तर पर यहाँ तक जिला पंचायत से लेकर क्षेत्र पंचायत और ग्राम पंचायती का भी चुनाव लड़कर कसेल परिवा आगे आये हैं। शिक्षा स्तर पर भी संस्थान से पढ़कर आगे निकले हुये बच्चे अपने परिवार का पालन–पोषण अच्छी तरह से कर रहे हैं। ये सारी उपलब्धियां माननीय पिता जी की देन हैं। आज जो इस पाठा में आदिवासियों में चेतना/जागरूकता प्रकट हुई है वह केवल पिता जी के कारण ही आया है। ऐसे इंसान को देवता के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि पिता जी कोल, आदिवासियों के मसीहा है।

# विरल समाज शिल्पी

शंकरलाल गुप्ता
सुप्रसिद्ध समाजसेवी,
दृष्टि संस्थान, कर्वी

गया प्रसाद गोपाल 'गोपाल भाई' नाम है उत्थान का, जिन्होंने अपनी पूरी जवानी समाज के सबसे वंचितों के लिए झोंक दी। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित मानिकपुर का बीहड़ पठारी क्षेत्र जहाँ कोलों के रूप में मानव का निवास है और जो किसी समय सृष्टि के पालक भगवान राम के सखा थे। उनके जाने के बाद किसी ने उनको सखा नही बनाया, बल्कि वे अत्यन्त पिछड़े मनुष्य यानी जनजाति में डाल दिए गए। जबकि भगवान राम का सानिध्य पाने वाले वे मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ थे। उन्होंने बिना किसी तप–तपस्या के प्रभु से साकार किया। आज के पढ़े–लिखे अग्रणी लोगो ने उनको मानव बनने की प्रतीक्षा सूची वाला बना दिया। न घर, न बाहर, न कोई बसेरा बस जहाँ जागो वही सबेरा ऐसे जनजातीय लोगों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करने, उन्हें जीवन जीने का अधिकार दिलाने के लिए चित्रकूट की धरती ने गोपाल भाई को चुना और भेजा। सुभाषबाबू ने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहा तो कोलों ने गोपाल भाई को 'पिताजी' की उपाधि दी। जैसे एक पिता अपने पुत्रों को सबकुछ देना और दिलाना चाहता है वैसे ही आपने कोलों को सबकुछ दिया और दिलाया। अत्यन्त भयावह जंगलो में रहने वाले लोगो को अपना पेट भरने के लिए दिन–रात दूसरो की चाकरी करनी पड़ती थी, पूरा का पूरा इलाका दबंगो और डाकुओं के हवाले था। इन दो पाटों के बीच कोल पिस रहे थे, बिना नाम के बिना पहचान के। पता नही विधाता की सेवा में कौन सी गलती की इन लोगों ने कि बस पिछडते ही गए, जीवन बद से बदतर होता गया। उसी विधाता ने गोपाल भाई को अपना दूत बनाकर भेजा को जिन्होनें इनके लिए संघर्ष की पराकाष्ठाओं को पार किया और स्वावलम्बन को इनके दर तक पहुँचाया।

दृष्टि संस्थान की स्थापना का उद्देष्य भी इन्हीं भवानाओं के साथ हुआ और कहीं न कहीं आपकी प्रेरणा का पुट भी इसमें था और भी समाज के सबसे वंचितों के उत्थान हेतु कारवाँ चल पडा। आज मैं गोपाल भाई को देश के उन श्रेष्ठ शिल्पियों के बीच पाता हूँ जिन्होनें मानवता को गढ़ा, जंगल को जंगलियों को गढ़ा। जिनकी वजह से दर–दर भटकने वाले अपने को मजबूत और स्वावलम्बी बनाया। ऐसे समाज शिल्पी का आशीर्वाद और मार्गदर्शन दृष्टि परिवार के लिए गौरव की बात है। आपकी पितृत्व छाया में पाठा क्षेत्र की नेत्रहीन बालिकाओं को दृष्टि की राह मिली और आज जहां कोल जाति की कोई सामान्य बालिका शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही है, वहीं नेत्रहीन दृष्टि में पढ़ रही है, बढ़ रही है। दृष्टि की छात्राओं को पाठा की संस्कृति से रूबरू कराने का श्रेय मात्र गोपाल भाई को जाता है। जिन्होनें वहाँ के गीत–संगीत के लोक नृत्यों को दृष्टि तक पहुँचाया।

अपने जीवन के 83 बसंत पूर्ण करने के बाद भी आपमें 17वें बसंत जैसी फुर्ती दिखती है। ऐसी चुस्ती सदा–सर्वदा बनी रहें और शतायु से भी पार जाए ऐसी शुभकामनाएं दृष्टि परिवार अपने हृदय से करता है।

# मेरे शिक्षक, मेरे संरक्षक

**काशी प्रसाद**
**रिटायर्ड सी.ओ.**
**झांसी**

आदर्श बाल निकेतन अतर्रा में 'पिता जी' प्राचार्य थे और हम लोग आचार्य जी कहकर सम्बोधित करते थे। विद्यालय की स्थापना भी नयी–नयी हुई थी। शायद किराये के भवन पर ही संचालित होना था। मेरी उम्र 10 वर्ष की थी पढ़ने में ठीक था। वर्ष 1969 में ग्राम में कक्षा 5 की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात अग्रिम शिक्षा हेतु मेरे जनक मुझे अतर्रा लाये तथा 3 दिन तक कई विद्यालयों में भ्रमण करने के पश्चात बाल निकेतन पर खोज समाप्त हुई तथा मुझे पिताजी के सुपुर्द कर, मेरे जनक गाँव चले गये। उस समय माताश्री भी साथ में विद्यालय के पीछे एक कोठरी में निवास करती थी। हमारे खान–पान, देखभाल की जिम्मेदारी दो पुत्रों के साथ तीसरे पुत्र की भी आ गई। दीपावली या दशहरे के अवकाश पर जब मैं घर गया तो मेरी जननी ने मुझे बताया था कि तुम्हे अतर्रा छोड़कर जब जनक घर आये तो मेरी दादी (पिता की माँ) ने पिता को बहुत डांटा था और कहा था लड़के को कहाँ छोड़ आये उसे तुरन्त लाओ। तब पिता जी ने कहा था यहाँ से अच्छी देखभाल और खान–पान की व्यवस्था आचार्य जी के यहाँ है। अपने पुत्र से ज्यादा अच्छी तरह रखा जा रहा है। पिताजी ने दादी जी को बहुत अच्छी तरह से समझाया था। सच्चाई भी यही थी। मुझे माताश्री के वात्सल्य व आचार्य जी के संरक्षण में कोई कष्ट नहीं था। पुरानी स्मृतियों में माताश्री के स्नेह को याद करते हुए प्रणाम करता हूँ।

साल 1972 कक्षा 8 की वार्षिक परीक्षाएं हिन्दू इण्टर कालेज अतर्रा में चल रही थी। हम लोग बाल निकेतन से परीक्षा देने हेतु क्रमबद्ध होकर अनुशासन ढंग से जाते थे। गणित का पेपर था निकट बैठी बहन की सहायता करने के कारण 5 नम्बर का प्रश्न समय प्रबन्धन के कारण छूट गया। आचार्य जी को बताया गया। रास्ते में क्रोध पर नियंत्रण रहा। निकेतन परिसर में क्रोध का विस्फोट हुआ, अच्छी मरम्मत यादगार रही। स्वयं भी आंसुओं से भीग रहे थे।

वर्ष 1980 में पिता जी के साथ पाठा क्षेत्र का भ्रमण हुआ। सरकार की किसी योजना के तहत बकरी/मुर्गा पालन हेतु धनराशि उपलब्ध कराये जाने हेतु सर्वे की कार्यवाही की जानी थी। शाम हो रही थी बैंक/प्रशासनिक अधिकारियों के मन में भय डकैतों का व्याप्त था तथा शीघ्र लौटने का लगातार अनुरोध बार–बार कहा जा रहा था। ''गोपाल भाई आप सूची उपलब्ध करायें हम धनराशि उपलब्ध करा देंगे, आप जल्दी यहाँ से वापिस ले चलो''। यद्यपि पिता जी द्वारा आश्वसन दिया जा रहा था परन्तु टीम के चेहरे पर स्पष्ट भय के लक्षण थे। सर्वे/साक्षात्कार की कार्यवाही अधूरी छोड़कर हमें वापिस आना पड़ा। काफी समय तक आपसी चर्चा का विषय रहा।

वर्ष 1984 में मेरा चयन उ0प्र0 पुलिस में उपनिरीक्षक के पद पर हुआ। प्रशिक्षण पूर्ण होने पर जनपद आगरा के थाना खेरागढ़ में नियुक्ति हुई। संस्कारों में ईमानदारी थी परन्तु कुछ दिनों में ही नशा उतरता दिखाई पड़ा। कुछ दिनों में ही प्रभारी कार्यालय एक रात्रि सरसों के तेल के दो टैंकर पकड़े गये कुछ लेन–देन की वार्ता साथ में रहे आरक्षीगण करते रहे परन्तु मेरे द्वारा वैधानिक प्रपत्र न होने के कारण टैंकर थाने में खड़ा कर दिये गये तथा दीवान से यह कहकर अच्छा वकील कर वैधानिक किये जाने के निर्देश दिये गये और मैं रात्रि विश्राम में चला गया। प्रातः काल थाने आये पर विदित हुआ कि टैंकर छोड़ दिये गये हैं। दीवान ने बताया कि थाना प्रभारी ने छोड़े हैं। दुख हुआ। थाना प्रभारी से वार्ता की गई उनके द्वारा उच्च अधिकारियों के आदेश का उल्लेख करते हुए सामंजस्य बिठाने की बात कही गई। आचार्य जी से वार्ता हुई और एक बार नौकरी से त्यागपत्र देने का मन हुआ। आचार्य जी ने सम्बल दिया, आत्मबल बढ़ाया। उन्हीं की प्रेरणा से नौकरी का कार्यकाल पूर्ण हुआ।

## ॥ नमन ॥

आज मेरा मन बहुत हर्षित है कि हम सब अपने पूज्य पिताजी का 83वां जन्मोत्सव मना रहे हैं। उनके लिए अपने भावों को शब्दों में लिख पाना असंभव है फिर भी लिखने की कोशिश करता हूँ। आपने मेरे लिए बहुत किया जिसका कर्ज़ मैं कभी नहीं उतार सकता। आपके छोटे भाई का बेटा होते हुए भी आपने मुझे अपने बेटे की तरह पाला, सबसे ज्यादा प्यार दिया और विश्वास किया। मैं आज जो भी हूँ आपकी बदौलत हूँ।

आपसे प्राप्त संस्कारों की वजह से मेरे सभी बड़े भाईयों का पिता तुल्य स्नेह अविस्मरणीय है। मेरी इकलौती बड़ी बहन जिसकी छत्रछाया में रहकर प्रयागराज में स्नातक किया उनका हमेशा ऋणी रहूँगा। आप हमेशा खुश और स्वस्थ्य रहे भगवान से प्रार्थना है। मैं अपना सिर आपके चरणों में धरते हुए प्रणाम करता हूँ।

**संदीप**
भ्रूण विज्ञानी
कोटा, राजस्थान

# पिता सरीखी छाँव मिली

सत्यनारायण मिश्र
सुपरिचित पत्रकार
गुवाहाटी, आसाम

स्मृति पटल पर कई सारी रेखाएँ उमड़–घुमड़ रही हैं। कुछ उजली और बहुत सारी धुँधली–सी। औसत दर्जे से नीचे का फक्कड़ युवा, सपनों की उड़ान प्रकृति के पार हमेशा अपने से बड़े और ज्ञानी–गुणी जनों का सानिध्य जल जंगल और ज़मीन से जुड़े रहने की ललक ऐसे ही अनगिनत आदि–इत्यादि के बीच आठवें के दशक के दौरान मेरी श्री गया प्रसाद गोपाल नाम के उस व्यक्ति से भेंट होती है, जिनकी सहज सरल विराटता का आभास हर आने वाले समय के साथ गहरा और गहरा होता जाता है। आक्षेप तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम पर भी लग चुके हैं, समाज जीवन में 'गोपाल जी', 'भाई साहब' और बहुतायत में 'पिताजी' के सम्बोधन से पहचाने जाने वाले भी अछूते नहीं रहे, लेकिन हर बार समाज ने उन्हें सिर–माथे पर ही लिया। सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट से जुड़े प्रारंभिक दिनों का दौर हो, अथवा फिर *'गगरी न फूटे खसम मर जाये'* जैसे लोकगीतों से अपने पत्थर से भी कठोर दुर्दिनों को तिल–तिल कर जी रहे पाठा के कल्याण के लिये जारी संघर्ष की गाथाएँ भाई साहब का पद चलन अनवरत है। पथ जितना ही दुरूह दुर्गम मिला, आर्त्त मनों को सम्बल देने की चेष्टाएँ उतनी तीव्र होती गयी। आयु के 83वें सोपान में भी वही लौ, वही जिजीविषा और लक्ष्य तक पहँचने की वही संकल्पना अभी भी अग्रसर है।

लौटता हूँ, पुनः स्मृतियों की उस गली में, जब कर्वी से बाँदा अथवा प्रयागराज तक कहीं भी, कभी भी हर स्टेशन पर टीटी को ताड़ते हुए पैसिंजर ट्रेन के डिब्बे बदल–बदल बिना टिकट यात्रा अपना अधिकार मानता था। बेरोज़गारी और यायावरी के उन दिनों में एक बार यूँ ही भटकते हुए मानिकपुर स्टेशन के पास स्थित समाज सेवा संस्थान के तत्कालीन मुख्य कार्यालय पहुँचा था। पाठा के गाँव जवार से आये शोषितों वंचितों का जमावड़ा था। पहली बार वहीं गोपाल जी से भेंट हुई और फिर अनायास ही मैं उन्हें भाई साहब ही कहने लगा। तथ्यों के साथ कदमताल करती और बेधड़क रिपोर्ट लिखने में माहिर महान पत्रकार भारत डोगरा, समाजसेवी पत्रकार हजारी सिंह 'पंकज' और आज के कद्दावर नेता भाई दद्दू प्रसाद भी वहीं मिले थे। उस रात मैं वहीं आदिवासी कोल भाइयों के मध्य रुक गया था, उसके बाद से ही उनकी 'दुर्गम्य' गाथाएँ लेखनी की संगी–साथी बन गयी।

'भाई साहब' को मैंने कभी 'पिताजी' नहीं कहा लेकिन जब भी उनसे मिला, उन्होंने मुझे पितृवत् स्नेह दिया। वैसा ही ममता भरा स्नेह मुझे उनकी जीवन संगिनी और हमारी भाभी जी से मिला। बाँदा में अमर उजाला का पहला ब्यूरो 1992 में खुला था मुझे गुवाहाटी से बुलाकर अमर उजाला कानपुर के पहले संपादक आदरणीय अच्युतानन्द जी मिश्र ने उसकी जिम्मेदारी सौंपी थी। भाई साहब गोपाल जी को जब यह जानकारी मिली थी, वे वैसे ही खुश हुए थे, जैसे मेरे अपने अम्मा–बाबू। भाई साहब का सतत् स्नेह और लगाव ही था, जिसके कारण अम्मा–बाबू अपने महाप्रयाण तक उन्हें अपना सबसे बड़ा पुत्र मानते रहे. यहाँ तक कि जब मैंने गुवाहाटी में रहते समय वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने का निर्णय लिया, शारीरिक अस्वस्थता के चलते अम्मा–बाबू ने भाई साहब गोपाल जी को ही अपना प्रतिनिधि बनाकर असम भेजा। उन्होंने ही पिता के सारे दायित्व निभाये।

ऐसे एक व्यक्ति के बारे में लिखना भावनाओं के महासागर में डूबने–उतराने जैसा है। एक पन्ने में समेटने लायक शब्दों का अभाव स्पष्ट है–

*"बीज से प्रस्फुटित एक पौधा,*
*पौधे से क्रमशः आकार लेता वृक्ष.*
*बरसों घोर शीत–ताप*
*और बारिश की मार झेलने के पश्चात्*
*अपनी बाहें फैलाये खड़ा होता है,*
*ऐसा वटवृक्ष!*
*घेरे रहती हैं अपने क्रोड में उसकी जटाएँ,*
*अपने तले झुलसती गर्मी में आये*
*हर पथिक को।"*

# पिताजी के साथ का अमूल्य समय

सरिता सोम
सशस्त्र सीमा बल
आसाम

*(गोपाल भाई के मार्गदर्शन में पहले सामाजिक कार्यकर्ता के रुप में समाज सेवा और सेनानी के रुप में राष्ट्र सेवा में समर्पित। –सं.)*

सर्व प्रथम आपको जन्म दिवस की ढेर सारी शुभकामनायें। आप हमेशा किसी न किसी रुप में हम सबके साथ रहिए और ऐसे ही हमारा मार्गदर्शन करते रहें। मुझे ज्यादा टाइम तो नहीं मिला आपके साथ रहने का लेकिन जितना भी मैं आपके साथ रही उतने में ही मुझे बहुत कुछ मिला।

पिताजी एक सरल स्वभाव, प्रकृति प्रेमी, संगीत प्रेमी एक बहुत अच्छे लेखक एवं समस्त मानवों के प्रति उनका व्यवहार वो बहुत ही सुशील स्वभाव के हैं। मेरा मानना है कि ऐसे व्यक्ति को हर घर में जन्म लेना चाहिए तो हर घर स्वर्ग हो जाये। आज हर घर में ऐसे शिक्षक बच्चों का मार्गदर्शन करने के लिए एक ऐसा पिता होना बहुत जरुरी है। मेरा तो दिल करता है कि मैं फिर से छोटी जो जाऊँ और अपना पूरा जीवन पिता जी की शिक्षा, दीक्षा में गुजारुँ। पिताजी महात्मा गांधी के रुप में भी जाने जाते हैं। उन्होंने एस0सी0 / एस0टी0 जनजातियों के लिए अपना सर्वत्र न्योछावर कर दिया। पिताजी बड़े दूरदर्शी हैं जब मैं एक कर्मचारी के रुप में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान में कार्यरत थी तो उसमें बहुत सारे कार्यकर्ता थे लेकिन पिताजी अपने दूरदर्शिता से मेरे सामाजिक कार्य के गुणों को भांप कर मेरे भविष्य को आंक लिया। जब एक हप्ते के शिविर जीवन विद्या शिविर सोम भइया की क्लास लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस जीवन विद्या शिविर में पिता जी ने अपने कुछ साथियों के साथ मुझे भी बुलाया और अपने साथ हापुड़ में एक हफ्ते का शिविर का पूर्ण अनुभव कराया। इस शिविर में सोम भइया ने बताया कि एक मनुष्य का अस्तित्व क्या है। उन्होंने बताया कि आज मानव मानव मानव नहीं रह गया।

मेरे पिता जी एक बहुत अच्छे शिक्षक भी हैं जिस विद्यार्थी ने भी इनसे शिक्षा ग्रहण की होगी तो जरुर बहुत ही अच्छा इन्सान और आगे तक गया होगा। मैं भी अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझती हूँ कि थोड़ा ही किन्तु पिता जी के साथ कुछ अमूल्य

समय बिताने को मिला। इन कुछ पलों में ही मैने अपना अस्तित्व जान लिया लेकिन मैने एक चीज नोटिस किया है कि मेरे पिताजी को मुझसे कोई आशा थी कि मैं कुछ बड़ा और सबके जीवन के हित में कुछ करुँ। उन्होंने मुझे ये एहसास दिलाया लेकिन मैं उनका ही सपना पूरा नहीं कर पाई। पिता जी जो मुझे बिल्कुल अपनी तरह बनाना चाहते थे जैसे वो दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे वैसे भी मुझझे भी। आज मैं अगर डिफेन्स में न आई होती तो मैं जरुर अपने पिता जी का सपना पूरा करती। एक पिता का सपना पूरा करने के चक्कर में अपने दूसरे पिताजी का सपना को अधूरा छोड़ना पड़ा पर ऐसा नहीं है मेरे पिता जी के एक–एक बच्चे जिन्होंने पिताजी की छत्रछाया में रहकर जीवन यापन किया उन सबने कभी कड़ी मेहनत कर पिताजी के सपने को पूरा करने में सहयोग दिया। मेरी जो डियूटी है असम राज्य के सीमा भूटान बार्डर में कार्यरत हूँ। मेरी पोस्ट सशस्त्र सीमा बल पर है। पिताजी आपको जानकार यह बहुत खुशी होगी कि मैं इस डिफेंस में आकर भी मेरा काम आज भी वही है बस फर्क सिर्फ इतना है कि पहले सिर्फ अपने गाँव के लोगों भर की समस्यायें और सुरक्षा का दायित्व था और इस डिर्पाटमेण्ट में आकर के सीमान्त क्षेत्र में रह रहे लोगों के प्रति देश भक्ति एवं सुरक्षा पैदा करती हूँ। अनाधिकृत रुप से भारत क्षेत्र के अन्दर प्रवेश एवं निवास करने वाले व्यक्तियों को रोकना, तस्करी एवं स्मगलिंग को रोकना। उत्तदायित्व के क्षेत्र में नागरिक कार्यवाही कार्यक्रम चलाना इससे हमारे डिपार्टमेन्ट की तरफ से गाँव में जाकर दवाइयाँ बाँटना, महिलाओं के लिए रोजगार के साधन, सिलाई का कोर्स करवाना, साफ–सफाई के बारे में बताना। मैं अपनी बातों को विराम देते हुए एक बार फिर अपने प्रिय पिताजी को जन्मदिन की ढ़ेर सारी बधाइयाँ देती हूँ। आप इसी प्रकार से हम सबको सुखद जीवन जीने की कला सिखाते रहें।

## शुभकामनाएं

**गोमती तिवारी**
**सामाजिक कायकत्री, शिवरामपुर**

*(तमाम विपत्तियों को झेलते हुए गोपाल भाई की प्रेरणा से सामाजिक कार्यकर्ता बनी, बच्चों को काबिल बनाया। –सं.)*

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के गोपाल भाई के द्वारा मुझे मेरी लाइफ में संभल सुरक्षा एवं आर्थिक सहयोग का आधार मिला जिसके लिए मैं परेशान थी साथ ही कुछ जीवन की उपयोगी एवं आवश्यक बातों को सीखने को मिला संस्था में रहकर मैंने काफी जगह घूमने का सौभाग्य मिला जैसे कालिंजर का किला बिहार ऋशिकेश मानपुर बरियारी कला इस प्रकार संस्था में रहकर मैंने अपने बच्चों का पालन पोषण एवं घर के लोगों की दवा एवं उनकी अच्छी शिक्षा के लिए काफी प्रयास किया मैं संस्था की आभारी रहूंगी कि गोपाल भाई ने उन दिनों मदद की जिन दिनों मैं हलाकान थी। आज मैं जो कुछ भी हूँ गोपाल भाई जी के संबल के कारण ही हूँ। उनके यशस्वी जीवन की 83वीं वर्षगांठ पर ह्रदय से शुभकामनाएं।

# प्रकृति पुत्र, चिंतक-चितेरे गोपाल भाई

**प्रमोद दीक्षित 'मलय'**
**शिक्षाविद, लेखक**
**बांदा**

*( लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक है और विद्यालयों को आनंदघर बनाने के अभियान पर काम कर रहे हैं। –सं.)*

गोपाल भाई! पिता जी!! भाई साहब!!!

ये शब्द केवल कोरे सम्बोधन भर नहीं है बल्कि इन तीन सम्बोधनों में एक महनीय व्यक्तित्व समाया हुआ है अपनी संवेदनशीलता, तरलता, मधुरता, लोकतांत्रिक चेतना एवं सामूहिकता के सद्संस्कार को सहेजे–समेटे हुए। व्यक्ति निर्माण के साधनास्थल संघ शाखा की भास्वर भट्टी में तप कुंदन बन चमके एवं मधुर कंठ से निकले गीतों ने स्वयंसेवकों के बीच भाईसाहब नाम से प्रिय कर दिया। एक विद्यालय का संचालन कर भारत के स्वर्णिम भविष्य के शिक्षा एवं संस्कार का दायित्व हाथ में लिया तो बाल हितैसी आचार्य जी होकर बच्चों एवं अभिभावकों में लोकप्रिय हो गये। वंचित, पीड़ित एवं उपेक्षित अंतिम पंक्ति में खड़े आम जन एवं वनवासी कोलों की सुध ले उन्हें मानव होने का गौरव, गरिमा, सम्मान–स्वाभिमान और स्वावलम्बन का सुदृढ़ आधार दे एक पिता की भांति पोषण–प्यार भरा स्नेहिल हाथ उनके शीश पर धरा तो 'पिताजी' की संज्ञा से अभिहित हो लोक विख्यात हुए। स्वैच्छिक क्षेत्र में कर्म कौशल, कर्मठता एवं सेवा साधना की ऐसी अमिट छाप छोड़ी कि साथियों के बीच गोपाल भाई के आत्मीय प्रिय सम्बोधन से समादृत हुए। वास्तव में इन तीन सम्बोधनों को अपनी कर्म–काया में आत्मसात किये हुए वह लोक संस्कृति, लोक साहित्य एवं लोक संगीत की अनवरत खोज़, संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कृत संकल्पित हैं तो वहीं पीड़ित मानवता की वेदना और पीर को अहर्निश स्वयं में महसूसते उनके जीवन पथ पर खुशियों के सुवासित सुमन बिखेरने को कटिबद्ध भी। वह रचनात्मक आग और उपलब्धियों के उल्लास के सुमधुर गायक हैं, चिंतक–चितेरे हैं। वह प्रकृति पुत्र हैं, इसीलिए प्रकृति के शोषण से उनका हृदय द्रवित होता है और प्रकृति पोषण के लिए स्वयं समर्पित हो वह हर पल कुछ

नया रचते–गुनते हैं। उनके सान्निध्य–संस्मरण की पूंजी से मेरा मन–मस्तिष्क समृद्ध है।

अपनी बात कहाँ से शुरू करूँ, स्मृतियों के तमाम स्नेहिल धागों में से कौन सा सिरा गहूँ या भेंट–मिलन के तमाम आत्मीय सुखनुमा पलों में से किस दृश्य को उकेरकर आगे बढ़ूँ जीवन की लोकलय के किस राग को आधार बनाकर मन के भाव प्रकट करूँ, कुछ समझ नहीं पा रहा हूं। क्योंकि व्यक्तित्व इतना विषद् एवं विराट है कि शब्दों में बांध पाना मेरे जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति के लिए लगभग दुष्कर कार्य ही है। पर जतन तो करूँगा, लेकिन यह निश्चित है कि जितना कह–लिख पाऊंगा उससे कहीं अधिक अनकहा–अबोला रह जायेगा। तो संस्मरणों की इस रोमांचक यात्रा में फिलहाल मैं एक पगडंडी पकड़ आनंद–कानन की ओर पहला क़दम धरता हूँ। यह यात्रा केवल पथरीले, पठारी एवं कंटकाकीर्ण रास्ते से होकर गुजरना भर नहीं है बल्कि यह जीवन की यात्रा है। एक सामान्य मानव के विशेष होने और विशेष होकर भी साधारण बने रहने की है। मैं कोई उलटबांसी नहीं पढ़ रहा, यह सच है। सफलताओं एवं उपलब्धियों के शिखर पर अवस्थित होकर अपनी जड़ों से जुड़े रहना, निरभिमानिता की सतत साधना का ही परिणाम है। यह 'मैं' से 'हम' होने की लोक चिंतन की परम्परा का मर्म है। अपनी माटी की नमी और ताप को पैरों में महसूसना है।

पहली भेंट कब हुई, कुछ ध्यान नहीं। पर नाम बचपन से सुनता रहा था। क्योंकि मेरे पिता श्री बाबूलाल दीक्षित, श्री गुलाबचन्द्र त्रिपाठी उपाख्य व्यास जी, श्री लल्लूराम शुक्ल, श्री राजाभइया सिंह की मित्रता के चलते घर आने पर चाय–पानी के दौरान गोपाल भाई जी और उनके सेवा कार्यों के बारे में प्रायः चर्चा होती रहती। गोपाल भाई जी घर भी आये पर तब मेरा काम केवल चाय–जलपान के पूरित पात्र रखकर प्रणाम निवेदित करना भर ही था। प्रत्यक्ष भेंट बहुत बाद में हुई। शायद, यही कोई पचीस–छब्बीस साल पहले की बात होगी। राष्ट्र साधना एवं समाज रचना में जुटे हम लगभग तीस व्यक्तियों (डॉ0 कमलाकान्त पांडेय, राजाभइया सिंह, केशव गुप्ता, तारकेश्वर शुक्ला आदि) का समूह अगस्त की एक सुबह भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट चित्रकूट के प्रांगण में दाखिल हुआ। आम के वृक्ष के नीचे चबूतरे पर बैठक हुई और गोपाल भाई का मार्गदर्शन मिला। अचानक रिमझिम बारिश शुरू होने पर सभागार बैठकों का दौर चला और कार्य वृद्धि एवं समाज रचना की योजनाएँ बनीं। सब्जी–चावल, रोटी, रायता और दाल मखनी का सुस्वादु भोजन पाकर हम सभी तृप्त हुए थे। तब पहली बार गोपाल भाई से भेंट हुई, बातें हुई पर मैं संकोच की झीनी चादर ओढ़े रहा। और तभी उनको भाई साहब का संबोधन दिया तो आज तलक जारी है। हालांकि मेरा भाई साहब कहना बड़ा अटपटा सा लगता है क्योंकि गोपाल भाई मेरे पिताजी के मित्रों में से हैं। कार्य व्यवहार में भावनाएं प्रमुख होती है संबोधन गौण।

ऐसे ही एक बार आयुर्वेदिक कॉलेज में अध्ययनरत कुछ छात्रों ने चित्रकूट एवं पाठा क्षेत्र में औषधि अन्वेषण के संबंध में सहयोग की आकांक्षा व्यक्त की और तब शबरी जल प्रपात एवं संस्थान द्वारा टिकरिया में विकसित औषधि वाटिका के भ्रमण–दर्शन की योजना बनी। तय तिथि में 3 गाड़ियों में अतर्रा से चित्रकूट पहुंचे और फिर शबरी जलप्रपात। संयोग से मुझे भाई साहब के साथ गाड़ी में बैठने का अवसर मिला। भाई साहब के साथ कई बार बातचीत में सुनने को मिला था कि पाठा में पानी का गम्भीर संकट है और महिलाओं का लगभग आधा दिन पानी की व्यवस्था करने में निकल जाता है। तो संयोग से पाठा क्षेत्र में घुसते ही जोरदार बारिश ने

हम सब का स्वागत किया। चारों तरफ पानी ही पानी और तब मैंने भाई साहब से सवाल किया कि यहां तो बहुत पानी है और आप कहते हैं कि पानी का संकट है। आपने उत्तर देने की बजाय कहा कि अभी बारिश का आनन्द लीजिए, वापस आते समय बात करेंगे। गंतव्य पर गाड़ियां रुकीं। शबरी प्रपात अपने यौवन के उफान पर था और सैकड़ों फीट ऊपर से गिरता रजत जल हज़ारों–लाखों मोती बन चतुर्दिक छिटक रहा था। हवा के एक झोंके में हज़ारों बूंदे हमारे तन–मन को भिंगो जाती। आयुर्वेदिक छात्रों ने तमाम औषधियों की खोज़बीन की, मैंने भी जंगली प्याज और हल्दी देखी थी। औषधि केंद्र में सबका दोपहर का भोजन हुआ। जिसमें पूड़ी–सब्जी के साथ ही महुआ के पुए पहली बार खाकर लगा कि लोक जीवन का भोजन कितना समृद्ध और पौष्टिकता से भरा हुआ है। वहाँ हरेक की चिंता करना, हालचाल लेना और पाठा के जीवन से परिचित कराते भाईसाहब हम सभी के दिलों में उतर गये।

अब दूसरे दृश्य की ओर ले चलता हूँ। जाड़े के दिन थे सूरज ने रजाई ओढ़ पैर फैला दिए थे। पेड़ों की डालों पर बैठी शाम ज़मीन पर उतरने लगी थी। इसी बीच शैक्षिक महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष राम लखन भार्गव और मैं भाई साहब से मिलने परिसर पहुंचे। लगभग एक घंटे स्नेह–संवाद के बाद जब अतर्रा जाने के लिए हमने मोटरसाइकिल स्टार्ट की तो आपने बढ़ती ठंड के कारण आग्रहपूर्वक रोक लिया। रात के भोजन में भुने हुए आलू–टमाटर, मोटी हथपई रोटी और साथ में दानेदार जमा हुआ देसी घी और गुड़, वह स्वाद अभी भी मुँह में घुलने लगता है। एक–एक कौर में अपनेपन की मिठास को हम अनुभव करते रहे। भोजनोपरान्त आपने मुझसे कहा, ''प्रमोद जी! कल सुबह जाने से पहले आपको एक सामाजिक एकांकी देनी है, जिसमें पात्र के रूप में राम, लक्ष्मण और शबरी होंगे। एकांकि का मंचन शबरी प्रपात पर होने वाले मेला में किया जाना है।'' मैं उधेड़बुन में था कि एकांकी की विषय वस्तु क्या रखूँ। अंततः 3–4 दृश्यों में एकांकी लिखी, जिसमें शबरी को एक सामाजिक स्वयंसेविका दिखाते हुए श्री राम को उनके पास समाज रचना के गुर सीखने–समझने हेतु पहुंचने का वर्णन किया गया था। सुबह मैंने लगभग डरते हुए एकांकी भाई साहब की मेज पर रखी और प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करने लगा। एकांकी पढ़ते हुए उनके चेहरे पर संतुष्टि के भाव उभरने लगे थे तो मुझे लगा कि शायद कुछ ठीक बन पाया है। मुझे गले लगाते हुए कहा कि बिल्कुल ऐसी ही रचना चाहिए थी। मैं गद्‌गद था कि परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। उनसे संपर्क लगातार बना रहा। फोन पर वार्ताओं का क्रम गतिशील रहता। मेरे द्वारा स्थापित स्वप्रेरित नवाचारी शिक्षकों के समूह ''शैक्षिक संवाद मंच'' द्वारा 2–3 मार्च, 2013 को शैक्षिक शिविर आयोजित किया गया था। इसमें आपने न केवल अध्यक्षता की बल्कि जीरो बजट कृषि का सिद्धांत प्रस्तुत करने वाले श्रीमान् सुभाष पालेकर जी, श्री गोपाल उपाध्याय एवं श्री लल्लू राम शुक्ल जी को साथ लाकर शिविर को वैचारिक ऊंचाई प्रदान की। यह आपका मेरे प्रति स्नेहभाव ही है कि जब कभी मैंने कार्यक्रम में आने का अनुरोध किया, आपने न केवल स्वीकार किया बल्कि उसकी रचना और संयोजन में उचित मार्गदर्शन भी दिया।

पर मुझे एक चीज हमेशा कसकती रही कि मैं भाई साहब की जीवन विद्या शिविर का सम्यक प्रशिक्षण प्राप्त करने की अपेक्षा पर खरा नहीं उतर पाया। हालांकि दो–तीन जीवन विद्या शिविरों में सहभागिता की पर समयाभाव में पूर्ण नहीं कर सका। पर आगे कोशिश करूँगा।

स्मृतियों की पोटली में तमाम यादें, चित्र, घटनाएँ इस प्रकार मिल–गुँथ गयी हैं कि एक को उठाता हूँ तो दूसरा रह जाता है। एक घटना का वर्णन पूर्ण नहीं हो पाता कि दूसरा संदर्भ सिर उठाकर अपनी कहानी बयां करने को प्रार्थना करने लगता है। पर इतना कहकर विराम लूंगा कि गोपाल भाई ऐसे महनीय विराट व्यक्तित्व का नाम है जिसका हृदय संवेदना, सहकारिता, स्नेह, समन्वय, सहजता से ओतप्रोत है। लोक संस्कार और लोक चेतना के द्वारा जो लोक स्वाभिमान का स्वप्न न केवल खुली आँखों से देखता है बल्कि यथार्थ के धरातल पर उतारता भी है। आत्मीयता, मधुरता, करुणा, स्वभाव का अंग बन चतुर्दिक यशगाथा बाँच रहे हैं। व्यवहार में विनम्रता और वाणी में मधुरता का स्थाई पता कोई पूछे तो एक ही उत्तर मिलेगा–गोपाल भाई। वह जीवंतता, कर्मठता, कर्म कौशल की प्रतिमूर्ति हैं। वह तमाम बाधाओं, अवरोधों एवं चुनौतियों से जूझते हुए लक्ष्य सिद्धि के पथ पर बढ़ते खुशियां बाँट रहे हैं। वह व्यष्टि में समष्टि का, एकत्व में अनेकत्व का ठीक वह उदाहरण हैं ज्यों रवि रश्मि में सात रंग समाये होते हैं। वह स्वस्थ सक्रिय रहते हुए शतायु हों, उनके यथेष्ट मार्गदर्शन में समाज में प्रेम सद्भाव और शांति के नैसर्गिक रम्य वातावरण की सर्जना होगी, वह हम सभी पर नेह बरसाते रहेंगे।

## हमारी संगत

**रामजस द्विवेदी (नन्ना)**
**खुरहण्ड, बांदा**

जब मैं कक्षा छह में पढ़ता तो तब गोपाल जी कक्षा आठ में पढ़ते थे। उन्होंने एक नाटक (छाया अभिनय) बनाया था जिसमें मैं गौतम बुद्ध का अभिनय करता था। गोपाल जी संगीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम (हारमोनियम, तबला) में संगत करते थे। मैं संकट, परेशानी में अपना दुख बांटने हेतु गोपाल जी से बताता था और वह मेरी हर समस्या का समाधान कर ही देते थे क्योंकि वे मेरे जीवन के सबसे ज्यादा विश्वसनीय व्यक्ति थे जो दूसरा नहीं था। अभी तक की पूरी जीवन यात्रा में साथ–साथ रहना, गोपाल जी के साथ–साथ खाना बहुत पसंद था। मैने अपने जीवन का कोई भी रहस्य उनसे छिपाया नहीं।

# चिर युवा गोपाल भाई

•

**राजेश कुमार सिन्हा**
**प्राचार्य- कौशल केन्द्र**
**ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट**
**अध्यक्ष**
**अ.भा.समाज सेवा संस्थान चित्रकूट**

गोपाल भाई का मुझसे परिचय लगभग 35 साल पूर्व तेरहीमाफी गाँव में हुआ था, अवसर था **डॉ0 भारतेंदु प्रकाश** द्वारा संचालित विज्ञान शिक्षा केन्द्र में किसी कार्यक्रम का। कार्यक्रम किस विषय पर था यह तो याद नहीं पर पिताजी द्वारा रात में हम सबके बीच कई प्रेरणादाई गीतों का गायन समा बांध गया। *"ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के"* भाई साहब का ओज से भरा भावपूर्ण गायन अभी तक कानों में गूँजता है। **सुब्बाराव** जी चिर युवा के रूप में जाने जाते रहे। मैं गोपाल भाई को भी उसी श्रेणी में रखना चाहता हूँ। आज 83 वर्ष की अवस्था में जिस प्रकार से उन्होंने संस्थान को संभाल रखा है, दिशा प्रदान कर रहे हैं तथा बिना थके क्षेत्र की यात्रा कर रहे हैं उसे देखकर तो किसी युवा को भी शर्म आ जाए।

गोपाल भाई से सीखने को बहुत कुछ है। उनका हर कथन, उनका हर क़दम एक नई सीख दे जाता है। समाज के अंतिम वर्ग के लिए उनकी पीड़ा सहज दिखती है। बुंदेलखण्ड़ के पाठा क्षेत्र में संस्थान के द्वारा किये गये कार्य उनके ही प्रेरणादाई नेतृत्व का परिणाम है। बीच में स्व0 भागवत प्रसाद के जोर देने पर उन्होंने यात्राएँ कम कर दी थीं, अवकाश लेने का उपक्रम किया था पर जिस प्रकार नियति के क्रूर हाथो ने स्व0 भागवत जी को हमसे छीन लिया और संस्थान के आगे के कार्यक्रमों पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह लग गया था, एक बड़ा सा शून्य पैदा हुआ था, उसे जिस प्रकार आपके अपने नेतृत्व कौशल के द्वारा एक ऊर्जा प्रदान की है, उसे देख कर सिर्फ अचंभित हुआ जा सकता है तथा प्रेरणा ली जा सकती है।

विज्ञान शिक्षा केन्द्र को छोड़ने के बाद ग्रामोदय विश्वविद्यालय से मेरा जुड़ाव हुआ। यहाँ पर 1992 में बुंदेलखण्ड़ संगीतकार सम्मेलन की योजना भाई साहब की प्रेरणा से ही बनी थी तथा इसके आयोजन का सम्पूर्ण दायित्व आपने वहन किया था। जिस प्रकार एक बड़े पैमाने पर यह आयोजन हुआ तथा बुंदेलखण्ड़ के कोने–कोने से ख्यातिलब्ध संगीतकारों को इससे जोड़ा गया, वह अपने आप में अद्‌भुत था। इसी संगीतकार सम्मेलन में वयोवृद्ध मृदंगवादक आचार्य झंडीलाल जी को मध्य प्रदेश शासन के वित्तमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया था। विश्वविद्यालय में संगीत इकाई की शुरुआत भी इसी संगीतकार सम्मेलन के द्वारा संभव हो पाई थी। बुंदेली संगीत एवं संगीतकारों को आगे बढ़ाने में भी भाई साहब सदा अग्रणी रहे हैं। लोक–लय समारोहों में इसे सहज ही महसूस किया जा सकता है। भाई साहब की नेतृत्व क्षमता, लोगों को जोड़ने एवं उन्हें जोड़े रखने की क्षमता बेमिसाल है। पाठा क्षेत्र में बंधुआ मजदूर की समस्या काफी पुरानी है और जिस प्रकार से उन्होंने समाज के हर वर्ग को साथ लेकर इस कार्य को दिशा दी है, वह अति सराहनीय है। वह वर्ग जो पीड़ित है और वह वर्ग जो इस पीड़ा के मूल में है दोनो ही वर्गों को साथ लेकर इस कार्य को पूर्ण करना तथा जरूरी क़ानूनी सहायता उपलब्ध कराना उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है। बुंदेलखण्ड़ का लोकलय समारोह हो अथवा आदिवासी विद्यालयों के समारोह सभी में उनकी नेतृत्व क्षमता हमें सहज ही दिखती है। समाज के अन्तिम तबके के बीच से नेतृत्व को उभारने का कार्य जिस तरह से उन्होंने किया है, वह अन्य संस्थाओं के संचालकों के लिए अनुकरणीय है। कई कार्यकर्ताओं को खुद की संस्था बनाने में उनका जिस प्रकार से सहयोग मिला है और जिस प्रकार से आज 'वंश' के रूप में संस्थाओं का एक नेटवर्क बुंदेलखण्ड़ में दिखाई देता है, यह गोपाल भाई की ही दूर दृष्टि का परिणाम है।

सन् 2000 में मेरे कुछ साथियों के द्वारा '**सहजीवन समिति**' की शुरुआत की गई। तत्कालीन अविभाजित शहडोल जिले के पिछड़े आदिवासी क्षेत्र सरई, पयारी, तरंग से कार्यक्रमों की शुरुआत हुई थी। समिति उस समय पंजीकृत नहीं थी तथा निर्माण का प्रारंभिक दौर था। शहडोल के तत्कालीन कलेक्टर के द्वारा उस समय वाटरशेड परियोजना स्वीकृत हुई थी। दिक्कत यह थी कि सरकारी कार्यक्रम किसी पंजीकृत संस्था को ही दिया जाता है और वह भी सामान्यतः 3 साल के कार्य के बाद। उस समय हमारी यह दिक्कत गोपाल भाई ने दूर की थी तथा यह लिखित रूप से दिया था कि शुरुआती 5 वर्षों तक अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान सहजीवन समिति के कार्यों को अपना मार्गदर्शन देगा। उस सुदूर अंचल में बैंक खाता खुलवाने के लिए खुद तथा आदरणीय लल्लूराम शुक्ला जी, जो संस्था के महामंत्री थे, गए थे। इसके बाद भी कई अवसरों पर गोपाल भाई का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग हमें बराबर मिलता चला आ रहा है। उन्हें हम एक ऐसे अभिभावक के रूप में देखते हैं जो हर परिस्थिति में हमारे साथ खड़े हैं तथा जिनका साथ हमारा संबल है।

# दुखियों के प्राण बापू जी

वर्षों से चला आ रहा, आपके प्रयासों का जोर
दबे–कुचले समाज में आ रही ज्ञान की ओर।
न ईश्वर, न अल्लाह, न कोई परवर दिगार देखा।
होश संभाला है जबसे, ऐसा कोई तारणहार न देखा।
दुखी हो जाते हैं आप पीड़ितों की दुर्दशा देखकर
उबारा है आपने, साहस, सुख भेंटकर।
पिता–भाई–मित्र, सबकी छवि आपमें नज़र आती है।
कल क्या होगा, सोचकर बरबस आँखे भर आती है।
आप तो स्वयं ग्रन्थ है, क्या कहूँ, क्या लिख दूँ,
भाव भरे हैं मन में, लगता है जस का तस उनको धर दूँ।
थके–टूटे–हारे जीवन में प्राणों को भर देते हैं,
प्रेम भरे व्यवहारों से जीवन निहाल कर देते हैं।
समझकर आपको समझा कि समर्पण की क्या सच्चाई है,
परपीड़ा ही, पीड़ा है, समझने की रीति अपनाई है।
सबका जीवन चले सुचारू, हर प्रयास किया आपने
अंधियारे के हर कोने में, शिक्षा–प्रकाश दिया आपने।
अपनत्व की कड़ियां कसी रहें आपका अटूट विश्वास है,
आपके तप का प्रतिफल है, हिम्मत से खड़ा समाज है।
नमन आपको, सौ–सौ बार नमन भी कम है
दुखियों को अर्पित जीवन का अभिनन्दन–वंदन है।

**भारती**
**सामाजिक कार्यकत्री**
**मानिकपुर**

*(ऐसा लगता है, कि जैसे बड़ी विपदायें हरिजनपुर गाँव ढूढ़कर, भारती के घर पहुंची हों। माता–पिता असाध्य रोग से पीड़ित हैं। बहनों समेत माता–पिता के पालन–पोषण की जिम्मेदारी भारती उठा रही है। भारती को दुखों से भरकस उठाने में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने कोशिश की है। भारती पढ़ रही हैं, समाजकार्य कर रही हैं, बहनों को पढ़ा रही हैं। ग़रीब बच्चों को शिक्षित करने में समूचा योगदान दे रही हैं। –सं.)*

# पाठा के गांधी गोपाल भाई

**संदीप रिछारिया**
**प्रखर पत्रकार, चित्रकूट**

*(पत्रकारिता के सारे गुणधर्म होने के बावजूद स्वयं को एक्सीडेण्टल पत्रकार मानने वाले गंभीर लेखन का अकूत सामर्थ्य। विभिन्न समाचार पत्रों में महत्वपूर्ण पदों पर रहे। प्रकृति, नदियों, स्थापत्य, लोक कलाओं आदि पर जब–जब उनकी चिन्ता बढ़ती है तो रिर्पोटिंग, आलेख, फीचर में उतरकर धूम मचा देती है। –सं.)*

जिंदगी से गुफ्तगू करने का हुनर देखना है तो एक बार ''गोपाल भाई'' से जरूर मिलिए ***''जिनके पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई''*** ये लाइने अक्सर सुनी और सुनाई जाती हैं। लेकिन चित्रकूट जिले के मऊ मानिकपुर क्षेत्र के सैकड़ों गाँवो के लोगों की केवल एक आशा 'पिताजी' हैं। वनवासियों की बंधुआ जीवन से मुक्ति के साथ समाज सेवा का सफर शुरू करने वाले गोपाल जी ने समूचे बुंदेलखंड में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन की जो अलख जगाई आज उसके गवाह सैकड़ो नही अपितु लाखों में है। वंचित चेहरे पर मुस्कान देखने की उनकी साधना आज भी तरुणाई के साथ जारी है। बांदा जिले के खुरहंड के समीप बिगहना गाँव के रहने वाले गया प्रसाद के लिए गोपाल जी से लेकर पिताजी तक का सफर आसान नही रहा। उन्होंने अपनी जिंदगी के 70 साल केवल वनवासियों के उत्थान के लिए समर्पित किये तब जाकर वह यह दर्जा पाए। उनके लंबे सघर्षों के कारण ही पाठा की धरती में जब भी वनवासियों से उनके उन्नायक का नाम पूछने पर केवल पिताजी जैसे शब्द निकलते है। स्थानीय स्तर पर लोग उन्हें ''**पाठा का गांधी**'' का दर्जा भी देते हैं।

बतौर गोपाल जी बचपन में गांधी जी की प्रार्थना में गाया जाने वाला भजन **'वैष्णव जन को तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे, पर उपकार करे जो सोई मन अभिमान न आन रे'** सुना तो इसका अर्थ खोजने के लिए विद्यार्थी जीवन मे ही चित्रकूटधाम कर्वी की ट्रेन पकड़ ली। बालाजी मंदिर के अहाते में संत सम्मेलन में वनवासियों के बारे में सुना तो उनका दर्द महसूस करने के लिए मानिकपुर के जंगलों में बसे वनवासियों के पास पहुँच गए और सबसे गम्भीर बात यह रही कि दर्द को महसूस कर उनका समाधान ढूढ़ने में अपना पूरा जीवन खफा दिया। जल, जंगल और ज़मीन की इस लड़ाई का भले ही कोई ओर छोर न दिखाई देता हो, पर किसिम किसिम के झंझावात से जूझकर वह इतना मजबूत बने कि पाठा की प्यासी धरती अब जल से जितनी जून के महीने में लबालब रहती है, उतनी ही खुशी के गीत आज अनपढ़ वेदवती की तरह तमाम गायिकाएं गाती है।

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने पाठा क्षेत्र में जो किया, वह अद्भुद और अकल्पनीय है। 25 दिसम्बर

1999 को मैं एक्सीडेंटली पत्रकार बना। न्यायाधीश समाचार पत्र से जुड़ने के बाद लगभग 10 दिन में हाथ साफ करने के बाद पत्रकारिता के पहले गुरु श्री उमाशंकर पांडेय के साथ साथ दैनिक तुलसी पत्र से जुड़ा। सार्वजनिक जीवन की भाईजी से पहली मुलाकात पांडेजी ने ही करवाई। रानीपुर भट्ट स्थित अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के भारत जननी परिसर में जब मुलाकात हुई तो संवाद के साथ पुरानी स्मृतियां भी ताजा हुई तो वास्तविक रूप से उनमें पिता का स्नेह दिखा और मिला। पहली ही मुलाकात में उन्होंने पत्रकारिता से सम्बंधित जो टिप्स दिए वे आज भी मेरे साथ चल रहे है। उन्होंने बताया था कि चित्रकूट तीन तरह का है, पहला चित्रकूट धार्मिक और आध्यात्मिक है, दूसरा चित्रकूट माफिया और डकैतों वाला है तो तीसरा चित्रकूट इतना गरीब है कि महिलाएं एक सस्ती साड़ी को फाड़कर दो लोग पहनती है। पत्रकारिता सेवा कार्य है। समाजसेवी सेक्टर में काम करने वाले व पत्रकार एक दूसरे के पूरक सिध्द होते रहे है। अच्छी खबरे आफिस या अधिकारियों की टेबिल पर नही गाँव व जंगल का भ्रमण करने पर मिलेगी। समयांतर में हमारा सम्बन्ध प्रगाढ़ होता गया। वैसे इन संबंधों के प्रगाढ़ होने के पर्याप्त कारण भी हैं। इनमें प्रमुख रूप से उनका बोला एक दोहा था, जो तत्समय उन्होंने किसी कार्यक्रम के दौरान मंच से सुनाया था **''दीनन को सब लखत हैं, दीनहिं लखै न कोय, जो रहीम दीनहिं लखै, दीन बंधु सम होय।''**

उनके साथ हुई कई मुलाकातें और फिर पाठा के भ्रमण के बाद जो सच सामने आया, उससे दिखा कि वे दीनबंधु तो पहले ही बन चुके हैं। एक नहीं अनेक बार उन्होंने इस बात के प्रमाण भी दिए। पाठा के भ्रमण के दौरान यह दिखा कि वह केवल अपने घर के बेटों या बेटी के पिताजी नही बल्कि पाठा में मौजूद हर बेटे और बेटी के पिताजी हो चुके हैं। एक उदाहरण वर्ष 2004 का है। वनाधिकार और कोलों को मध्य प्रदेश की भांति उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जनजाति में शामिल कराने के लिए जो लोगों का रेला दिखाई दिया, वह वास्तव में दिल्ली में 2010 के अन्ना हजारे के प्रदर्शन से बड़ा था। केवल चित्रकूट जिले में उस समय बिना किसी प्रलोभन या लालच के लगभग 50 हजार की संख्या बिना किसी मोबाइल या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कवियों व अन्य विचारकों के जमावड़े के इकट्ठा करना उनको बिशेष बनाता है। इसी दौरान लोकलय का दौर आया। बुंदेलखंड के सातो जिलों के लगभग 250 से ज्यादा लोकसंगीत के फनकारों को एक जगह पर लाकर मंच देना भी उनकी बड़ी कामयाबी रही। गोपाल भाई का नाम बुंदेलखंड से होते हुए प्रदेश व देश में छाने लगा। इसी दौरान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ही उन्हें अपनी बातों को रखने का मौका मिला तो वह लगातार लोकलय और कोलों के लिए की गई अपनी सेवा के बल पर इतिहास रचने वाले पुरूष बन गए। इस दौरान मैं हिंदुस्तान से दैनिक जागरण और अमर उजाला की यात्रा कर वापस दैनिक जागरण में आ गया। वर्ष 2007 में जब दैनिक जागरण की स्पेशल स्टोरी **'पाठा का गांधी'** छपी तो सबसे पहले नाराजगी उन्हीं की झेली। इसका कारण यह रहा कि उनका मानना था कि हमें खबरों का केंद्र बिंदु गांव के ग़रीब व पिछड़ों को बनाना है, जो अपने मूल अधिकारों व विकास की दौड़ में पीछे रह गए हैं। वैसे तो बांदा जिले के बिगहना गांव के गया प्रसाद गोपाल जी की यात्रा गोपाल भाई से होते हुए पिताजी से ऊपर पाठा के गांधी तक की। उम्र का 83वां पड़ाव वह पार कर रहे हैं। हम सब बेटे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह केवल शतायु ही नहीं अपितु हमारे साथ हमारे जीवन काल की पूर्णता तक हमारे साथ यूं ही बने रहें।

# उन्हीं से आत्मबल मिला, उन्होंने ही आत्मनिर्भरता दी

**केशर**
**सामाजिक कार्यकत्री**
**मानिकपुर**

*(बंधुवा कोल परिवार की तीसरी पीढ़ी से हैं केशर। निपट जंगल का गांव है गिदुरहा जहाँ पढ़ना–बढ़ना बड़ा दूभर था। हिम्मत मिली तो हौसले बढ़े। केशर पढ़–लिखकर वंचितों के लिए असरदार जनपैरवी करती दिखायी पड़ती हैं। –सं.)*

आदरणीय गोपाल भाई जिन्हे चित्रकूट जिला ही नहीं बल्कि पूरा बुन्देलखण्ड उनके संघर्ष, समाज के प्रति समर्पण भाव को भली भांति जानता है। मानिकपुर के पाठा क्षेत्र में जब उनके क़दम पड़े तो उन्होंने देखा कि पाठा क्षेत्र कोल आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है और मानिकपुर से 35 से 40 किलो मीटर दूर तक घनघोर जंगल के किनारे बसा हुआ है। जहाँ पर न रास्ता है और न कोई संसाधन। लोग पैदल मानिकपुर तक का सफर तय करते हैं। इतना ही नहीं गोपाल भाई जी द्वारा पैदल चलकर कोल आदिवासी समाज के बीच जाकर उनकी ज़िन्दगी जीने के बारे में जाना और किस तरह अपने परिवार का भरण–पोषण एवं आजीविका चलाने का साधन है। पाठा क्षेत्र कोल आदिवासी समाज के विचारों से सुना कि हम लोग गाँव के दबंग, सामन्तशाह, जमींदारों, साहूकारों के यहाँ परिवार सहित बंधुवा बनकर पांच पाव की मजदूरी करते हैं। बीमारी में कर्ज़ के रुप में पैसा लेने पर ज़मीन हड़प ली जाती है। अपनी ही ज़मीन में रात–दिन श्रम करके जमींदारों की कोठरी भरते थे। पत्नी, बेटी, बहू, सामन्तों दबंगों के घरों का जानवरों का गोबर पानी का कार्य करती थीं। उनके साथ दबंगों के द्वारा उनकी आबरु पर भी अत्याचार किया जाता रहा है। कोलों की ज़मीन अपने घोडा, कुत्ता, बिल्ली के नाम दर्ज़ कर लिया जाता था। खुलेआम शोषण, उत्पीड़न किया जाता रहा है। जिस तरह देश आज़ादी से पहले अग्रेजों का गुलाम था उसी प्रकार से पाठा क्षेत्र के कोल आदिवासी समाज के लोग दबंगो, जमींदारों, साहूकारों, ठेकेदारों व डाकुओं के गुलाम एवं शिकार थे। जंगल की जड़ी बूटियों, कंदमूल, फूल–फलों आदि को तोड़ने एवं बेचने का अधिकार भी नहीं था। सरकार और सरकारी योजनओं से कोसो दूर वंचित थे।

गोपाल भाई जी के द्वारा कोल आदिवासी समाज के उत्थान के लिए सन् 1970–72 में पिता जी पाठा क्षेत्र के बीहड़ जंगलों में रह रहे कोल आदिवासियों के बीच भ्रमण कर जन सम्पर्क कर

उनके साथ मिलकर महुआ का लाटा, चना जौ की रोटी खाकर सामाजिक सौहार्द स्थापित करने का कार्य किया। इसके साथ–साथ पाठा क्षेत्रवासियों के साथ जन जागरूकता, जन संगठन खड़ा करना कोल आदिवासियों को आत्मबल, आत्मविश्वास बनाने में प्रेरणादायक बने। उनकी प्रेरणा से कोल आदिवासी समाज जागरूक होकर संगठित हुए और अपने हक़ अधिकार पाने के लिए क़दम से क़दम मिलाने में सहयोग किया। उनका एक नारा था *'जिसकी लड़ाई, उसी की अगुवाई'* कोल आदिवासियों को अपनी लड़ाई लड़ने के लिए एक मंच का जन्म दिया जिसका नाम था *'पाठा कोल अधिकार मंच'* इस मंच के माध्यम से हजारों की संख्या में शासन–प्रशासन तक अपनी आवाज़ को उठाना और अपने अधिकार के प्रति मांग करना। कोल आदिवासियों को बंधुवामुक्त, अपनी भूमि पर कब्जा, न्यूनतम मजदूरी, जंगल के कंदमूल, तेंदू पत्ते, जड़ी–बूटी पर बेंचने–बटोरने का अधिकार प्राप्त हुआ।

कोल आदिवासियों के बीच संस्था अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा शिक्षा संस्कार केन्द्र संचालित किये गये और हजारों की संख्या में कोल समाज के बच्चे शिक्षित हुए। इतना ही नहीं उनके प्रेरणा से इस पाठा क्षेत्र में कोल आदिवासी समाज के लोग राजनीति जगत में भी बढ़ चढ़कर भी चुनावी जीत हासिल कर ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य, जिला पंचायत सदस्य एवं ब्लाक प्रमुख पद के हिस्सेदार एवं भागीदार रहे और विकास कार्यों में अपनी अहम भूमिका भी निभाये। शासन–प्रशासन स्तर पर सम्मानित भी किये गये हैं। गोपाल भाई जी के द्वारा मुख्य रुप से कोल समाज के हित में जल, जंगल, ज़मीन, न्यूनतम मजदूरी, जमींदारी प्रथा से मुक्ति दिलाना, महिलाओं के मान–सम्मान, स्वाभिमान दिलाने के प्रति अग्रसर रहे। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार के अवसर, आजीविका उपार्जन के स्रोत पैदा करना, सरकारी योजनाओं तक पहुंच बनाना आदि मुद्दों को उठाने का कार्य किया है। कोल आदिवासी समाज को उनके हक़ दिलाने में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना इस पाठा क्षेत्र में करना पड़ा है।

मैं सन् 2002 में पिता जी से मिली थी। उनके द्वारा मेरा नाम, गाँव, माता–पिता, दादा बाबा जी के बारे में जानकारी प्राप्त किए उस समय 17 वर्ष की उम्र की थी और मैं शिक्षा ग्रहण कर रही थी। तभी उनके द्वारा बताया गया कि आपके गाँव के गप्पी दादा के घर जाते थे और उनके घर में खाना–पीना, विश्राम होता था। तब पिता जी ने कहा स्वयं का विकास एवं समाज के हित में कुछ करना सीखना चाहती हो तो पिता जी के पास बेटी बनकर आना। मैं संस्था मे ंआकर सन् 2003–2004 में आई और मुझे मोटवन गाँव में कोल आदिवासी समाज के बच्चों को पढ़ाने का अवसर मिला। एक साल बाद मुझे छह माह के सहभागी शिक्षण केन्द्र लखनऊ में क्षमतावृद्धि प्रशिक्षण ग्रहण करने का अवसर प्रदान हुआ। सन् 2006 से लगातार मैं संस्थान में सक्रिय रुप से जुड़कर अपनी कार्यक्षमता के अनुसार बरगढ़ एवं मानिकपुर क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण, कोल आदिवासी समाज के बीच पैरवी का काम किया। उनकी दी हुई प्रेरणा से आज हम अपने परिवार एवं समाज में अपने आपको आत्मबल, आत्मनिर्भरता के साथ जीने में कामयाब हैं। आपके 83वां जन्मदिवस के शुभअवसर पर मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि आप दीर्घायु हो और हमारे जीवन में मात–पिता की तरह हमेशा प्यार, स्नेह, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मिलती रहे।

# बखत लिखै सम्मान...

**डॉ. प्रणय**
**सेवा निवृत्त प्राध्यापक**
**रीवा (म.प्र.)**

मुझे यह ज्ञात नहीं है कि किसी 'गया प्रसाद' को गोपाल भाई बनाने में किन परिस्थितियों की भूमिका है किन्तु, इतना तो दावे के साथ कह सकता हूँ कि उनकी जीवात्मा ने कहीं यह आवाज सुनी है–

*तुम्हें एक काम सौंपा है मुश्किल औ ज़रूरी भी*
*यह चेहरा आदमी का है और इसमें दिल बनाना है।*

तो एक व्यक्ति इतने ज़रुरी कार्य संपादन के लिए उठ खड़ा होता है और अपनी उम्र खपाते हुए गोपाल भाई बन कर जीवन को सार्थक करता है।

उम्र के चौथे दशक में गोपाल भाई के चश्में में एक साथ कई तस्वीरें आकर टिक गई थीं। धरती बहुत ऊबड़–खाबड़ ऊपरी पर्त की। आदमी का दिया हुआ दुख, आयातित दुख, आसमानी दुख, नागहानी दुख, सुलतानी दुख। बुद्ध बनने का सारा सरंजाम।

भाई जी जानते थे कि आगे संघर्ष का मैदान मिलेगा, खतरे की सड़कें मिलेगी, नैराश्य की बस्तियाँ मिलेंगी लेकिन, उनके पास ठसाठस धैर्य और साहस था कि वे आज रचनात्मकता की ठोस पहल वाले प्रख्यात समाजसेवी के रूप में जाने–माने जा रहे हैं। सृजनात्मकता समाज सेवा जैसे उत्कृष्ट कार्य से उनका व्यक्तित्व गरिमामय हो गया।

उन्हें आदमी का बहुमुखी दारिद्र्य दिखा, प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित/अप्रबंधन दिखा, ज़हर होता जा रहा खान–पान दिखा, संस्कारहीनता दिखी और विलुप्त होती जा रही हमारी लोकसंस्कृति दिखी। यह सब कुछ अछोर, अकूत। अपने हिस्से की जिम्मेदारी का निर्वहन करने को उन्होंने संकल्प लिया कि व्यक्ति से वे स्वयं टीम बने, एक वृहत परिवार बने और समाज बन गए, तभी तो गोपाल ने अपने तमाम ग्वाल–बालों की टोली लेकर बिरज में धूम मचा दी।

गोपाल भाई की प्रारंभिक समाज सेवा के दिनों में मैं काफी दिनों तक साथ रहा। उन दिनों वे चित्रकूट अंचल के वनवासियों के जीवन में कई कोणों से सुधार की कल्पना को रुपायित करना चाह रहे थे और सक्रिय हुए। आगे चल कर सहअस्तित्व में कई आदरणीय समाजसेवियों की सहचरण टोली बनती गई, पत्रकार भाई हजारी सिंह पंकज और सारे कार्यों

के ब्यौरे की देख–रेख के लिए सम्मान्य बाजपेयी जी जैसे समर्पित व्यक्तित्व जुड़े, पत्रकार भारत डोगरा जी, कीर्तिशेष भागवत प्रसाद जी जैसे व्यक्तित्व जुड़े औ कारवाँ बढ़ता गया।

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के कई जनपदों तक अशिक्षित, दमित, शोषितों में विविध आयामों से जागरुकता फैलाई, अपने हक़ के लिए ज़मीनी लड़ाई में सहभागिता निभाई, जल प्रबंधन, प्राकृतिक खेती के प्रतिमान खड़े किए, लुप्त हो रही संस्कृति को मंच दिया। लोक को सवाँरने वाले जन/समुदायों को सम्मानित किया, लोक के लिए अत्यावश्यक साहित्य प्रकाशित कर वितरित किया। कभी बैठ कर विश्राम नहीं लिया। कभी थकान नहीं महसूस की, जो किया पूरी ईमानदारी से किया। कितने काम गिनाए जाएँ कि संस्था द्वारा मारकुंडी क्षेत्र के किसानों ने वहाँ चेकडैम बनवाने के पूर्व कहा–अगर चेकडैम बनवाना है तो इटवा डुडैला की तरह बनवाइएगा जो 27 वर्ष पहले बना था, आज उसी तरह मौजूद है, सरकार की योजना से जो चेकडैम बनते हैं पहली बरखा में ही बह जाते हैं। गर्व होता है ऐसे ईमानदार व्यक्तित्व पर, पर ऐसे व्यक्तित्व विरल हैं।

गोपाल भाई जी की भावना भूमि का/उनके अंतस का रक़बा कई एकड़ में फैला हुआ मैने देखा है। नवें दशक में श्रद्धेय नानाजी देशमुख के आग्रह पर चित्रकूट में कवि सम्मेलन हुआ। संचालन जो कर रहे थे वे मुझे काव्यपाठ के लिए बुलाए *"अब रीवा से आए प्रणय आपसे प्रणय करेंगे।"* ऐसे विपन्नमति संचालक से मेरा पहली बार सामना हुआ था, मैने माइक पकड़ते ही ऐसे संचालनकर्ता को तत्काल बदलने की माँग कर दी। आधे से ज्यादा मंचासीन कवियों ने मेरी बात पर खुलकर सहमति जतायी। मेरी मानसिकता शुरु से ही उस संचालक के विरुद्ध हो चुकी थी। गोपाल भाई; जिन्हें मैं भइया कहता हूँ, से मैने बैठते ही कहा –"भइया इन्हें कहाँ से ढूढ़ लाए हैं?" निश्चित ही वे भाई जी के घनिष्ठ थे, अच्छा व्यक्ति समझ कर उन्हें संचालन का ट ट्टा टि ट्टी सिखाना चाहते रहे होंगे। इसी दरम्यान भाई साहब ने मुझे कुछ ऐसा कहा तो मैं गुस्से में आ गया। संवादहीनता हो गई।

दस–बारह वर्ष गुजरे कि एक दिन कर्वी में गर्मी की लगभग खाली सड़क पर उधर से वे पैदल आ रहे थे, इधर से मैं पैदल जा रहा था। दोनो ने एक–दूजे को देखा। वे मेरी तरफ आ गये और सामने खड़े हो गये–"एक युग बीत गया, अब तक गुस्सा न उतरा हो तो, मुझको मार–पीट लो।" उन्होंने सिर झुका दिया। पहले मेरा गुस्सा इतना दुर्दमनीय न था जितना अब परिस्थितियों ने बना दिया, मैं कुछ पलों तक अचकचाया रहा फिर दोनो गले लग गए और उनका स्नेह, मेरा आदर पूर्व से ज़्यादा छलकता प्रवाहित हो उठा। मैत्री का यह सत्कार अविस्मरणीय बनाता है उनका बड़ा हृदय।

कोई भी यशस्वी जीवन स्तुत्य और प्रणम्य होता है। भाई गोपाल जी इसी गैल पर चलते हुए आयु के शतक लाँघें, मेरी अनंत शुभकामनायें।

भाई जी के 83 बसंत पार करते जिस परिवार ने यह उत्सव आयोजित किया, उन्हें मेरी तरफ से हार्दिक साधुवाद।

अंत में, अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने जो अपनी बोली–बानी में दोहों की मेरी कृति–'अँगरा' प्रकाशित की, उसी से एक दोहा, भाई जी के एकदम समीप खड़े होते हुए–

*अउरन खातिर जउँ जियैं, बनैं भोर कै आस।*
*बखत लिखै सम्मान से, उनहिन क्या इतिहास।*

# तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो

**बूटी कोल**

**सामाजिक कार्यकत्री, मानिकपुर**

*(बूटी दीदी जन्म से बंधुवा जीवन का दंश झेलते हुए समाजकार्य में सक्रिय हैं। गाँव–गाँव जागरण गीत गाती हैं, अलख जगाती हैं। ग़रीब कोल बच्चों को शिक्षित करने में भी उल्लेखनीय योगदान। –सं.)*

मेरे पिताजी जिन्होंने मुझे जन्म तो नहीं दिया परन्तु जन्म देने वाले पिता से बढ़कर हैं। 15 साल की उम्र में मैं उन्हें मिली थी, विवाह हो चुका था जिस परिवार में विवाह हुआ था। पूरा परिवार बंधुआ मजदूर था, मात्र 50 रुपये में। विवाह के तीन साल हो चुके थे, उस समय सरहट गाँव में किसी तरह परिस्थितियों का सामना करते हुये जीवन यापन कर रहे थे। एक धोती और एक थाली बस पूंजी के नाम पर यही था। पति गाड़ी चालक उसमें भी बंधुआ। बदले में उसय 5 पाव जौ मिलता था, जिसे खा ले या पति बीड़ी, तम्बाखू में व्यर्थ कर दे। गाँव में तब संस्था अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की तरफ से ग्राम सखी खोजी जा रही थी। राजन भैया ने मुझझे कहा कि तुम जुड़ जाओ ग्राम सखी के रुप में। गाँव वालों ने तमाम उल्टी–सीधी बाते बताया। उसके बाद भी राजन भैया ने कहा हम लोग हैं तुम डरो नहीं काम करो। तब पति ने भी कहा जो होगा मैं संभाल लूंगा। इस तरह इन दादुओं के डर के नहीं रहना। संस्था से जुड़ने के बाद पिताजी से मिली। बचपन से ही नानी, दादी को राई नृत्य करते देखा था। देखते–देखते मैं भी सीख गई थी। मैं गाने की भी शौकीन थी। इस तरह धीरे–धीरे संगीत, नृत्य–गायन के प्रति रुझान होने से काफी आगे बढ़ने लगी। कुछ दिनों बाद 10 दिन की ट्रेनिंग के लिए सहारनपुर जाना था, लोग तरह–तरह की बात कर रहे थे। यहाँ तक कि

ये भी कहा कि लड़कियों को ले जाकर बेंच देते हैं। अन्दर से बहुत डर भी लग रहा था। उस समय ज्यादा समझ भी नही थी। जब जाने का समय हुआ ट्रेन में बैठने से पहले पति से लिपटकर खूब रोई और फिर उन्होंने हिम्मत बंधाया। 10 दिन का समय अच्छा बीता। वापस आने के बाद मुझे पिताजी ने महिला समाख्या में जोड़ दिया। कभी–कभी पिताजी आते थे और मुझे पैसे, पहनने के कपड़े धोती ला दिया करते थे फिर पिता जी का और मेरा रिश्ता एक पिता और बेटी की तरह बन चुका था।

एक बार मेरे पति ने मुझसे शराब पीकर झगड़ा किया और मारपीट भी किया, तब मैं घर छोड़कर गोपीपुर आ गई, कुछ दिन बाद जब पिता जी को पता चला तो पिताजी मुझे अपने साथ मानिकपुर लेकर आ गये और मैं मानिकपुर में रहने लगी। कई हफ्ते मैं वहीं रही। कुछ दिन बाद मेरी मौसी सास गाँव के लोग राजन भैया सहित लेने आये तो पिताजी ने साफ मना कर दिया और कहा कि बूटी यहीं रहेगी, फिर पति मुझे लेने आये तो पिता जी ने कहा मैं ऐसे नहीं भेजूँगा। मेरे पास एक वो लड़की (कंचन बिटिया) और एक ये लड़की पहले मैं उससे शपथ लूंगा कि क्यों मारता है? क्यों इसको परेशान करता है। तुमको नहीं सुधरना तो तलाक दे दो ये स्वयं कमा, खा लेगी। मानव का तन बड़े भाग्य से मिलता है ऐसे नहीं मारा जाता किसी को। इसके बाद इनके लाख मनाने के बाद पिताजी ने मुझे उस समय एक दौरी, एक धोती देकर अपनी बिटिया बनाकर भेज दिया। फिर 1995 में दिल्ली में 15 दिन की ट्रेनिंग हुई, अनेका हास्टल में रुके थे वहाँ नुक्कड़ नाटक की ट्रेनिंग हुई थी। वहाँ से आने के बाद मेरा नामांकन करवा दिया गया था। टिकट ले लिया गया था जिला पंचायत सदस्य का। मैं जीत गई, वो भी बहुमत से। इसके कुछ दिनों बाद ही जिला पंचायत अध्यक्ष का चुनाव होना था। तमाम लोग मुझे पैसे का लालच देकर खरीदना चाह रहे थे लोग अपहरण करने तक का प्रयास कर रहे थे। तरह–तरह की धमकियाँ मिल रही थी। यहाँ तक की पिता जी को भी धमकियाँ मिली कि कहाँ तक बूटी को छिपा पाओगे। हम बूटी को उठा ले जायेंगे। तमाम धमकियों के चलते पिताजी मुझे कर्वी छोड़ आए कुलदीप भैया के यहाँ। फिर जब वोट देने का समय आया तो एक अगरहुँडा के एक पंडित ने मुझसे कहा था कि ये कोल है वोट बेच खा लेगी मैंने पिता जी से तब कहा था कि पिताजी मैं किसी से 1 रुपये भी नहीं लूंगी। मैं जिसे वोट दूंगी मुफ्त में वोट दूंगी। कर्वी से मुझे फिर मानिकपुर लाया गया। चारों तरफ व्यवस्था, सुरक्षा कराई गई कि संस्था की बात है, हमारी नाक का सवाल है और इतनी बड़ी हमारी संस्था है इस तरह अगर हमारा अपहरण हो जायेगा तो हम किस लायक रह जायेंगे। मुझे बहुत छिपाया गया सबसे चुराकर रखा गया। तब भी बन्दूक के ऊपर बंदूक फहरा दिया जाता था। राज भैया लोग रातभर पहरा देते। चच्चू जी, दिग्विजय सिंह विगहना से आए हुए थे पहरा करते थे यही उद्देश्य से कि बूटी को कुछ नहीं होना चाहिए। जब मैं उन लोगों को कहीं नहीं मिली तो मेरे पति को उठाकर ले गए और कहा बूटी कहाँ है पति ने कहा मानिकपुर संस्थान में मीटिंग में है। तब मेरे पति को 1 ट्रैक्टर और 1 लाख रुपये देने का लालच देकर मुझको लाने के लिए कह रहे थे और कहा कि बूटी जो कहेगी वो करेंगे और उसकी जिन्दगी बना देंगे लेकिन पति अगवा होने के बावजूद भी बूटी अपने ईमान को नहीं बेचा। संस्थान द्वारा उनके पति को तत्काल छुड़वाया गया।

# बहुतों का जीवन बदला है गोपाल भाई ने

**प्रतीक**
**सामाजिक कार्यकर्ता, मझगवाँ**

पिता जी यानि गोपाल भाई का जीवन वास्तव में एक कर्मयोगी का जीवन है जिसने अपनी और अपने परिवार की चिंता से पहले अपने आसपास रहने वाले समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्तियों के जीवन में खुशहाली लाने की चिंता की, उनके दुःख और शोषण के खिलाफ एक अभियान चलाया, तमाम आततायी शक्तियों का सामना करते हुए अपने इस जोखिम भरे खतरनाक काम को जीवन का लक्ष्य बनाकर आगे बढ़े, बड़े सरल और सहज तरीकों से स्थानीय नौजवानों को शिक्षित प्रशिक्षित करके गाँव–गाँव में मानव अधिकारों की रक्षा हेतु सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक फौज खड़ी की। मेरे अपने जीवन को अलग दिशा पर ले जाने का काम भी इनके द्वारा ही किया गया। सामाजिक कार्यों को करते हुए मुझे आज लगभग 25 साल हो गए। मैंने इसका ककहरा गोपाल भाई और समाज सेवा संस्थान से ही सीखा है, इस मुकाम पर आकर मैं कई बार ऐसा सोचता हूँ कि मेरे जैसे व्यवसायी घराने के एक नौजवान को सामाजिक कार्यकर्ता बनाना उनकी एक सोची समझी रणनीति का हिस्सा था या फिर उनके सामाजिक कामों से पैदा हो गयी वो अलौकिक शक्ति जो मुझ जैसे नौजवानों को अवसर मिलने पर तमाम सुख सुविधाओं को त्यागकर समाज में समता, न्याय, बंधुता और स्वत्रंता की स्थापना हेतु उनके अभियान के हिस्से बन गए। उनके द्वारा किये गए रचना और संघर्षों के विभिन्न कामों को मैंने बहुत नज़दीक से देखा, सुना और अकिंचित भागीदारी भी की है। मुझे गर्व है कि मुझे गोपाल भाई ने संस्कारित किया, मेरी सोच और कार्य व्यवहार को उन्होंने सार्थक दिशा दी, मुझे जीवन संग्राम में टिके रह सकने का साहस और प्रेरणा दी।

गोपाल भाई के शिक्षा, स्वास्थ्य, प्राकृतिक संसाधनों के विकास और जनपैरवी के कामों का लम्बा सिलसिला मानिकपुर के पाठा क्षेत्र से शुरू होकर उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के एक दर्जन से अधिक जिलो के लाखों परिवारों तक पहुंचा है जिससे की जीवन के प्रति हताश और निराश हो चुके लाखों वंचित परिवारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव, गरिमा और समानता के अवसरों तक उनकी पहुँच और आजीविका के संसाधनों पर उनके स्वामित्व के हज़ारों जीवंत उदहारण हम सबके सामने है। तिरासी वर्ष होने के बावजूद उनके आज भी बिना रुके, बिना थके सुबह 8 बजे से रात्रि 10 बजे तक लगातार काम करना, एक ही दिन में गांव के आमजनों से लेकर सामाजिक कार्यकर्ताओं और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ अलग–अलग विषयों में वार्ताएँ, मीटिंग और समन्वय, लम्बी यात्रायें देखकर हमसब भी बिना रुके और थके काम करने की ऊर्जा उनसे पाते हैं। उनका सादगी भरा जीवन और अहिंसक सामाजिक आंदोलनों के काम, समाज के उन सभी लोगों को जीवन जीने की राह बताते है जो भौतिक विकास और सुविधाओं की चाह में अंधाधुंध अनैतिक असंवैधानिक कामों के जाल में फंसतें जा रहे है, जहाँ उनके खुद और आने वाली पीढ़ियों के लिए चौराहें बन रहे है जिनका अंत बेहद दुखद है। मैं आदरणीय पिता जी को उनके जन्मदिन के शुभावसर पर उनके स्वस्थ्य जीवन की पुनः कामना करता हूँ।

# मानवता की प्रतिमूर्ति गोपाल जी

**बलबीर सिंह**
**साहित्य, कला पारखी**
**से.नि. वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक**
**आर्यावर्त बैंक, कर्वी**

1992 से लगातार कर्वी नगर में रहने और यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों में शामिल होने का अवसर मिलता रहा है और इसी कालखंड में मुझे गोपाल जी को जानने का मौका मिला। गोपाल जी का व्यक्तित्व काफी विराट है, शायद ही किसी एक व्यक्ति के हिस्से में उनका पूरा व्यक्तित्व आया हो। किसी के हिस्से में कुछ, किसी के हिस्से में कुछ। जिसके हिस्से में जितना गोपाल आया, वह उतना ही, अपने गोपाल को जान पाया।

मेरे और मेरे परिवार के हिस्से में उनका स्नेह आया, उनकी कृपा आयी, उनका प्यार और दुलार आया। मैं बस उनको इतना ही जान पाया। जो सब पर करुणा लुटाता है। सब के कष्टों में साथ खड़ा होता है। उन्हे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उनका हृदय प्यार का सागर है। शक्ति का पुंज है जिसमे एक गति है। मैं भाग्यशाली हूँ की मुझे उनका स्नेह मिला। जितना मैंने उन्हें जाना, उनका हृदय अनवरत, धड़कता है, वंचितों के लिए, बेसहारों के लिए। वह उनके हक के लिए लड़ने वाले अग्रिम पंक्ति के सेनापति है। मैंने जब से उन्हें जाना, उन्हें किसी न किसी मुद्दे पर लड़ते हुवे पाया, शासन–प्रशासन से, भीतर और बाहर की सरकारों से। उनके तथाकथित सरपरस्तों से। प्रकृति से उनका गहरा लगाव है। स्वयं प्रकृति के नजदीक रहते है, अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में। संयमित जीवनचर्या उनके स्वास्थ का राज है। मिट्टी में सोने वाले, स्वस्थ मिट्टी का अन्न खाने वाले, प्रकृति की भाषा को समझने और उससे संवाद करने वाले, आज के इस गांधी को मैंने देखा है, प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोग करते हुवे, बुंदेलखंड के संगीत और आदिवासी संस्कृति का संरक्षण करते हुवे, अपने पूर्वजों के खान पान, व्यवहार भाषा, रीति रिवाजों के शब्दों को संग्रहीत करते हुवे।

गोपाल जी, मेरी दृष्टि में पुरातन और आधुनिकता के संगम है जो उनके संपर्क में आता है, उनका हो जाता है। लोगों को अपना बनाने का जादू गोपाल जी को आता है। बहुत लोगों को भ्रम हो सकता है, की गोपाल उनका अपना है। वह सबके एक समान है। सब के साथ उनका प्रारूप है।

शासन–प्रशासन की अकूत सुविधाएं एक पलड़े पर, गोपाल जी का प्यार, उनकी करुणा, कोलों के लिए उनकी निश्क्षल सेवा दूसरे पलड़े में, जो सबसे भारी है। भगवान ने उनकी परीक्षा ली है। भारी मन से अपनी दूसरी पारी में 83 वर्ष का यह नौजवान जिस नई ऊर्जा के साथ वंचितों को उनका हक दिलाने के महाभारत में युद्ध रत है। वह नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा है। वह समाज क्षेत्र में काम करने वाले अपने साथियों के समक्ष एक नई लकीर खींचते है। जीवन में विश्राम नहीं। बाबू जी, हमे आपके नेतृत्व की आवश्यकता है, आज भी, आने वाले कल में भी। आप दीर्घायु हों। हृदय की अंतर्तम गहराई से भगवान कामतानाथ से प्रार्थना करता हूँ।

# असीम सहनशीलता, गहरी संवेदना

**माया साकेत**
**सामाजिक कार्यकत्री**
**मानिकपुर**

*(श्रमिक जीवन से सामाजिक कार्यकत्री तक की शिखर यात्रा। सं.)*

याद है 15 जुलाई 1989 का दिन। लगभग 3 बजे का समय था जब पहली बार पिता तुल्य गोपाल जी से मुलाकात हुई थी। कुछ पता नहीं था संस्था के विषय में क्या कार्य करना होगा लेकिन उन दिनों का समय व कार्य कितनी सरलता के साथ कर पाई वो पिता जी के देन है। हमेशा उत्साहवर्धन करना किसी को भी हो एक समान देखना आगे बढ़ने की प्रेरणा देना अलग–अलग लोगों की चिन्ता करना उनकी स्थिति–परिस्थिति के बारे में जानना आप हमारे लिए बहुत ही प्रेरणादायक है। आपके कारण ही मैने गीत लिखना सीखा जब पहला प्रशिक्षण 'यात्रिका' चित्रकूट में हुआ उस समय जो खुशी मिली उसके लिए क्या कहूँ शब्द ही नहीं पा रही थी। वहाँ जैसे बपचन ही लौट आया था। पिताजी का प्यार उनका स्नेह सदा हम लोगों के साथ रहा है आज भी है। मुझे याद है जब मैं वनागंना छोड़कर घर बैठी थी उस समय आपको पता चला और तुरन्त आपने गाड़ी भेजकर बुलवाया वहाँ आने पर जो संकोच मेरे अन्दर था वहाँ आपके उस शब्द से सब दूर हो गया जब आपने मायके आने लिए कैसा संकोच कहा। सच में वह समय मेरे लिए इतना सुकून भरा था कि मैं बता नहीं सकती। वह घटना जब मैं घर से दुखी होकर आफिस पहुँची पिताजी को तुरन्त अहसास होना फिर समझाकर महिला दिवस के अवसर पर संचालन का कार्य सौंपना कैसे सब धैर्यपूर्वक सबका समाधान करना, उस व्यक्ति की प्रशंसा करना मेरे वश में नही है। मुझे वह दुखद पल याद आ रहा है। मेरे पुत्र की दुर्घटना में मृत्यु हो गई। मैं दिल्ली में थी। पिताजी ने फोन के माध्यम से घटना को छिपाकर तुरन्त लौटने को आदेश दे दिया। मैं आशंका से भर गई। बार–बार फोनकर मुझे बताते रहे चिन्ता न करो, आ जाओ। मैं प्रातः सम्पर्कक्रान्ति स्टेशन में उतरी तुरन्त मेरे पास आकर मुझे सम्भालते हुए सरकारी अस्पताल लाए। मृत शरीर सामने था मेरा बेटा था। मैं संज्ञा शून्य होने लगी, आंख शून्य हो गई न रो पा रही थी और न बोल पा रही थी उन क्षणों में पिताजी मुझे बचाया, सम्भाला। तब तक साथ–साथ रहे जब तक मेरे बच्चे का दाह संस्कार नहीं हो गया। मैं आज अपने तमाम झंझावतों के बीच यदि जीवित हूँ तो उसमें पिता जी का विशेष योगदान है। मैं अपने आप को बहुत ही भाग्यशाली मानती हूँ कि धन्य है पिताजी जिन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखने दिया आगे बढ़ती रहो, समस्याओं का सामना करो, रास्ता स्वयं मिलेगा। उन्ही के कारण मुझे स्वयं जिम्मेदारी संभालने का अवसर मिला **'दामिनी समिति'** के माध्यम से। मेरी कविता, गीतों को सबसे बताना, परिचय कराना हमेशा मंच में हो या किसी अन्य जगह जाना हो हर जगह महत्व देना कोई कुछ भी कहता रहे कोई फर्क नहीं पड़ता यह पिताजी के अन्दर की सबसे बड़ी सहनशीलता है। उनके जैसी संवेदना किसी के पास नहीं। कोई नहीं प्रकट कर सकता हमारी समझ से।

# जल प्रबन्धन के कीर्तिमान

**विमल कान्त**
**सामाजिक कार्यकर्ता**
**भारतीय ग्रामींचल विकास संस्थान, खेरिया-चित्रकूट**

1990 के दशक में मेरी उम्र 20 की रही होगी तब चित्रकूट में जानकीकुण्डी सतना म0प्र0 में संतो, बुद्धजीवियों, समाज सेवा समें अग्रणी भूमिका में गोपाल भाई का नाम सुना था। आपको बहुत नजदीक से जानने, समझने वाले प्रोफेशर लल्लू राम शुक्ल जी जो ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट में संगीत संकाय के विभागाध्यक्ष रहे हैं आपके साथ में मृदंग मार्तण्ड पं0 अवधेश द्विवेदी जी मेरे गाँव खेरिया अतर्रा बांदा सन् 2006 में हमारे घर पर्दापण हुआ था आपके अलौकिक गायन एवं वादन पर पूरा गाँव आपसे प्रभावित हुआ उसका सुपरिणाम यह निकला कि सन् 2008 से ग्राम खेरिया में राष्ट्रीय ग्रामींचल रामायण मेला का शुभारंभ हुआ जो प्रतिवर्ष 1 फरवरी से 5 फरवरी तक शुरुआत हुई। उसी क्रम में 2012 चतुर्थ महोत्सव के समय आचार्य श्री लल्लूराम शुक्ल जी किराये का भवन छोड़कर परम सम्माननीय गोपाल भाई जी की संस्था अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान रानीपुर भट्ट में गोपाल भाई जी के आग्रह पर आकर रहने लगे तभी मेरा भी आना–जाना संस्थान में होने लगा। उस समय मेरा मन आदरणीय प्रो0 शुक्ल जी की विनम्र स्वभाव शैली से प्रभावित होकर गुरु भाव से मानता था । मेरे ऊपर गुरु कृपा हुई और 90 के दशक में सुना नाम ''गोपाल भाई'' से भेंट हुई। पहली मुलाकात में ही आपका पिता तुल्य स्नेह मिला मन को अपनेपन का एहसास हुआ। मुझे आपसे एक अच्छे शिक्षक, मार्गदर्शन, गुरू पथ प्रदर्शक जैसा विराट व्यक्तित्व नजर आया तब से शनैः शनैः आपके कार्य, व्यवहार, सामाजिक गतिविधियों के दर्शन हुये। आपमें न कोई जातीयता न कोई भेद–भाव सभी के प्रति समान भाव, राष्ट्र प्रेरणा के मजबूत भाव विचारों का दर्शनात्मक दर्शन हुआ। आपने वनवासी भाई, बहनों, बच्चों के जीवन स्तर को उठाने के सराहनीय प्रयास किये हैं। बिना किसी सरकारी मदद के चित्रकूट के पाठा में सैकड़ों शिक्षा संस्कार केन्द्र स्थापित किये हैं जहाँ वनवासी कोल किरातों के बच्चों का भविष्य उज्जवल की ओर अग्रसर है। जल प्रबन्धन के क्षेत्र में आपने पाठा क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किये हैं। पुराने दिनों में पेयजल व खेती के जल का भीषण संकट होता था। पाठा की महिलाओं की कहावत प्रसिद्ध है कि ''गगरी न फूटै चाहे खसम मर जाये'' सोचिए पति से ज्यादा प्यार एक गगरी के जल में था ऐसे क्षेत्र. में आपने समाज से सहयोग ले लेकर जल संकट दूर करने का भागीरथ प्रयास व कार्य किये हैं। आपकी संस्था अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान को देश में जल प्रबन्धन पर प्रथम स्थान मिला। आप अच्छे समाज निर्माण के शिल्पी हैं तभी समाज के वंचित, उपेक्षित हृदयभाव आपको पिताजी कहकर सम्बोधित करते हैं। आपका ध्येय ही समानता ही सम्मान है को लेकर आप हमेशा चिन्तनशील, सामाजिक, सांस्कृतिक चिन्तन में व्यस्त रहने वाला विराट व्यक्तित्व के बारे में लिखने हेतु मेरे पास शब्द नहीं, ऐसी अमूल्य सामाजिक धरोहरों के प्रतिभाशाली, व्यक्तित्व के धनी महापुरुषों की आज राष्ट्र, समाज को महती आवश्यकता है। आपका जीवन व्यक्तिगत न होकर समष्टि के लिए समर्पित है।

# जीवन मूल्यों को बचाने की जिद है जिनमें

**दिनेश पाल सिंह**
कार्यक्रम समन्वयक
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उ0प्र0
लखनऊ

समाजिक यात्रा के दौरान गोपाल भाई (पिता जी) का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा उन्होने अपनी टीम को सामाजिक कार्यो के साथ–साथ मूल्य आधारित शिक्षा, मध्यस्थ दर्शन से जोड़ा जिससे हम समझ पाये कि सामाजिक कार्य का लक्ष्य व्यापक हैं एवं यह मात्र आर्थिक सशक्तीकरण नहीं है। इसके अर्न्तगत धरती की चार अवस्थाओं पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था एवं ज्ञानावस्था की समझ प्राप्त हुई एवं इस व्यवस्था के अर्न्तगत मानव का लक्ष्य तालमेल पूर्वक जीना हैं। अवगत हुए कि भूतकाल की पीड़ा, वर्तमान से विरोध एवं भविष्य की चिन्ता से मुक्त होने एवं समाधान के साथ जीने की तरफ अग्रसर होना है। पिता जी के प्रयासों से वर्ष 2007 में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट में प्रबोधक मा0 सोम त्यागी द्वारा आयोजित जीवन विद्या शिविर में दिल्ली के मा0 मनीष सिसौदिया जी सहित अन्य गणमान्य लोगों की प्रथम बार सहभागिता हुई जिससे चेतना मूलक शिक्षा के तहत मानव के अध्ययन को वर्तमान शिक्षा के साथ जोड़ने की पृष्ठभूमि तैयार हुई। इस तथ्य को मा0 मनीष सिसौदिया जी द्वारा भी विभिन्न फोरम में उद्धृत किया गया है कि उन्हें प्रेरित कर चेतना मूलक शिक्षा से जोड़ने में मा0 गोपाल भाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आगे चलकर कई वर्षो की मेहनत के उपरांत यह सपना साकार हुआ कि ज़िन्दगी को क्लास रुम में भी पढ़ाया जा सकता है एवं मा0 सिसौदिया जी की निष्ठा एवं समर्पित अनवरत प्रयासों से दिल्ली के विद्यालयों में **'हैप्पीनेस कैरिकुलम'** के रुप में शुरुआत हुई है।

आज हम यदि अपने बुन्देलखण्ड की हालत का अवलोकन करें तो पाते हैं कि हमारा विकास का वर्तमान मॉडल जो कि संसाधनों के अधिकाधिक दोहन एवं संग्रहण पर फोकस्ड हो गया है, पीड़ादायक प्रतीत होता है एवं इससे स्थानीय प्रकृति, नदियों, पहाड़ों, जंगलों, परम्परागत वनस्पतियों एवं बीजों तथा जैव विविधता आदि के अस्तित्व को ही खतरा उत्पन्न हो गया है। बानगंगा, कडैली आदि कई नदियां विलुप्त हो गयी एवं अन्य कई नदियां भी विलुप्त होने की कगार पर हैं। बुन्देलखण्ड भयावह जल संकट के कगार पर हैं। परम्परागत बीज व वनस्पतियां तेजी से विलुप्त हो रही हैं एवं हमारी जीवन शैली प्रकृति के संरक्षण की न होकर, उसके विनाश की है। इसके लिए वर्तमान पूंजीवादी विकास के मॉडल का मूल्यांकन करने की महती आवश्यकता है जिसके तहत हमें अपने साथ ही स्थानीय प्रकृति की भी चिन्ता करनी होगी एवं मूल्य आधारित शिक्षा की शरण में जाना होगा।

# गाँव विगहना, गुट्टी दाई और गोपाल भाई

**आलोक यादव**
ग्राम प्रधान ग्राम पंचायत विगहना
विकासखण्ड-महुआ
जिला-बांदा


मेरा सौभाग्य रहा कि बचपन के शुरुआती 5 वर्ष (1986 से 1991 तक) आपके सानिध्य में ही व्यतीत हुआ। वह एक ऐसा दौर था जब प्रारंभिक पढ़ाई करके ज्यादातर युवा आर्थिक तंगी और शिक्षा के अभाव के कारण दिल्ली पंजाब और गुजरात की तरफ रुख मोड़ लिया करते थे। शायद मैं भी उनमें से एक होता। लेकिन आपके सानिध्य से प्राप्त प्रेरणा लेकर समाज सेवा के जज़्बे की अलख जगी और इस ओर निकल पड़ा। पीडितों–वंचितों शोषितों की सेवा ने जो दिल को सुकून दिया वह अविस्मरणीय है। मुझे वे दिन आज भी याद हैं जब आपने हमारी शिक्षा की जरूरतों को पूरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सन 1988 की बात है जब हम मानिकपुर में भाई जनदीप जी, संदीप मैं स्वयं और मेरा छोटा भाई सतीश सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र थे उस समय हम चारो के लिए आप के द्वारा एल्युमिनियम का बस्ता (पेटी) गिफ्ट की गई थी। जिसे लेकर हम सभी खुशी पूर्वक विद्यालय जाया करते थे। जहाँ अक्सर दादुओं और दबंगों के बच्चों के बीच हम सबकी संस्कार और शिक्षा में अलग छाप थी। बचपन से ही आपके समाज सेवा का मंत्र लेकर और पीड़ितों के प्रति कर्तव्य निष्ठा का व्रत लेकर आज समाज के बीच सम्मान के हक़दार बने यह सब आपके प्रदान किए मंत्र का ही प्रताप है।

जब मैं अतीत में जाता हूँ और गाँव के बुजुर्गों खासकर अपने बाबा स्वर्गीय श्री कुंज बिहारी यादव जी से आपके संस्मरण सुनता था तब प्रतीत होता था कि वह वक्त आज के समय से भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण रहा होगा। ठीक मेरी उम्र में ही सन 1972 से 1982 तक आदरणीय पिता जी को ग्राम पंचायत बिगहना में प्रधान पद की जिम्मेदारी मिली तब गाँव की भौगोलिक और सामाजिक परिस्थिति आज के समय से बिल्कुल विपरीत थी जहां एक और सामंतवादी व्यवस्था वहीं दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों और ग़रीबी का बोलबाला था। सन 1978–79 का सूखा जिसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अस्तव्यस्त कर दिया था, उस सूखे में भी आपने अपने गांव सहित पड़ोस के आधा दर्जन से अधिक गाँव में भुखमरी की स्थिति को जिम्मेदारी पूर्वक संभाला वह अविस्मरणीय और अद्वितीय था। यह सूखा रुपी अकाल जिसकी चपेट में संपूर्ण देश कराह रहा था तब आपने ग्राम पंचायत बिगहना के प्रधान रहते हुए तीन तालाबों की खुदाई और कई कूपों का जीर्णोद्धार कर पानी की समस्या का समाधान निकाला साथ ही अपने ही गांव नहीं बल्कि आसपास के लगभग आधा दर्जन गांव के ग़रीब परिवारों को 'काम के बदले अनाज' योजना के अंतर्गत इतना काम दिया कि उक्त परिवार आज भी वह दिन याद करते हुए कहते हैं की सूखे के समय भी हमने मजदूरी करके इतना अनाज इकट्ठा कर था जितना कि आज हम खेती करके भी इकट्ठा नहीं कर पाते।

गांव के ही एक बुजुर्ग ने मुझे आपके सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष को बताया जिसमें हमारे गांव बिगहना में **गुट्टी दाई** का संदर्भ है। एक ऐसी महिला जिसने उस दौर में जब महिलाओं को मौलिक अधिकारों के लिए समाज और परिवार से लड़ना पड़ा जिसमें आपका बहुमूल्य सहयोग रहा। उक्त महिला ने अपने प्रयास और धन से एक कुएं का निर्माण कराया जिसे लोगों द्वारा लगातार बाधा उत्पन्न करके उसके लक्ष्य को पूरा करने से रोका गया आपके प्रयास और सहयोग से वह उक्त कुएं का निर्माण तो करा पाई लेकिन समाज ने उक्त कुएं को अछूत बताकर उसका पानी पीने से भी गुरेज किया। आपने अपने ओजस्वी विचार और सामाजिक भेदभाव को छिन्न–भिन्न करते हुए उस कुएं के पानी को पीने के लिए समाज को हर तरह से प्रेरित किया। आज भी उस उस कुएं के पानी को सभी लोग अपने प्रयोग में लाते हैं। मेरे बाबा जी स्वर्गीय श्री कुंज बिहारी यादव जो आपकी ग्राम पंचायत कमेटी के सबसे करीबी और सम्मानित सदस्य थे, आपकी कर्मठता ईमानदारी और लगनशीलता के कायल थे, वह तमाम तरह के संस्मरण सुनाया करते थे कि आपका जीवन बचपन से ही संघर्षमयी और कर्तव्यनिष्ठ रहा है। आपने सामाजिक क्षेत्र के अलावा शिक्षा कुशल प्रशासक और श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता के रूप में अपने आप को स्थापित किया।

उम्र के 83 वें पड़ाव पार करने के बाद भी आपकी समाज के प्रति जवाबदेही गांव के ग़रीब किसानों मजदूरों के लिए चिंता करना और उन्हें सचेत करना अत्यंत अनुकरणीय है।

## शुभकामनाएं

•


### ज्योत्सना अग्रहरि

**सामाजिक कार्यकत्री, वाराणसी**


स्कूल कालेज की किताबी दुनिया से निकलकर अपने सपनों को साकार करने के लिए घर परिवार के पारम्परिक मानको को तोड़कर मैं 5 अक्टूबर 2005 को चित्रकूट पहुँची। वहीं एक संस्था अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान में हमारा साक्षात्कार हुआ। 3 महीने के लिए अस्थायी रुप से हमारा चयन हुआ। शाम को त्रैमासिक समीक्षा बैठक में कार्यकर्तागण अपने–अपने अनुभव साझा कर रहे थे। सभी ने माया दीदी से 'बहुत दिनों के बाद, अम्मा का खत गाँव से' सुनाने का आग्रह किया। उनका यह गीत सुनने के बाद मुझे घर की याद आने लगी। एक तरफ मेरे सपने थे और दूसरी तरफ घर। रोते–रोते कब मेरी आवाज तेज हो गयी पता ही नहीं चला। मेरे कमरे के बगल में ही संस्थापक जी (जिन्हे आदर से सभी पिताजी कहते है) का कमरा था। वो मेरे पास आए और पिता की तरह मुझे शान्त कराया। उसके बाद क़दम–क़दम पर मेरे सभी परेशानियों को सुलझाते रहे। इसके साथ ही ग्रामीण आदिवासियों के जन–जीवन की समस्याओं से अवगत कराते रहे। उनका प्रभावी व्यक्तित्व और आत्मीय व्यवहार मुझे हमेशा प्रेरित करता रहा। इसी दौरान मुझे उनके साथ मानिकपुर के मारकुण्डी स्थान पर जाने का अवसर मिला। जहाँ ग्रामीणों के साथ उनका पारिवारिक मित्रवत व्यवहार देखा। कैसे ग्रामीण निःसंकोच होकर अपने छोटे–बड़े सारे दुःख–सुख पिता जी से साझा करते रहे और वे भी उनके सुख–दुख में प्रसन्नता और पीड़ा महसूस करते रहे। उस दिन किताबी ज्ञान से मानवीय पीड़ा व्यवहार के बड़े होने का सचमुच ज्ञान हुआ। इसी तरह ढाई साल कब बीत गये पता नहीं चला। आखिर मे उनके ''चन्द्र की ज्योति सी ज्योत्सना तुम बनो''

इसी आशीष के साथ मैं वैवाहिक जीवन को शुरु करने के लिए संस्था से चली आयी।

# वनवासी हितों की संघर्ष-गाथा का यह सिर्फ आमुख है..

**वासुदेव**
**यशस्वी सामाजिक कार्यकर्ता**
**बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान, ललितपुर**

*(गोपाल भाई जी के सामाजिक सद्‌गुणों को आत्मसात करने वाले तथा उनके महत्वपूर्ण कार्यों को विरासत की तरह संभालने वाले वासुदेव जी ने बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान नाम की संस्था खड़ी की और उत्तर प्रदेश के सबसे ग़रीब जिले ललितपुर में ग़रीबों के उत्थान के लिए जुट गये। ग़रीबों की स्थायी आजीविका, ग्रामीण हक़दारी, पर्यावरण, प्राकृतिक खेती, महिला सशक्तीकरण, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जलागम कार्यों को ज़मीन पर उतार रहे हैं। वासुदेव जी के संस्था के काम उद्धरण बन रहे हैं। फिलहाल प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट, बाल कल्याण समिति, ललितपुर के रूप में भी वे समाज के सामने हैं।—सं.)*

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने प्राकृतिक संसाधनों को दबंगों से मुक्त कराने का बड़ा अभियान चलाया पाठा में कोल वनवासियों के सामने अनेक समस्यायें सुरसा की भांति मुंह बाये खड़ी थीं प्राकृतिक संसाधनों में दबंगों के कब्जे थे, जंगल में पीढ़ियों से बसे वनवासी गुलामी का जीवन जीने को विवश थे। जंगलो में आंवला, गोंद, शहद सब थे लेकिन उसका फायदा स्थानीय दबंग ही उठाते थे। 3 रु प्रति किलो आँवला बिकता था। एक ऐसा अवसर आया जब संस्थान की ओर से दबंगों के विरुद्ध आँवले तोड़ने के लिए बोली लगाने संस्थान की टीम बासुदेव, राज सिंह, रामकिशोर, देशराज आदि वन विभाग कर्वी में सर्वाधिक बोली लगाकर पाठा के जंगलो का आँवला आदिवासी कोल समुदाय ने तोड़ा, फायदा हुआ। दबंगों ठेकेदारों का आतंक कम हुआ। इसी प्रकार बड़े बड़े बांधो की ज़मीन में खेती करने वाले दबंगों की खड़ी फसल नीलामी के लिए भी संस्थान ने तहसील कर्वी में बोली लगाकर नीलामी ग़रीबों हक में लिया।

47 बंधुवा मजदूरों को मुक्त कराने के लिए जिला प्रशासन के साथ श्रमप्रर्वतन अधिकारी के साथ घूमना पड़ा। पाठा में दबंग दादुओं का इतना आतंक था सरकारी कर्मचारी भी जंगली गाँवो में जाने को डरते थे। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के कार्यकर्त्ता भूमि हक़दारी के लिए भूमि दस्तावेजों खसरा, खतौनी लेखपालों से लेकर रात रातभर अपने नये रजिस्टर में लिखते थे और भूमि कब्जा से वंचित कोल आदिवासी पट्टेदारो की सूची बनाते थे। जिला प्रशासन के समक्ष जनसुनवाई में भूमि कब्जा दिलाने की मांग पट्टाधारक स्वयं करता था। भूमि हक़दारी का कार्य 233 कोल आदिवासी गांवो में किया गया भूमि हकदारी शांतिप्रिय तरीके से कार्य करने का देश का लोकप्रिय उदाहरण है ।

भारत माता शिक्षा संस्कार केंद्र पाठा के निरक्षता रुपी घनगोर अन्धकार में प्रकाश की किरण की तरह रोशनी देने लगे। संस्थान की ओर से सेवारत गाँव का ग्रामपाल गाँव के समग्र विकास की परिकल्पना को साकार करने में जुट गया था। कोलो की हर बस्ती में संस्थान द्वारा संचालित शिक्षा केंद्र रचना एवं संघर्ष की पाठशाला भी थे। सन 1978 से 2022 तक पाठा की तक़दीर और तस्वीर में अभूतपूर्व बदलाव देखा जा सकता है। गोपाल भाई पाठा के दुःख दर्द विषम असहनीय अमानवीय घटनाओं को समाज के सामने लाने के लिये सहज तरीके से गीत, लोकगीत, लोकविधा, लोक भाषा को लोक कलाकारों के माध्यम से अनेक रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन करते रहे जिससे समाज के अंतिम व्यक्ति पाठा के कोल और समाज, सरकार के सर्वोच्च पदों पर बैठे लोग संवेदनशील बन सके।

गोपाल भाई की लम्बी सामाजिक यात्रा में गांधी, विनोबा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, विवेकानंद, डा.भीमराव आंबेडकर, महात्मा ज्योतिबाफुले के विचारों का संगम स्पष्ट रूप से दिखता है। पाठा में मनसा, वाचा, कर्मणा तीनो रूप गोपाल भाई के दिखते हैं। सरदार पटेल भाई जैसी दृढ इच्छाशक्ति भी गोपाल भाई में मजबूती के साथ स्थापित है। जल, जंगल, ज़मींन, ग्राम स्वराज बुनियादी मानवाधिकारों के लिये पाठा में अभूतपूर्व कार्य किया गया शासन–प्रशासन सरकार राजनेताओ, मीडिया समुदाय के साथ समन्यवय बनाकर गोपाल भाई ने अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के लक्ष्य को प्राप्त किया है।

पत्रकार दल का पाठा में भ्रमण कराना अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की आंतरिक रणनीति रहती थी। समय समय पर बाँदा से पत्रकारो का दल तथा लखनऊ दिल्ली से अनेक समाचार पत्रों पत्रिकाओं के प्रतिनिधि आते रहते थे। पाठा में महिलाओं के शोषण उत्पीड़न की अनेक घटनाओं का समाचार पाठा के कोल परिवार बताते थे लेकिन इस समस्या से निजात कैसे मिले इस पर चिंतन होता रहता था। एक अवसर आया जब राष्ट्रीय सहारा से दयानन्द पांडेय ने पाठा का भ्रमण किया उन गाँवो घरों में पहुंचे जो दबंगों के शोषण को स्वीकार कर चुके थे कोल लड़कियां, महिलाओं द्वारा दबंगों के सामने तन–मन सौपने को परम्परा मान लिया गया था जितना बड़ा दादू उतनी ज्यादा रखैल रखना शान समझता था।

**अबैध संबंधों की आग में दहकता पाठा** शीर्षक से एक पूरा भरा पन्ना प्रकाशित हुआ जिला, प्रदेश व देश में कोल आदिवासी महिलाओं का मुद्दा सुर्खियों में आया। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती मोहिनी गिरि दिल्ली ने भी पाठा चित्रकूट का भ्रमण किया जनसुनवाई की। इसके बाद राष्ट्रीय महिला आयोग के सहयोग से मावलंकर हाल दिल्ली में जन सुनवाई हुई। मानिकपुर मऊ चित्रकूट, शंकरगढ़ इलाहाबाद, मझगवां सतना जिले की 32 आदिवासी दलित महिलाओं की केस स्टडी तैयार हुई जिनका शोषण रखैल बनाकर दबंगों द्वारा किया गया था। दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की उपस्थिति में कार्यक्रम हुआ। मैं महिलाओं की हिन्दी में महिलाओं की कहानी पढ़ता था महिला अपनी भाषा में बोलती थी इसके बाद कुसुम नॉटियाल अंग्रेजी भाषा में बोलती थी। इस कार्यक्रम में देशी विदेशी भाषा के पत्रकार मौजूद थे पहली बार दिल्ली समाचार पत्रों में सबसे बड़ा कवरेज पाठा की आदिवासी महिलाओं के मुद्दे को मिला। उन दिनों जन पैरवी करने का ही प्रमुख कार्य संस्थान करता था। एक्शन एड़ फंडिंग एजेंसी ने भी दांतों तले अंगुली दबा लिया था।

आंखों देखी, की रिपोर्टर नलिनी सिंह के साथ गोपाल भाई और महिलाओं का साक्षात्कार हुआ इसके बाद रात में ही प्रसारण हो गया जिस जगह हमें ठहराया गया वहाँ मिलने वालों की लाइन लग गई गोपाल भाई का सबसे बात करना मुश्किल हो रहा था। कुछ दिनों बाद रानी खानम चित्रकूट आकर *'पाठा की तुम सुनो कहानी'* गीत को नृत्य के साथ तैयार कराया कत्थक नृत्य प्रदर्शन भी भारत जननी परिसर में किया। आदरणीय नाना जी देशमुख ने कार्यक्रम में पधार कर रानी खानम के प्रदर्शन की प्रशंसा की और गोपाल भाई की भी प्रशंसा की विविध आयोजनों के लिए जो बहुत ही प्रेरक और मनमोहक होते हैं। जनसुनवाई के बाद मोहिनी गिरि ने बहन मायावती मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश लखनऊ को पत्र लिखकर पाठा की कोल महिलाओं को उत्पीड़न से बचाने के लिए पत्र लिखा। परिणामस्वरूप पाठा के दबंगो के खिलाफ क़ानूनी कार्यवाही हुई। बंदूकों के लाइसेन्स निरस्तीकरण के आदेश दिये गए। एक अदभुत घटना थी। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान एक बहुआयामी व्यक्तित्व विकास का स्कूल है, जिसमें अपनी क्षमता के अनुसार कोई भी सीख सकता है।

पाठा के कोल समुदाय को तथाकथित समाज शास्त्रियों ने मृतवत समुदाय की संज्ञा दे चुके थे। ऐसे समाज में प्राण फूँकना दैवीय कार्य है। मृतवत समाज समाज के लिए पूर्ण समर्पण के साथ काम करके दिखाना श्री गोपाल भाई व उनकी टीम ही कर सकती थी।

## शुभकामनाएं


**जयश्री जोग**

**साहित्य मनीषी, समाज चिंतक**

**कर्वी**


श्री गोपाल जी से मैं बहुत दिनों से परिचित हूँ। उनकी साथ अपने अनुभव को मैं साझा करना चाहती हूँ। श्री गोपाल जी तथा उनकी परिवार से हमारा पुराना परिचय है लेकिन समाजसेवी के रुप में मेंरा परिचय तब हुआ जब उन्होंने समाज सेवा संस्थान की स्थापना की। जंगल में जाने के लिए लोग बहुत डरते थे लेकिन गोपाल जी ऐसे साहसी व्यक्ति है जिन्होंने जंगल को ही अपने सामाजिक सेवा के नियम कार्यक्षेत्र के रुप में चुना। मेरे विचार से वनवासी लोग प्रकृति में रहते हैं और अपनी अंधश्रृद्धा पर दृढ़विश्वास रखते हैं। श्री गोपाल जी ने ऐसे वनवासी लोगों के मन को बदलने और उनके अंधश्रद्धा को श्रद्धा में बदलने का अनोखा काम किया है।

गोपाल जी ने वनवासी लोगों के साथ रहकर उनके कला और संस्कृति को जाना तथा समय–समय पर अपने द्वारा कार्यक्रम करके समाज को वनवासी जीवन के बारे में परिचय कराया। जो दूसरों के लिए सत्कार करते हैं, उनके कार्य सदा अमर रहते हैं। मैं ऐसे गोपाल जी के कार्य की सराहना करती हूँ और उनके दीर्घायु और प्रगति की कामना करती हूँ।

# बहुत प्यार किया , परोपकार किया

**रामबहोरी विद्यार्थी**
**अवकाश प्राप्त अभियंता, निर्माण विभाग**
**ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट**

*(सहज, सहृदय इंसान, संवेदनाओं से परिपूर्ण, औरों को नैतिक ताकत देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। —सं.)*

सन् 1982 में मैं सार्वजनिक निर्माण विभाग बांदा में प्रशिक्षु इंजीनियर के पद में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था उसी समय बांदा में श्री रामरुप बाबू जी से सम्पर्क होता रहता था। जब प्रशिक्षण पूरा हो गया तो मुझे पेट की बीमारी हो गयी जिसका इलाज सन् 1986 तक चित्रकूट एवं बांदा में करवाता रहता था। उसी समय मेरी मुलाकात श्री रामरुप बाबू जी से बांदा में हुई तो उन्होंने पूछा क्या कर रहे हो तो मैंने कहा कि श्री जमुनाप्रसाद बोस जी के साथ रहकर नौकरी के लिए आवेदन करता रहता हूँ तब उन्होंने कहा कि आप श्री गोपाल भाई से मुलाकात कर लीजिए तो मैंने कहा कि अपरिचित हूँ, किस प्रकार से भेंट करुँ। उन्होंने कहा कि चित्रकूट जाइये और वहां यात्रिका होटल में पं0 द्वारिका प्रसाद पाटोदिया जी के साथ कार्यक्रम चल रहा है वहीं भेंट हो जायेगी। तभी मैंने चित्रकूट पहुंचकर आपसे भेंट किया और अपनी यथा स्थिति बताई। तब आपने मानिकपुर आने के लिए कहा। मैं मानिकपुर संस्था पहुंच कर सन् 1986 में आपसे मुलाकात किया तो आपने केशरुवा बांध में मरम्मत एवं ददरी कोलान में कूप बनवाने का अवसर दिया जो लगभग 5–6 माह तक चला फिर भारत कल्याण मंच द्वारा शिक्षा संस्कार का प्रशिक्षण सात दिन हुआ जिसमे मुझे प्रथम पाया गया तब पाटोदिया जी द्वारा मुझे दक्षिण भारत की यात्रा का अवसर आपके साथ प्राप्त हुआ। अकस्मात ही प्रोजेक्ट समाप्त हो गया और मैं गाँव चला आया। पुनः 6–7 माह बाद फरवरी 1987 में मुझे लेने के लिए श्री सन्तोष चच्चू और श्री रामकिशोर जी को आपने मेरे गाँव भेजा। मैं उसी समय उनके साथ मानिकपुर आया और आपने मुझझे लखनपुर में तालाब गहरीकरण का काम करवाया इसी प्रकार कभी–कभी जाना लगा रहता रहा और मैं संस्था का कार्यकर्ता होकर अपनी आजीविका के साथ छोटे–छोटे कूप निर्माण कार्य, टिकुरी बंधीकरण एवं नाले के चेकडैम का निर्माण कार्य पूरा किया। उस समय पानी की ऐसी स्थिति थी कि एक बार ऊँचाडीह में महिलाएं खुरच–खुरच कर कूपों से पानी भर रही थी। मुझे पानी पीने को कहा मैंने पानी गन्दा होने के कारण नहीं पिया और हरिजनपुर को चल दिए जैसे रास्ते में आगे बढ़े कि यकायक पानी की प्यास लगी और मेरे शरीर में बेचैनी होने लगी कि मुझे तुरन्त किसी के घर से पानी मंगवाकर पिलाया तब मुझे आराम मिला तब से पाठा में जैसा पानी मिलता तो मैं पानी को पी लेता था नहीं स्वयं पानी लेकर चलते थे। उस समय संगठन बनाने व पानी की समस्या को सही करने का कार्य सन् 1991 तक आपके यहाँ किया एक बार टिकुरी में चेकडैम बनवा रहा था तो उस समय डकैत हमारे निर्माण कार्य

को देखते हुए निकल रहे थे तो मैं डर करके खेत में चने की भाजी तोड़ने लगा था कि कहीं वह मुझे न पूछने लगे। स्न 1991 में कुछ समय के बाद प्रोजेक्ट में धनराशि न होने के कारण अवकाश में गाँव आ गया और अपने पूज्य पिता जी की आंखे बनवाने के लिये जानकीकुण्ड अस्पताल में भर्ती करवाया संयोग से आंखे ठीक नहीं हुई और गांव चले गये। सन् 1992 में मार्च में आपसे मिला तो आपने एक पत्र माननीय कुलपति श्री कपूर साहब महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के नाम लिखकर मुझे मिलने के लिए कहा। मैंने जैसे ही पत्र दिया कि साहब ने स्वीकार करके लेवर लाकर कार्य करने की आज्ञा दे दी। तब से मेरी सेवा विश्वविद्यालय में लगातार होती रही और मैं अपने परिवार सहित चित्रकूट में रहने लगा। आपका यह पिता जी की तरह प्यार, चिन्ता एवं परोपकार मुझ पर हमेशा बना रहा है। अतः मैं इसका जीवन पर्यन्त परिवार सहित आपका आभारी रहूँगा। इस मंगलमयी मूर्ति को ह्रदय से कोटिशः प्रणाम करता हूँ।

## उनके पढ़ाये छात्र बड़ काबिल निकले

**कुबेर सिंह**
**सामाजिक कार्यकर्ता, अतर्रा-बांदा**

एक बार की घटना याद है कि श्री गोपाल जी विद्यालय के सहयोग हेतु गणमान्य लोगों से वार्ता करने लाल थोक के श्री कल्लू दुबे, देवी दयाल आदि के यहाँ जाने लगे तो लोगों ने कहा कि इनके यहाँ से कभी किसी भिखारी को आज तक भीख भी नहीं मिली ये लोग विद्यालय का क्या सहयोग करेगें? मगर गोपाल जी हार नहीं मानी वह उनसे मिले और अपनी वाकपटुता से उन्हें प्रभावी कर विद्यालय हेतु सहयोग लिया। उनके अथक प्रयासों के कारण ही अनेक विद्यालय से पढ़े हुए छात्रों में आज कोई छात्र बैंक, पुलिस, बी0डी0ओ0 व अन्य सरकारी सेवायें दे रहे हैं। सन् 1978 में में उन्होंने अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का रजिस्ट्रेशन करवाकर आदिवासी व दलित समूह के बीच कार्य करना प्रारम्भ किया।

सन् 1987—88 में मैने भी उनके साथ कार्य करने की इच्छा जाहिर की तो हजारी सिंह पंकज जी के माध्यम से मैं मानिकपुर उनके कार्यालय पहुंचा। उनके प्रयासों से कुछ दानदाता संगठनों ने धन देना शुरु किया जिसके परिणाम स्वरुप आदिवासी व दलित समुदाय के खेतों में मेड़बंदियाँ की गई। संस्थान के कार्य की प्रगति देख कुछ बड़ी एजेंसियों ने भी लम्बी अवधि कार्य के लिये धन दिया तो संस्थान ने पाठा क्षेत्र में चेकडैम, तालाब, चोहड़ा, कूप, चेकडैम आदि का निर्माण कराया। जहाँ क्षेत्र में लोगों को वर्ष भर के लिये खाद्यान्य नहीं प्राप्त होती था अब चेकडैम, तालाब, कुओं से सिंचाई कर अच्छी उपज प्राप्त कर रहे हैं। श्री गोपाल जी का यह कहना था कि शिक्षा से ही परिवर्तन संभव है अतः उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये पाठा क्षेत्र के गाँवो में विद्यालयों का संचालन करवाया। परिणाम स्वरुप आज पाठा क्षेत्र में सैकड़ो बच्चे बी0ए0, एम0ए0 कर सरकारी सेवायें दे रहे हैं। आज वह पाठा में बापू के रुप में विख्यात है।

# सामंतो को काबू करना तो कोई भाई जी से सीखे

● **दिनेश द्विवेदी**

*(मानिकपुर नगर के प्रतिष्ठित घराने से, जीवटता के धनी, पारिवारिक, सामाजिक दायित्वों को भलीभांति पूर्ण करने में सदैव समर्थवान। –सं.)*

पाठा में दादूशाही चलती थी, आदिवासी बंधक थे। कोल आदिवासियों में यह साहस नहीं था कि अपनी मजदूरी भी मांग ले। 5 पाव मजदूरी थी। गोपाल भाई जी ने हम लोगों से कोल परिवारों की दीनदशा पर एक सर्वे कराया हरिजनपुर, उमरी, खिचरी, गुढ़वा, नागर आदि गाँव में सर्वे टीम मैं सदस्य था।

सूखा के कठिन दौर में बुंदेलखण्ड, उसका झाँसी रेंज, उसका बाँदा जिला और जिले में सर्वाधिक पाठा क्षेत्र सूखे से प्रभावित था। सरकार सूखा राहत में गोपाल भाई से पीछे रही, बड़ी प्रशंसा मिली। गोपाल भाई न होते तो कम समय में आदिवासी समुदाय का विकास न होता। गोपाल भाई के प्रयासों से आदिवासी जीवन की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक रहन–सहन में सुधार आ रहा है। कोल सर्व समाज को देखकर दूर भागते थे, अब वे मुख्यधारा पर आ गये हैं। आदिवासिंयों के हकों के लिए मोर्चा ले रहे गोपाल भाई से यहाँ के सामंतों को बड़ी तकलीफ हुई, तरह–तरह के दुष्प्रचार किये, जंगली लोगों से भी वार कराया लेकिन वे डिगे नहीं, भागे नहीं। मानिकपुर थाने में भी फर्जी मामले के तहत बैठाया गया। यह षडयंत्र था। यहाँ के दादू, दबंग सामाजिक संस्थाओं के खिलाफ थे किसी को पनपना नहीं देना चाहते थे। मानिकपुर घाटी के नीचे स्थापित एक संस्था का अस्तित्व मिटाया भी गया लेकिन गोपाल भाई की रणनीति के आगे दुर्जन शक्तियाँ कुछ कर नहीं पर पाईं। सामंतों को काबू करना तो कोई गोपाल भाई जी से सीखे। उनकी सादगी, उनकी विनम्रता तो बेमिशाल है। हरा सोना कहा जाने वाला तेन्दू पत्ते का अवैध कारोबार कर भ्रष्ट तंत्र और ठेकेदार खूब फले–फूले। सरकारी तंत्र के सह पर तेन्दू पत्ता मजदूरों का शोषण होता रहा। गोपाल भाई ने मुद्दे को उठाया और मजदूरों को शोषण से मुक्त कराया।

प्रशासन की तानाशाही से वे सदैव लड़ते रहे। एक वाकया उल्लेखनीय है अपरजिलाधिकारी से गोपाल भाई मुझे लेकर मिलने गये। चिट पर लिखा था 'गोपाल दिनेश'। अधिकारी महोदय से मुखातिप होते हुए पहले कहा बैठने की इजाजत दीजिए। उन्होंने बंधक ज़मीनों का मामला रखा, बताया कि फिर ज़मीने ग़रीब कोलों के नाम हैं पर वास्तविक कब्जा दादुओं का है। ए0डी0एम0 ने कहा लिखकर दे दीजिए। भाई जी ने कहा नहीं देना नहीं है। देना नहीं। मैं छोटी सी भीड़ लेकर आना चाहता हूँ। सुनन पड़ेगा अन्यथा आवाज़ ऊपर तक जायेगी। दूसरे दिन 5 हजार की भीड़ मानिकपुर ब्लाक में इकट्ठा हुई। कोई अधिकारी नहीं आया। लम्बी प्रतीक्षा के बाद गोपाल भाई के नेतृत्व में भीड़ मानिकपुर से कर्वी के लिए चल पड़ी। यह सूचना जब जिला तहसील मुख्यालय के अधिकारियों तक पहुँची तो उपजिलाधिकारी कर्वी मानिकपुर भागते आये। मानिकपुर घाटी में भीड़ का सामना हुआ। गोपाल भाई ने कहा कि यदि इस भीड़ को आप रोकना, लौटाना चाहते हैं तो गाड़ी से उतरकर भीड़ के साथ पैदल मानिकपुर चलना पड़ेगा। जनाक्रोश को भांपते हुए भीड़ के साथ एस0डी0एम0 घाटी से मानिकपुर लगभग 3 किलोमीटर पैदल आये और समस्यायें सुनकर समाधान दिये। गोपाल भाई का तेवर देखने योग्य था।

मैं जो भी हूँ पूरा योगदान, मार्गदर्शन उन्हीं का है, मुझे सदैव छोटे भाई का सम्मान दिया, उन्हें मैंने सदैव बड़े भाई का सम्मान दिया, और यह निरंतर रहेगा।

# यह उन दिनों की बात है...

**राजाभइया यादव**
**सामाजिक कार्यकर्ता**
**विद्याधाम समिति, नरैनी-बांदा**

*(जनता के गंभीर मुद्दों के लिए आतताइयों से, शोषकों से ताबड़तोड़ मुठभेड़ करना, कुचक्र में फंसना और अतंतः शोषित, पीड़ितों को न्याय दिलाना राजाभइया जी की दैनिक दिनचर्या में शामिल है। वे गोपाल भाई के सामाजिक घराना 'बंश' के बड़े जुझारू सेनानी हैं। विद्याधाम समिति के मार्फत बांदा जिले के नरैनी क्षेत्र में सक्रिय हैं और सामाजिक समस्याओं, मुद्दों को लेकर प्रायः सुर्खियों में रहते हैं। –सं.)*

श्रद्धेय श्री गोपाल भाई का व्यक्तित्व **भटकों को सदपथ दिखलायें, तम मे स्वय ंकिरण बन जायें** इस वाक्य को हमेशा चरितार्थ करते दिखा है। वर्ष 1992 बी0 ए0 करने के बाद जब विद्यार्थी जीवन की मैने पहली सीढ़ी पार किया था उस समय जीविकोपार्जन का संकट सामने खड़ा था। कोई दिशा तय नही हो पा रही थी जिन्दगी के दिन तेजी से भटकाव की ओर बढते जा रहे थे। दूर दूर तक कोई उम्मीद की किरण नहीं दिख रही थी क्योकि न तो अच्छी शिक्षा मिल पायी थी न ही संस्कार। ऐसा सम्पर्क और वातावरण भी नहीं था जिससे समाधान का रास्ता खोज पाता। अचानक 11 सितम्बर 1992 में केन नदी में प्रलयकारी बाढ़ आयी थी जिससे गांव के गांव तबाह होकर. बह गये थे। घरों में रखा अनाज सम्पत्ति सबकुछ नष्ट हो गया। लोग खुले आसमान के नीचे सोने को मजबूर थे। चूल्हे बुझे पड़े थे। लोगों के खाने के लिये आसपास के गांव से पूडियां बनकर आती थीं। भूँखे लोग पूड़ियों की तरफ झपट्टा मारकर दौड़ते थे। कई दिनों तक ऐसा ही द्रश्य चलता रहा। धीरे धीरे आस पास के गाँव से आने वाली पूड़िया भी बंद हो गयी तब लोगों की ब्याकुलता और बढ़ने लगी उसी समय श्री गोपाल भाई अचानक बरियारी गाँव पहुंचे थे। वहाँ लोगों से बातें किया कुछ कहानियां सुनायी हिम्मत दिया सबको फिर से अपना–अपना नया आश्रय बनाने की प्रेरण भी। बस वही से बाढ़ से विस्थापित परिवारों के पुनर्स्थापित करने का प्रयास शुरू हुआ। संस्थान द्वारा कुछ दिनो के लिए राशन दिया गया नये मकान निर्माण का सहयोग मिला पेयजल ब्यवस्था हेतु कूप निर्माण का कार्य प्रारम्भ हूआ तब लगने लगा कि इस आपदा से लड़ने के लिए लोग अब मैदान मे

उतर आये हैं और इस युद्ध के सारथी गोपाल भाई बन गये हैं। उसी समय मैं भी गोपाल भाई के सम्पर्क में आया था। मेरे सामाजिक जीवन की प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं से शुरू हुयी थी, तब मैंने समाज सेवा और दुखियों की सहायता के प्रति गोपाल भाई के जुनून को देखा था जो न कभी थकते थे न रुकते थे। उस समय गाँव मे गोपाल भाई के कहीं प्रेरणा के गीत सुनायी पड़ते थे कहीं समाज सेवियो रचनाधर्मियो, कलमकारों का संगम। चारो तरफ लोगों में नित्य एक नई उर्जा एवं प्रेरणा दिखायी पड़ती थी। लोग अपना पिछला दर्द भूल चुके थे। गाँव में शिक्षा संस्कार रोज़गार के अवसर नज़र आने लगे थे लोगों को अहसास होने लगा था कि अभी सबकुछ समाप्त नहीं हुआ है। अगर सही दिशा व प्रेरणा मिल जाय तो समस्या भी अवसर का रूप ले लेती है। गोपाल भाई कभी भी अपने सामाजिक जीवन को व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन पर हावी नहीं होने दिया। शोषित पीड़ित अभावग्रस्त लोगों के सम्मान व गरिमा पूर्ण जिन्दगी जीने तथा हक़ों अधिकारों से वंचित परिवारों को न्याय दिलाने के लिए उन्होने अनेक जन आन्दोलन किए। उनके जन आन्दोलन महज हंगामा खड़ा करने तक सीमित नही रहे है जिस मुददे पर वे लड़ायी लडे उसे समाधान तक पहुँचाया। पाठा में बन्धुवा मजदूरी से मुक्त हुए, कोल आदिवासियों की ज़मीनो में दबंगो के कब्जे हटाने के अभियान, कोल महिलाओं को रखैल बनाकर रखने की परम्परा को समाप्त करने का संघर्ष सबसे उपेक्षित नेढुवा गांव के बाल्मीक समुदाय के सम्मान के लिए समता समरसता कार्यक्रम का अयोजन आदि सैकड़ो उदाहरण हैं।

गांव की एकता अखण्डता गांव की संस्कृति का विकास उनकी प्राथमिकता रही है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र के मुददों, सामाजिक विषयों पर विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने 'गांव की ओर' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया था जिससे ग्रामीण क्षेत्र को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर मिला।

वैभवशाली चि़त्रकूट क्षे़त्र के विकास के लिए उनका गहरा चिन्तन रहा है। यहाँ तक कि विसंगतियों, समस्याओं, अवैध एवं अनैतिक गतिविधियों को उजागर कर समाधान के लिए समय समय पर सबका ध्यान आकृष्ट किया है। जल जंगल ज़मीन ग़रीबो की ग़रीबी के पोषण संसाधनो के संरक्षण, नारी शक्ति के स्वाभिमान को चुनौती के रूप मे स्वीकार कर चि़त्रकूट क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास के लिए निरन्तरतापूर्वक कार्य किया है।

श्री गोपाल भाई सम्मोहक व्यक्तित्व के धनी है, उनके व्यक्तित्व ने अनेक लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया उनके साथ कलाकार, संगीतकार, बुद्धिजीवी सामाजिक कार्यकर्ता तथा समाज के विभिन्न वर्गो की महिलाएं आ जुटे हैं। वे एक सफल और रचनात्मक लेखक हैं। उनके विषय में मेरे जैसे अल्पज्ञ ब्यक्ति का कुछ कह पाना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा हैं। मैं कृतज्ञ हूँ श्रद्धेय श्री गोपाल भाई के प्रति जिनकी स्नेहिल छाँव में बढ़ने के अवसर मिले। आप शतायु प्राप्त करें समाज का मार्गदर्शन करते रहें, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है।

गरिमामय, उत्सवपूर्ण जीवन ही जीवन है।

मानव की उपयोगिता ही मानव मूल्य है।

मानव जीवन ही नहीं, प्राकृतिक संसाधन भी अमूल्य हैं।

जो जिसका मूल्यांकन नही कर सकेगा,

वह उसका सदुपयोग नहीं कर सकेगा।

जो जिसका अपव्यय करेगा, वह उससे वंचित हो जायेगा।

यदि समस्या है तो समाधान है, समाधान हेतु समझ चाहिए।

सुविधा संग्रह की हविस, धरती को मानव के रहने योग्य नहीं छोड़ेगी।

शिक्षा का प्रयोजन : व्यक्ति में समाधान, परिवार में समृद्धि, समाज में परस्पर

विश्वास एवं तालमेल होना चाहिए।

शरीर को चाहिए काम, जीवन को चाहिए विश्राम।

स्वीकृति के भाव में जीना सुख है।

- ए. नागराज